अर्थात्

तीन अँगरेज़ उड़ाकोंका बेलून द्वारा आफ्रिका-
भ्रमणका वैज्ञानिक विनोदपूर्ण वृत्तान्त ।

लेखक

शिवसहाय चतुर्वेदी ।

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

कलकत्ता

२०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेसमें"

बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा

मुद्रित ।

सन १९१८

पहली वार १०००   मूल्य १॥)

भूमिका
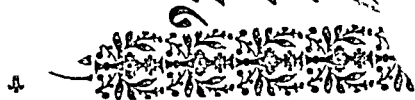
प्रसिद्ध फरासीसी लेखक जूलवर्नकी पुस्तकें पढ़नेसे भ्रमणवृत्तान्त, विज्ञान, इतिहास और उपन्यासका एक साथ मज़ा मिलता है। यूरोपकी प्रायः सभी भाषाओंमें उनकी ग्रन्थावलीका अनुवाद हो चुका है। उक्त ग्रन्थावली की कुछ पुस्तकें बङ्गला तथा रसातलयात्रा नामक एक पुस्तक हिन्दीमें भी निकल चुकी है। हम भी आज उक्त लेखककी एक वैज्ञानिक विनोदपूर्ण पुस्तकका हिन्दी रूपान्तर पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करते हैं। आशा है, पाठकगण इसका रसास्वादन करके प्रसन्न होंगे।

देवरी (सागर)
कार्त्तिक शुक्ला ११
सं० १९७५

विनीत—
शिवसहाय चतुर्वेदी।

पहला परिच्छेद ।

सूचना ।

फर्गुसन्के बचपनका अधिकांश समय समुद्र-यात्रा करनेमें व्यतीत हुआ था। उसका पिता अँगरेजी जल-सेना-विभागका एक साहसी सेनापति था। वह समुद्र-भ्रमणके समय पुत्रको सदैव अपने साथ रखता था। भयङ्कर तूफान, भीषण युद्ध और ऐसे-ऐसे अनेक संकटोंके समय भी वह उसको अपने साथ ले जानेसे न चूकता था। इस कारण बालक फर्गुसन् उसी समयसे बड़ी-बड़ी आपत्तियों को तुच्छ गिनने लगा। और बड़े होनेपर उसकी रुचि

भ्रमण-कहानी एवं यात्रा-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़नेकी ओर विशेष आकर्षित हुई। वह पुस्तकालयमें जाता और इस विषयकी पुस्तकें खोज-खोज कर पढ़ता था। वह यात्रियोंके महान संकट और आपत्तियोंका वृत्तान्त पढ़कर पुल-कित हो उठता था, और उनके-उद्धार-कौशलको देखकर फूले अङ्ग नहीं समाता था। कभी-कभी वह सोचता था कि, मैं ऐसी अवस्थामें पड़ता, तो इन आपत्तियोंसे बचनेके लिये और भी सुगम उपाय खोज निकालता। पुत्रके मनोगत भावोंको समझ पिताने उसे बल-विज्ञान, जलतत्त्व, पदार्थ-विज्ञान, ज्योतिष, भैषज्यतत्व आदिकी शिक्षा दी थी।

पिताकी मृत्यु होनेपर फर्गुसन् सैन्य-विभागमें भरती होकर भारतवर्षको आया, परन्तु उसे यह कार्य्य पसन्द नहीं हुआ और वह थोड़े ही दिनोंके बाद तलवार छोड़कर पर्य्य-टक बन गया। सबसे पहले उसने भारतवर्षका भ्रमण किया। एक दिन सवेरे उसकी पर्य्यटन-स्पृहा इतनी तीव्र हो उठी कि, वह कलकत्तेसे सूरतके लिये पैदल ही रवाना होगया। वहाँसे उसने आष्ट्रेलिया, रशिया, और अमेरिका की यात्रा की। यात्रामें उसे कभी किसी प्रकारका दुःख प्रतीत नहीं होता था। वह भूखके लिये खूब पक्का था, लगातार कई दिन तक भोजन न मिलने या स्वल्पाहार मिलने पर भी उसे कष्टका अनुभव नहीं होता था। निद्रा देवी उसकी दासी थी। समय हो या असमय, सुविधा हो या असुविधा, जगह

विस्तृत हो या संकीर्ण, जब जितना समय मिलता था उतने ही समयमें वह झट सो लेता था।

फर्गुसन्‌की ख्याति धीरे-धीरे बहुत बढ़ गई। अब वे एक प्रसिद्ध पर्य्यटक कहलाते थे। यद्यपि वे किसी सभा-समितिके सदस्य नहीं थे, किन्तु 'डेली टेलिग्राफ' नामक सुप्रसिद्ध समाचारपत्रमें निरन्तर अपनी कौतूहलपूर्ण भ्रमण-कहानी छपाने के कारण, वे सर्वसाधारणके निकट सुपरिचित होगये थे। डाक्टर फर्गुसन् किसी सभा-समितिमें सम्मिलित नहीं होते थे। वे सभामें बैठकर किसी व्यर्थ तर्क-वितर्कमें समय बितानेकी अपेक्षा वही समय किसी आविष्कार-व्यापारमें लगाना अधिक फलप्रद समझते थे। वे जब जिस बातको देखते थे, तब उसकी अन्तिम तह तक गये बिना उन्हें सन्तोष नहीं होता था। उनको भाग्यलिपि पर पूर्ण विश्वास था और इसलिये वे सदैव कहा करते थे कि, देश-भ्रमण करना हमारे भाग्यमें लिखा है—इस लेखको मिटा देनेकी ताक़त किसीमें नहीं है।

एक दिन रॉयल भौगोलिक समितिके भवनमें एक विराट सभा हुई। श्रोतागण बड़े उत्साहके साथ सभापतिका व्याख्यान सुन रहे थे। बीच-बीचमें करतलध्वनि और प्रशंसा-वाक्योंसे सभागृह प्रतिध्वनित हो उठता था। अपना व्याख्यान समाप्त करनेके पहले सभापतिने कहा,—

"भौगोलिक तत्त्वानुसंधानमें इँगलैण्डनेही पृथ्वीके सब

देशोंमें शीर्षस्थान प्राप्त किया है। ऐसी आशा की जाती है कि, इँगलैण्डका यह गौरव डाक्टर फर्गुसन् द्वारा शीघ्रही और वृद्धिको प्राप्त होगा। यदि उनकी चेष्टा फलवती हुई (श्रोताओंमेंसे एकने कहा,—'अवश्य होगी'), तो अफ्रिका का अपूर्ण मानचित्र शीघ्रही पूर्ण हो जायगा और यदि उनका उद्यम व्यर्थ गया, तोभी उनकी पराजयसे यही प्रमाणित होगा कि, मनुष्य अपने बुद्धि-कौशलसे अत्यन्त दुःसाहसिक कामोंके करनेसे भी पीछे नहीं हटता है।"

वक्तृता शेष होतेही डाक्टर फर्गुसनकी जयध्वनिसे सभाभवन मुखरित होने लगा। इसके पश्चात् शीघ्रही चन्देके लिये अपील की गई। देखते-ही-देखते २५ हज़ार रुपया संग्रहीत हो गया।

दूसरे दिन 'डेली टेलिग्राफ' पत्रने लिखा,—

"चिरकालके पश्चात् अब निर्जन अफ्रिकाकी नीरवता भङ्ग होना चाहती है। ६ हज़ार वर्षसे जो बात अन्धकार की गोदमें छिपी हुई थी, अब वह प्रकाशमें आना चाहती है। नील नदीके जन्म-स्थानका पता लगानेकी चेष्टा इतने दिनसे बिल्कुल असम्भव और पागलपनकी चेष्टा समझी जाती थी। बहुत दिनोंके परिश्रमके पश्चात् अन्धकारयुक्त जङ्गलमय अफ्रिका-खण्डमें भीतर प्रवेश करनेके तीन मार्ग उन्मुक्त हुए थे। डेन्हम् और क्लापार्टनके आविष्कृत मार्गसे डा० वार्थ सूदान गये थे, डा० लिविंस्टन अनेक कष्ट सहकर उत्तमाशा

अन्तरोपसे जेम्बोजी तक गये थे और कप्तान स्पिक्‌ने एक पृथक्‌ मार्गसे जाकर अफ्रिका की कई अज्ञात झीलोंका पता लगाया था। ये तीनों मार्ग जिस जगह जाकर मिलते हैं—वही अफ्रिका का केन्द्रस्थान है। डाक्टर फर्गुसन्‌ शीघ्रही अफ्रिकाके इसी त्रिवेणी संगमके दर्शन करनेके उद्देश्य से यात्रा करने वाले हैं। उन्होंने बेलून द्वारा आकाश-मार्गसे यात्रा करनेका निश्चय किया है। अफ्रिकाके पूर्ववर्त्ती ज़ंज़ीबार द्वीपसे बेलून उड़कर पश्चिमप्रान्त तक जावेगा। उनकी यह यात्रा कहाँ और कैसे पूर्ण होगी, यह ईश्वर ही जाने!"

"डेली टेलिग्राफ"में यह लेख प्रकाशित होते ही सारे देश भरमें एक विषम हलचल मच गई। कई पाठकोंने अनुमान किया कि, 'डेली टेलिग्राफ'के सम्पादकने यह एक बिल्कुल बेसिर पैरकी बात लिखदी है। अन्यान्य समाचारपत्रोंमें भी इस लेखके विषयमें अनेक सन्देह और हास्यपूर्ण नोट निकले। फर्गुसन्‌ चुप होकर रह गये।

फर्गुसन्‌ नामका कोई आदमी है या नहीं, ऐसे असम्भव और दुस्साहसिक कार्य्यमें कोई प्रवृत्त हो सकता है या नहीं, यह यात्रा सफल होगी अथवा नहीं, फर्गुसन्‌ इँगलैण्डको लौटेगा या नहीं, इत्यादि कई बातोंके लिये इँगलैण्डमें कई लोगोंने शर्त्तें लगाईं।

कुछ दिन पश्चात्‌ जब सुना कि, लायन कम्पनीने सचमुचही

डा० फर्गुसनके लिये बेलून बनानेका भार लिया है और गवर्नमेण्टने रेजलिउट नामक एक जहाज़ फर्गुसनको यात्राके लिये प्रदान किया है, तब सब लोगोंका सन्देह दूर होगया और चारों ओरसे धन्य-धन्य की आवाज़ें आने लगीं।

फिर क्या था, प्रतिदिन झुण्डके झुण्ड मनुष्य आकर फर्गुसनसे मिलने और नाना प्रकारके प्रश्न करने लगे।

किसी-किसीने साथ जानेकी भी इच्छा प्रकट की। फर्गुसन् लोगोंको सदुत्तर देकर लौटाने लगे, उन्होंने किसीको साथ ले चलने की अनुमति नहीं दी।
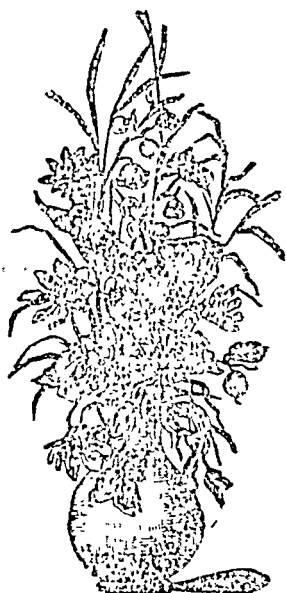
दूसरा परिच्छेद ।

दो मित्र ।

डाक्टर फर्गुसन्का एक मित्र था; उसका नाम था—डिक् केनेडी। यद्यपि दोनों मित्रोंकी मति-गति और प्रकृति एकसी नहीं थी, तथापि इस कारण उनकी मित्रतामें कुछ बाधा नहीं पड़ती थी। डिक् केनेडी दृढ़प्रतिज्ञ और सरल स्वभावका मनुष्य था। वह जो सोचता वही कर डालता था। शिकार करने और मछली पकड़नेमें तो उसके जोड़का आदमी एडनबरा प्रदेशमें दूसरा नहीं था। उसका निशाना ऐसा अचूक था कि, वह दूर रक्खी हुई छुरीको एकही गोलीसे दो समान टुकड़ोंमें विभक्त कर देता था। उसकी देह सबल और दृढ़ थी। वह देखनेमें जैसा स्वरूपवान् था, उसका आचरण भी वैसाही पवित्र और निर्मल था। असीम साहस, अदम्य उत्साह, आसुरिक बल—यह सब केनेडीमें था।

तिब्बत-भ्रमणके पश्चात् फर्गुसन् दो वर्ष तक कहीं नहीं गया,

इससे केनेडीने समझा कि, मित्रकी पर्य्यटनस्पृहा अब शेष होगई है। इससे उसे कुछ सन्तोष भी हुआ। मित्रके दर्शन होतेही वह उससे कहा करता था—"अब यहाँ-वहाँ फिरनेकी आवश्यकता नहीं है। विज्ञान के लिये बहुत किया, अब कुछ दिन घरके कामधन्दे की ओर मन लगाओ।" फर्गुसन् मित्रकी बातोंका कुछ उत्तर नहीं देता था, वह सदैव चिन्तितसा बना रहता था।

जनवरी महीनेमें फर्गुसन्से साक्षात् होनेपर केनेडीने खूब बारीकीके साथ उसके मनोभावोंकी ओर लक्ष्य किया। मित्रके चले जाने पर वह सोचने लगा कि, फर्गुसन्को क्या होगया है? वह इतना चिन्तित क्यों दिखाई देता है? मामला कुछ समझमें नहीं आता। एक दिन अकस्मात् उसके हाथमें 'डेली टेलिग्राफ' का एक हिस्सा आगया। उसे देखते ही सब भेद खुल गया। उसके आश्चर्य्य की सीमा नहीं रही। वह टेबिल पर ज़ोर-ज़ोरसे हाथ पटककर कहने लगा,—

"देखो, कैसा पागल है! कैसा मूर्ख है! बेलून पर चढ़कर अफ्रिका-भ्रमण करना चाहता है! मालूम होता है कि, फर्गुसन् दो वर्षसे इसी चिन्तामें निमग्न था।" पासही केनेडीका एक नौकर बैठा था। वह कहने लगा—"मुझे तो यह एक निरी ग़प-सी जान पड़ती है।"

"तुम इसे ग़प समझते हो? नहीं, यह ग़प नहीं है। मैं उस पागलको अच्छी तरह जानता हूँ। ऐसा एक असम्भव प्रस्ताव ठीक उसीके योग्य है। देखो तो आकाशमें उड़कर

चाहता है! उः कैसी दुराकांक्षा है! कैसा पागलपन है! ईगल पक्षीको भी परास्त करना चाहता है! उसे इस वेढब कार्य्यसे रोकना चाहिये। मुझे जान पड़ता है कि, यदि मैं उसे बाधा न दूँ, तो वह एक दिन चन्द्रलोककी यात्रा करेगा!"

केनेडी अधिक विलम्ब सहन नहीं कर सका, वह मित्रके लिये चिन्तित होकर उसी रात्रिको लन्दनके लिये रवाना हो गया। सवेरे जिस समय फर्गुसन अपने निर्जन कमरेमें चिन्तामग्न होरहा था, उसी समय केनेडीने जाकर दरवाज़ा खटखटाया।

किवाड़ खोलतेही फर्गुसन्ने विस्मयके साथ कहा,—"क्या डिक् है?" फर्गुसन् मित्रको डिक् कहकर ही पुकारता था। केनेडीने सिरसे टोपी उतार कर कहा,—

"हाँ, मैं ही हूँ।"

"यह तो शिकार का अवसर है, शिकार छोड़कर लन्दन कैसे आये?"

"एक पागल आदमीको ठण्डा करनेके लिये आया हूँ।"

"पागल? पागल कौन है?"

केनेडीने 'डेली टेलिग्राफ' के एक अंशको फर्गुसन्के सामने रखकर कहा,—

"यह बात जो इसमें लिखी है क्या सच है?"

"बस, केवल इसी बातके लिये इतने व्यस्त होरहे हो? अच्छा, खड़े क्यों हो, बैठ जाओ न।"

"नहीं, बैठनेकी आवश्यकता नहीं है। पहले यह बतलाओ कि, तुम सचमुच ही वेलूनमें जाओगे?"

"हाँ, अवश्य जाऊँगा। यात्राका सब प्रबन्ध धीरे-धीरे पूर्ण हुआ जाता है। मैं—"बीचमें बाधा देकर केनेडीने कहा,—"चूल्हेमें जाय तुम्हारा प्रबन्ध।"

"तुम्हें पहलेसे ख़बर नहीं दी, मालूम होता है, इसीलिये तुम नाराज़ होगये हो। मैं काममें बहुत उलझा था, इस समय भी काम पूरा नहीं हुआ—अनेक चिन्तायें सिरपर सवार हैं; परन्तु विश्वास रक्खो, मैं तुमसे कहे बिना कभी न जाता।"

"कहे बिना न जाता" मानों मैं जानेके लिये बड़ा उत्सुक बैठा था।"

"उत्सुक नहीं तो—मैं तुमको भी तो साथ ले जाना चाहता हूँ।"

केनेडीने कहा—"क्या अपने साथ-साथ मुझे भी पागलख़ानेकी हवा खिलाना चाहते हो?"

"डिक्! तुम चलोगे, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। मुझे बहुत साथी मिलते थे, परन्तु तुम्हारे कारण मैंने उनको साथ ले चलनेसे इन्कार कर दिया है।"

केनेडी एकदम हतबुद्धि होकर रह गया। फार्गुसन् कहने लगा—"यदि तुम स्थिर होकर १० मिनिट मेरी बातें सुनोगे, तो तुम मुझे धन्यवाद दिये बिना न रह सकोगे।"

"तुम दिल्लगी तो नहीं कर रहे हो ?"

"नहीं—दिल्लगी क्यों करूँगा ?"

"अच्छा, मानलो यदि मैं न चला।"

"तुम अवश्य चलोगे।"

"यदि न चला—?"

"तो मैं अकेलाही जाऊँगा।"

"देखता हूँ कि बातें क्रमशः गम्भीर होती जाती हैं। यदि यह दिल्लगी न हो, तो मैं इस विषयमें कुछ विशेष बातें जानना चाहता हूँ।"

"तुम्हें क्या अभीतक दिल्लगी ही सूझ रही है ? अच्छा, आओ, प्रातः भोजन करते-करते सब बातें सुनाये देता हूँ।"

दोनों मित्र एक छोटी टेबिलके पास बैठकर प्रातः भोजन करने लगे। टेबिल पर कुछ बिसकुट और एक बड़े पात्रमें चा रक्खी थी। भोजन करते-करते केनेडीने कहा—"फर्गुसन्! तुम्हारे प्रस्तावमें पागलपनके सिवा और कुछ नहीं है। वह कभी सम्भव होगा, इसकी मुझे आशा नहीं है।"

"जब तक प्रयत्न करके न देखा जाय, तब तक कैसे कहा जा सकता है कि सम्भव होगा या नहीं।"

"अरे भाई! वही प्रयत्न तो सम्भव नहीं है।"

"क्यों ?"

"इसमें कितनी बाधायें हैं—कितनी विपत्तियाँ हैं—इसकी खबर है ?"

फर्गुसन्ने गंभीरतापूर्वक कहा—"बाधायें! वह तो क्षण भरमें दूर हो जायँगी। बाधायें क्या चिर दिन तक ठहरती हैं? दूर होनेके लिए ही उनका जन्म हुआ है। रही विपत्तियाँ, सो कहाँ विपद् नहीं है भैया? इसी खानेकी टेबिल पर बैठे-बैठे कितनी विपत्तियाँ घट सकती हैं, इस टोपी को सिर पर रखते-रखतेही कितनी विपदायें आ सकती हैं—उन्हें टालनेमें कौन समर्थ है? भविष्यत् इसी वर्त्तमानकी छाया है—क्या वह भी दूर हटाई जा सकती है?"

"बस यही तुम्हारा वक्तव्य है? देखते हैं कि, इस समय तुम बड़े अदृष्टवादी बन गये हो?"

"अदृष्टवादी तो मैं हमेशासे ही हूँ। अदृष्टवादमें जो कुछ अच्छापन है, उसका मैं सदैव पक्षपाती रहा हूँ। विधाताने कपालमें क्या लिख रक्खा है, इस चिन्तासे मुझे प्रयोजन नहीं। पर बहुधा लोग ऐसा कहा करते हैं कि, फाँसीसे जिसकी मृत्यु लिखी होती है वह कभी जलमें डूबकर नहीं मर सकता। इस कथनमें सत्यताका अभाव नहीं है।"

यद्यपि इस बातका कोई अच्छा उत्तर नहीं था, किन्तु केनेडी अनेक तरहसे तर्क करने लगा। प्राय: एक घण्टा खूब तर्क-वितर्क करनेके पश्चात् उसने कहा,—"अच्छा, यदि अफ्रिका-भ्रमण करना ही आपका उद्देश्य है, तो इस बेढंगे उपायको त्यागकर प्रचलित मार्गका अवलम्बन क्यों नहीं करते?"

"प्रचलित मार्गसे न जानेका कारण किसीसे छिपा नहीं है। आज तक जो लोग उस मार्गसे गये हैं, उन सबकी चेष्टायें विफल हुई हैं। माङ्गोपार्कसे लेकर भोगेल् तक कोई भी सफल-मनोरथ नहीं होसका। माङ्गोपार्ककी क्या गति हुई, जानते हो? वह नाइगरके किनारे बड़ी निर्दयता के साथ मारा गया था। भोगेल्ने एक झीलके अतल जलमें चिर-समाधि ली थी। इसी प्रकार औडनकी मृत्यु मुर्सुरमें, और क्लापार्टनकी समाधि साकातूमें हुई थी। सुना जाता है कि, फरासीसी पर्य्यटक मैजन्के असभ्य जङ्गली लोगोंने टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे—मेजर लाङ्ग, रोसर प्रभृतिके रक्तसे "अफ्रिकाकी भूमि सिक्त हुई थी। तुमको ऐसे कितने आदमियोंके नाम गिनाऊँ—अफ्रिकामें सैकड़ों यात्रियोंने अपने प्राण खोये हैं। दारुण भूख, भयङ्कर शीत, भीषण ज्वर, हिंस्र पशु, पशुओंकी अपेक्षा भी अधिक हिंस्र असभ्य बर्बर मनुष्य—अफ्रिकामें इनके हाथसे किसीकी रक्षा नहीं है। जिस मार्ग परसे जानेमें सभी यात्रियोंने धोखा खाया है—जो विपदपूर्ण है, उसको त्यागकर किसी अन्य मार्गका अवलम्बन करना क्या उचित नहीं है? जब हम अफ्रिकाके भीतर किसी मार्गसे नहीं जा सकते हैं, तब हम ऊपर उड़कर ही जावेंगे।"

केनेडीने कहा—"भाई, सुना तो सब, पर ये पक्षियोंके समान उड़नेकी बातें—"

माधा देकर फार्गुसन कहने लगा:—

"इसमें भय क्या है? बेलून उड़ते-उड़ते नीचे गिर न पड़े, इसका पक्का प्रबन्ध कर लेना चाहिए। और मान लो, वह नीचे गिर भी पड़े तो हर्ज क्या है? अन्य यात्रियोंकी तरह हम भी पैदल चलेंगे। परन्तु विश्वास रक्खो, मेरा बेलून कभी गिर नहीं सकता।"

"गिर भी सकता है।"

"नहीं कदापि नहीं। अफ्रिकाके पूर्वप्रान्तसे लेकर पश्चिम-प्रान्त तक गये बिना, हम बेलूनको कभी न छोड़ेंगे। बेलून रहनेसे सब सुभीता हो जावेगा। और यदि बेलून न भी रहा तो समझेंगे कि दूसरोंकी जो गति हुई थी, वही हमारी भी होगी। बेलूनमें जानेसे कई आपत्तियोंसे बच सकेंगे। आँधी, पानी, पशु, पक्षी और नरभक्षी मनुष्य,—किसीसे डर न रहेगा। देखो, जिस समय हमको खूब गरमी मालूम होगी, उस समय हम बेलूनको लेकर ऊपर उड़ जावेंगे। यदि ऊपर अधिक ठण्ड लगेगी, तो नीचे उतर आवेंगे। सामने यदि दुर्गम गिरिशृङ्ग आजावेगा, तो हम बेलूनको ऊँचा करके शीघ्र ही उसे लाँघ जावेंगे। बड़ी-बड़ी दुर्गम नदी, झीलें और आँधी तूफान आदि कुछ भी हमारी गतिको रोकनेमें समर्थ न हो सकेंगे। देखो, कितने सुभीते हैं। भ्रमणमें थकावट न होगी, विश्रामकी भी चिन्ता न रहेगी। हम कितने नये-नये प्रदेशोंके ऊपरसे सहजही उड़ते चले

जावेंगे। वेगशाली वायु-प्रवाह हमको शीघ्रताके साथ उड़ा ले चलेगा। मनमें कल्पना करके देखो, कभी मेघोंके नीचे, कभी भूपृष्ठके दो चार हाथ ऊपर—जब जैसी आवश्यकता या इच्छा होगी, अपने बेलून को ले जा सकेंगे और अफ्रिका की अज्ञात दृश्यावली मानो सजीव होकर हमारे चरणोंके नीचे-नीचे नाचती फिरेगी।"

फर्गुसनका उत्साह क्रमशः केनेडीके हृदयपर अधिकार करता जाता था, किन्तु जब वह अपने मानस नयनोंसे नील आकाशमें मेघमालाओंके मध्य उड़ते हुए बेलूनके दर्शन करता था, तब उसका माथा घूमने लगता था। वह विस्मय-मिश्रित गौरव और भीतिके साथ अपने बन्धु फर्गुसन के मुँह की ओर देखने लगता था। उसे जान पड़ता था कि, मैं अनन्त शून्य वायुराशिके मध्य चल रहा हूँ। कुछ समयके पश्चात् केनेडीने कहा,—

"क्या तुमने बेलूनको अपनी इच्छित दिशाकी ओर ले जानेका कोई उपाय सोच लिया है?"

"ऐसा होना कभी सम्भव नहीं है—यह इच्छा आकाश-कुसुमके समान दुर्लभ है।"

"तो फिर तुम—"

"भगवान् जिस ओर ले जावेगा, उसी ओर जाना पड़ेगा। पर तोभी हम पूर्वसे पश्चिमको जा सकेंगे—इसमें कोई सन्देह नहीं है।"

"यह कैसे ?"

"क्या तुमने व्यापारी-वायुका नाम नहीं सुना ? अफ्रिका में पूर्वसे पश्चिमकी ओर निरन्तर अविराम वायु-प्रवाह चला करता है। हमारा बेलून इसी वायु-प्रवाहके मध्य होकर चलेगा।"

"हाँ, ठीक कहते हो। व्यापारी वायुके स्रोतमें बेलूनको छोड़कर तुम पूर्वसे पश्चिम सहजही जा सकोगे।"

"गवर्नमेण्टने कृपापूर्वक हमारे लिये एक जहाज़की व्यवस्था कर दी है। यह जहाज़ हमको ज़ंज़ीबार पहुँचा आवेगा। इसके सिवा जिस समय हम अफ्रिकाके पश्चिमी तीरपर पहुँचेंगे, उस समय तीन चार जहाज़ हमारे अनुसन्धानमें समुद्र-किनारे-किनारे घूमेंगे। हम समझते हैं कि, तीन महीनेके भीतर-ही-भीतर हम ज़ंज़ीवार पहुँच जावेंगे। इसी जगहसे बेलूनको गैस-पूर्ण करके यात्रा करेंगे।"

"केनेडीने चकित होकर कहा—"हम! तुम और कौन ?"

"हाँ, तुम और हम। क्यों तुम्हें इसमें कुछ आपत्ति है ?"

"कुछ कैसे ? मुझे हज़ारों आपत्तियाँ हैं। उनमें से एक अभी कहता हूँ, सुनो—यदि देश देखना चाहोगे तो तुमको कई बार बेलून ऊपर नीचे ले जाना पड़ेगा। बेलूनको बार-बार ऊपर नीचे ले जानेमें सब गैस नष्ट हो जायगा।"

"तुम भूलते हो डिक्—एक बिन्दु भी गैस नष्ट न होगा।"

"गैस छोड़े बिना तुम बेलूनको नीचे कैसे ले आ सकोगे ?"

"ले आ सकेंगे।"

"कैसे?"

"यही तो हमारा गुप्त कौशल है। भाई! तुम मुझपर विश्वास रक्खो और मेरे ही समान कहो—"ईश्वर इस यात्रा को सफल करे।"

केलेडोने सेशोनके समान कह दिया—"भगवान् इस यात्राको सफल करे।"

तीसरा परिच्छेद ।

पथ-निर्व्वाचन ।
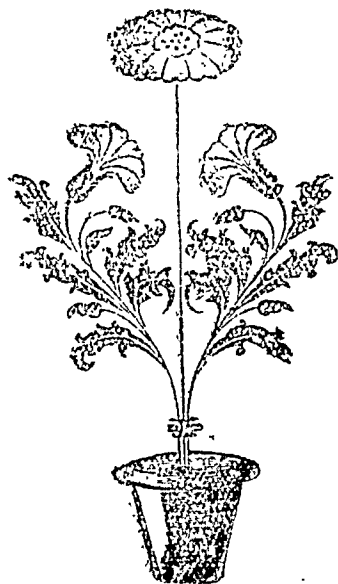
डाक्टर फर्गुसनने बहुत सोच-विचारके पश्चात् ज़ंज़ीबार परसे यात्रा करना स्थिर किया। नील नदीका उत्पत्ति-स्थान आविष्कार करनेके लिए अन्तिम बार जो आयोजन हुआ था, वह भी ज़ंज़ीबार परसे ही हुआ था। फर्गुसनने अपने पूर्ववर्त्ती पर्य्यटक डाक्टर वार्थ, वार्टन और स्पिक्के मार्गका अनुसरण करनाही उचित समझा।

डाक्टर वार्टन और स्पिक्, नाना प्रकारके कष्ट सहकर भी, नील नदीके जन्मस्थान तक नहीं पहुँच सके। उनके पश्चात् भी अनेक लोगोंने विपुल प्रयास किया, किन्तु उनमें से कोई भी अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुँच सका। डाक्टर फर्गुसनने इन सब यात्रियोंकी भ्रमण-कहानियाँ ख़ूब ध्यानसे पढ़कर ही अपना मार्ग निश्चित किया था। मार्ग निश्चित होतेही वे यात्राकी तैयारीमें लग गये और थोड़ेही दिनोंमें उन्होंने अरबी तथा माण्डिन्, गुइयान् भाषाएँ सीख लीं।

डिक् केनेडी मित्रके साथ-ही-साथ रहा करता था। डा० फर्गुसनको यात्रासे विरत करना ही उसका उद्देश्य था। जब उसकी सब युक्तियाँ, सब तर्क वृथा हुए तब एक दिन उसने मित्रके दोनों हाथ पकड़ कर उसे खूब समझाया, खूब मिन्नत की, परन्तु इससे भी उसका सङ्कल्प नहीं बदला। केनेडी मित्रके लिए बहुत दुःखी रहने लगा। वह प्रतिदिन यात्राके स्वप्न देखा करता था। आँख लगतेही प्रायः उसे ऐसा मालूम होता था कि, मैं बेलूनमें बैठा हूँ और बेलून आकाशमें बहुत ऊँचा उड़ रहा है। कुछही समयके उपरान्त बेलून उस महाशून्यसे नीचे भूमिकी ओर गिरता हुआ दिखाई देता था! भयके मारे प्राण काँप उठते थे और उसी समय उसकी नींद खुल जाती थी। ऐसा स्वप्न देखते समय वह दो वार चारपाईसे नीचा गिर पड़ा था और उसके सिरमें चोट भी आगई थी!

फर्गुसन मित्रकी ऐसी दशा देखकर भी विचलित नहीं हुआ। वह गंभीरतापूर्वक कहने लगा:—

"भाई डिक्! डरो मत, अपने बेलूनके गिरनेकी ज़रा भी आशंका नहीं है।"

"यदि गिर पड़ा तो?"

"नहीं, कभी नहीं गिर सकता।"

केनेडी चुप हो रहा। फर्गुसनने उसकी बात अभी तक नहीं मानी, इसके लिए उसे बहुत दुःख हुआ। बेलून-

यात्राकी बात छिड़तेही फर्गुसन सदैव "हम जावेंगे" "हमारा बेलून" "हमारा प्रबन्ध" आदि बहुवचनान्त शब्दोंका प्रयोग किया करता था, "मैं" "मेरा" आदि एकवचनान्त शब्दोंको उपयोगमें नहीं लाता था। इससे केनेड़ीका भय धीरे-धीरे बढ़ता जाता था। वह सोचने लगा कि, क्या मुझे फर्गुसनके साथ अन्तमें जानाही पड़ेगा? परन्तु उसका हृदय कहता था—"कभी नहीं, किसी प्रकार नहीं।"

एक दिन केनेडीने कहा,—"क्यों भाई, नील नदीका जन्मस्थान आविष्कार करनेसे क्या लाभ होगा? क्या इससे मनुष्य-समाजके कुछ उपकार होनेकी संभावना है? या अफ्रिकाके असभ्य लोगोंको सभ्य बनानेका विचार है, परन्तु इससे क्या लाभ होगा? यूरोपीय सभ्यता ही आदर्श सभ्यता है, अफ्रिकाकी सभ्यता अच्छी नहीं है, इसका क्या प्रमाण है?"

फर्गुसनने कुछ उत्तर नहीं दिया। डिक् कहने लगा:—"ऐसा एक दिन अवश्य आवेगा, जिस दिन अफ्रिकामें एक स्थानसे दूसरे स्थानको सहज ही यात्रा की जा सकेगी। छै महीने या वर्ष भरके भीतर ही कोई न कोई आविष्कारक तुम्हारे लक्ष्य-स्थानपर अवश्य पहुँचेगा। क्योंकि अनेक मनुष्य नील नदीका जन्मस्थान देखनेके लिए रवाना हो चुके हैं। अब तुमको इतने जल्दी जानेकी क्या आवश्यकता है?"

"और एक मनुष्य आविष्कारकका गौरव प्राप्त कर सके,

तो क्या हर्ज है ? भीरुके समान नाना प्रकारकी आपत्तियाँ उपस्थित करके, क्या तुम मुझे उस गौरवमयी जयमालासे वञ्चित रखना चाहते हो ?"

"किन्तु—"

"तुम अपने मनमें विचार देखो कि जो लोग इस समय अफ्रिका-पर्य्यटनके लिए गये हुए हैं, उनको मेरे जानेसे सहायता न मिलेगी ? या जो यात्री भविष्यमें जावेंगे, उनको मेरी भ्रमण-कहानीसे लाभ न पहुँचेगा ?"

"किन्तु—"

"फर्गुसनने बाधा देकर कहा,—"पहले मुझे कहलेने दो। देखो, यह अफ्रिकाका मानचित्र (नक़्शा) है।"

केनेडी कठपुतलीकी नाईं चुपचाप बैठ रहा और मन्त्र-मुग्धकी नाईं उस विस्तृत मानचित्रकी ओर देखने लगा। फर्गुसन कहने लगा,—

"नील नदीसे गण्डोरोकी नगर कितनी दूर है ? दिखाई दिया ?"

"हाँ, मिल गया—यही तो गण्डोरोकी नगर है।"

"यह कम्पास लो। इसका एक काँटा गण्डोरोकी पर रक्खो। बड़े-बड़े साहसी पर्य्यटक भी आजतक गण्डारोकी नगरकी सीमातक नहीं पहुँच सके। गण्डारोकीसे ज़ञ्जीबारका कौनसा मार्ग है, मिला ?"

"हाँ, मिलगया।"

"अच्छा, अब देखो, काजे नगर कहाँ है ?"

"वह भी मिल गया ।"

"अब २२ डिगरीकी ऊँचाई तक बराबर ऊपरको बढ़ते जाओ ।"

"अच्छा बढ़ता हूँ ।"

"पहुँच गये, आउकेरू झीलतक बराबर चले जाओ ।"

"यही तो वह झील है, यदि ज़रा और आगे बढ़ता तो उसमें गिरे बिना न रहता ! अच्छा अब ?"

"इस झीलके उत्तरीय सिरेसे एक जलधारा निकलकर नील नदीमें जा मिली है—वही निश्चय नील नदी है ।"

"यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है ।"

"अब कम्पासका दूसरा काँटा आउकेरू झीलके उत्तरीय सिरेपर रख दो । और फिर देखो, कम्पासके दोनों सिरोंमें कितनी डिगरीका अन्तर है ?"

"प्रायः दो डिगरीका ।"

"जानते हो, दो डिगरीमें कितने मील हुए ?"

"नहीं भाई, यह नहीं मालूम ।"

"प्रायः १२० मील हुए । भौगोलिक समितिके मतसे इस झीलके आविष्कृत और परीक्षित होनेकी बड़ी आवश्यकता है । कप्तान स्पिक् और ग्राण्ट इसी कार्य्यके लिए नियुक्त हुए हैं । वे लोग एक स्टीमर खार्तूमसे गण्डारोको तक ले गये हैं । वहाँ उतरकर वे जब तक उक्त झीलका अनुसन्धान करेंगे, तबतक स्टीमर वहीं रहेगा ।"

"यह बहुत अच्छा बन्दोबस्त है।"

"शायद तुम्हें यह मालूम न होगा कि, इसी आविष्कार-व्यापारमें साहाय्य करनेके लिए हमें बहुत शीघ्र यात्रा करनी पड़ेगी।"

"जब अनेक पर्य्यटक गये हुए हैं, तब अब हम लोगोंके जानेकी क्या आवश्यकता है?" इस वार फर्गुसनने कोई उत्तर नहीं दिया। केवल गंभीर भावसे उन्होंने अपना सिर नीचे झुका लिया। केनेडीका मुँह सूख गया।

चौथा परिच्छेद।

भृत्य जो।

फर्गुसनका एक भृत्य था, उसका नाम था—जो। जो खाने-पीने, चलने-फिरने, और यात्राके समय छायाके समान सदैव प्रभुके पीछे-पीछे रहा करता था। एक तरहसे जो ही फर्गुसनके घरका कर्त्ता-धर्त्ता था। जोके निकट फर्गुसनकी कोई बात छिपी नहीं रहती थी। जिस दिन फर्गुसनने जोसे अफ्रिका-भ्रमणकी बात कही थी, जोने उसी दिन निश्चय कर लिया था कि जब प्रभु कहते हैं, तो अब इसमें शंका करनेकी कोई बात नहीं है।

अफ्रिका-भ्रमणको लेकर जो और केनेडीके बीच बहुधा खूब आलोचना हुआ करती थी। एक दिन जोने कहा,—

"मि० केनेडी! देखो, समय कैसा अग्रसर हो रहा है। ऐसा एक दिन अवश्य आवेगा, जब हम सहज ही चन्द्रलोककी यात्रा कर सकेंगे।"

"तुम्हारा मतलब अफ्रिकाके चन्द्र राज्यसे है न? वह

अधिक दूर तो नहीं है, पर चन्द्रलोक जानेके समान ही विपद्-जनक है।"

"क्या कहते हो विपद्जनक! डा० फर्गुसनके साथ रहनेपर भी विपद्?"

"तुम अपने इस अगाध विश्वासको लेकर सुखी रहो, मैं तुम्हारे उस सुख-स्वप्नको भंग नहीं करना चाहता। किन्तु यह निश्चय समझो कि मि० फर्गुसनने इस बार जिस कार्य्यमें हाथ लगाया है, वह उनके पागलपनके सिवा और कुछ नहीं है। इस बार मुझे उनकी यात्रामें सन्देह है।"

"क्या कहा—सन्देह है? क्या आपने मिचेलकी दूकान पर उनका बेलून नहीं देखा?"

"नहीं देखा—देखना भी नहीं चाहता।"

"जो न देखोगे तो समझो कि, तुम एक बहुत अच्छी दर्शनीय वस्तु देखनेसे वञ्चित रह गये। बेलून बहुत सुन्दर बना है। आकृति भी बहुत अच्छी है।"

"तुम फर्गुसनके साथ तो अवश्य ही जाओगे?"

"जाऊँगा क्यों नहीं? जहाँ प्रभु वहाँ नौकर। जब उनके साथ सारी पृथ्वी घूम आया हूँ, तब आज क्या उनको अकेले जाने दूँगा? जब वे थककर सो रहेंगे, तब पहरा कौन देगा? जब पहाड़की उच्च भूमिसे नीचे उतरनेकी जरूरत पड़ेगी, तब उनको सहायता कौन देगा? जब-कभी उनकी तबियत अस्वस्थ होगी, तब उनकी शुश्रूषा कौन करेगा?"

"धन्य है तुमको—तुम्हारे समान नौकर बहुत कम होंगे।"

"आप भी तो हमारे साथ चलेंगे?"

"शायद विवश होकर चलना भी पड़े। परन्तु जहाँतक मुझसे हो सकेगा, मैं उनको लौटा लानेकी चेष्टा करूँगा। जंजीबार तक जाऊँगा—अन्तिम मुहूर्त तक प्रयत्न करूँगा और हो सकेगा तो उनको वहाँसे लौटा लाऊँगा।"

जोने दृढ़ स्वरसे कहा—"आपकी यह आशा दुराशा मात्र है। किसी भी कार्य्यमें प्रवृत्त होनेके पहले वे उस कार्य्यकी भलाई-बुराईका दूर तक विचार कर लेते हैं। आगा-पीछा सोचे बिना वे कभी किसी कार्य्यमें हाथ नहीं डालते; परन्तु जब किसी कार्य्यमें प्रवृत्त हो जाते हैं, तब कोई किसी प्रकार उन्हें उस कार्य्यसे विमुख नहीं कर सकता है।"

"अच्छा, देखा जायगा।"

"यह आशा छोड़ो। अन्तमें आपहीको साथ होना पड़ेगा। आपके समान प्रसिद्ध शिकारियोंके लिए तो अफ्रिका ही उपयुक्त स्थल है। सुना है कि, आज हम सबको वज़न कराना होगा।"

"यह क्यों? क्या हम सर्कसके घुड़सवार हैं? वज़न-फज़न करानेकी क्या ज़रूरत है?"

"वज़न कराये बिना काम न चलेगा। सुना है कि, बेलून-यात्राके लिए वज़न कराना आवश्यक है।"

"वज़न न करानेपर भी वेलून न उड़ सकेगा।"

"वेलून पर कितना वज़न है, इसका जानना नितान्त आवश्यक है। वज़नका अन्दाज़ हुए बिना वेलून नहीं उड़ाया जा सकता।"

"न उड़ाया जाय—मैं भी तो यही चाहता हूँ।"

"वह देखो, वे स्वतः ही इस ओर आ रहे हैं।"

"आने दो—मैं किसी तरह जाने को राज़ी नहीं हूँ।"

जिस समय केनेडी ज़ोरसे उक्त वाक्य कह रहा था, उसी समय फर्गुसन वहाँ आ पहुँचे और स्थिर दृष्टि से मित्रकी ओर निहारने लगे। केनेडीको वह दृष्टि अच्छी नहीं लगी। फर्गुसनने कहा,—"डिक्! जोके साथ शीघ्र यहाँ आओ, तुम दोनोंका वज़न कराना है।"

"किन्तु—"

केनेडीकी बात पर कान न देकर—"बहुत शीघ्र आओ, देर हुई जाती है।" इस बार केनेडीको कुछ कहनेका साहस नहीं हुआ, वह चुपचाप उठ खड़ा हुआ और मित्रके पीछे होगया। जो मन-ही-मन सोचने लगा—मैं पहले ही जानता था कि, मालिक के सामने इनकी एक न चलेगी—सब आपत्तियाँ हवा हो जायँगी।

मिचेल की दूकान पर जाकर डाक्टर सब का वज़न करने लगे। पहले केनेडी ही की बारी आई। वह मन-ही-मन सोचने लगा,—अच्छा, वज़न ले लेने दो—वज़न हो जाने पर

भी तो मैं जानेसे इन्कार कर सकता हूँ। भला 'न' की क्या औषध है? यह सोच वह झट तराजूके एक पल्ले पर जा खड़ा हुआ। फर्गुसनने कहा—"एक मन साढ़े इक-तीस सेर।"

कैनेडी—"क्या मैं अधिक वज़नदार हूँ?"

जौ—"कौन कहता है आप अधिक वज़नदार हैं? पर हाँ, मैं तुमसे कुछ हलका अवश्य होऊँगा।" ऐसा कह कर वह भी झट तराजूके पल्ले पर चढ़ गया।

फर्गुसनने कहा—"एक मन बीस सेर। इस बार हमारी ही बारी है।" उनका वज़न एक मन तीस सेर निकला।

फर्गुसनने सब का वज़न नोटबुक में लिख कर कहा—"कुल मिलाकर सबका वज़न पाँच मन से अधिक नहीं है।"

जौ—"ज़रूरत पड़ने पर मैं अपने वज़न को १० सेर और घटा सकता हूँ। कुछ दिन भोजन न करने से इतनी कमी हो जावेगी।"

फर्गुसनने हँसकर कहा—"जौ! इसकी ज़रूरत नहीं है, तुम्हारा जितना मन चाहे खाओ।" इसके पश्चात् वे जौके हाथमें कुछ रुपया देकर घर लौट आये।

यात्राका दिन ज्यों-ज्यों नज़दीक आता जाता था, डाक्टर साहब की चिन्ता भी त्यों-त्यों बढ़ती जाती थी। बेलून जैसा चाहिये वैसा उपयोगी कैसे बनाया जा सकता है, यही सदा चिन्ता उनको सदैव व्यस्त किये रखती थी। उन्होंने

हिसाब लगाकर देखा कि, वेलून को कुल मिलाकर ५० मन वज़न लेकर उड़ना पड़ेगा। यह वज़न कुछ अधिक नहीं था, इसलिए उन्होंने वेलूनको हैड्रोजन गैससे पूर्ण करने का विचार किया*। वेलून में ३ मन ३८ सेर गैसके लिए स्थान था। वे जानते थे कि, वेलून को ५० मन वज़न लेकर उड़नेके लिए ४४८४७ घन फुट हवा हटाकर वायुमण्डलमें स्थान करना पड़ेगा। फर्गुसनने देखा कि, वेलून में ३ मन ३८ सेर गैस भरतेही वह फूलकर कुप्पा हो जायगा, किन्तु वह जितने ऊपर जायगा, उसके ऊपर वायुमण्डलका दवाव उतना ही कम होता जायगा। गैसका धर्म फैलना है, सुतरां बाहरका दवाव कम होते ही वह क्रमशः फैलने—विस्तृत होनेकी चेष्टा करेगा और अन्तमें वेलूनके आवरणको फाड़ कर अनन्त आकाशमें मिल जायगा। इस लिए डाक्टर साहबने वेलून के आधे अंशको गैस-पूर्ण किया।

एक की अपेक्षा, एक साथ दो वेलूनोंको व्यवहारमें लाना अच्छा होगा, यह समझने में उन्हें अधिक विलम्ब नहीं लगा। इसमें सन्देह नहीं कि, ऐसा करने से यदि एक वेलून में अकस्मात छिद्र भी हो जाय, तो आवश्यकतानुसार कुछ वज़न नीचे फेंककर दूसरेके सहारे उड़ सकेंगे। किन्तु दो वेलूनोंका

* ४४८४७ घनफुट वायुका वज़न ५० मन होता है, किन्तु इतनी ही हैड्रोजन गैस का वज़न ३ मन ३८ सेर ही होता है। हैड्रोजन, वायुकी अपेक्षा १४॥ गुना हलका है।

समभावसे चलानेका कौशल उन्हें अभी विदित नहीं था। बहुत सोच-विचारके पश्चात् एक बड़ा, और एक उससे कुछ छोटा बेलून बनानेका प्रबन्ध किया गया। उन्होंने सोचा कि, बड़े बेलून के भीतर छोटे बेलूनको भर कर उसे गैस-पूर्ण करेंगे। दोनों बेलूनके मध्य, संयोग स्थापित रखनेके लिए, एक मुख बनाया गया था—जिसे ज़रूरतके समय खोल और बन्द कर सकते थे। इतना प्रबन्ध हो जाने पर डाक्टर साहब मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुए। वे कहने लगे, अब गैस नष्ट हो जानेका कुछ डर नहीं रहा। छोटे बेलून के फट जाने पर उसकी गैस बड़े बेलून में रक्षित रक्खी जा सकती है।

आरोहियोंके बैठनेके लिए बेलूनके साथ नीचे एक गोलाकार झूला (दोला) लटकाया गया था। यद्यपि वह बेत और लकड़ी द्वारा निर्म्मित हुआ था, किन्तु उसके चारों ओर लोहेकी पतली चादर लगी रहने से वह बहुत मज़बूत हो गया था। फर्गुसनने झूलेके नीचे स्प्रिंग लगाकर आरोहियोंके सोने और आराम करनेके लिए भी जगह बना दी थी। उन्होंने लोहेकी चादरके चार सन्दूक बनवाये थे। ये चारों सन्दूक एक पोली छड़के द्वारा एक दूसरे से आबद्ध थे। एक दो इञ्च मोटे छिद्रके नल द्वारा ये सन्दूक झूलेसे खूब मज़बूतीके साथ बाँधे गये थे। एक सन्दूकमें पीनेके लिए जल रक्खा गया था। तीन मज़बूत लङ्गर, प्रायः १८ हाथ

लम्बी एक रेशम की रस्सी, वायुमानयन्त्र, तापमान यन्त्र, बारोमिटर आदि कई आवश्यक वस्तुयें, भोजनके लिये चा, काफी, बिस्कुट, सूखा मांस और अन्यान्य खाने की चीज़ें, कुछ ब्राण्डी, पानी पानेके पात्र, गोली बन्दूक और बारूद ये सब ही चीज़ें बेलून में रखली गईं। इसके सिवा फर्गुसनने कुछ कम्बल और जो-जो वस्तुयें आवश्यक समझीं, वे सब भी संभाल कर रखलीं। सब चीज़ोंको एकत्रित करके जब वज़न किया तो मालूम हुआ कि, बेलून कुल ५० मन बोझा लेकर आकाश-मार्गसे उड़ेगा!

पाँचवाँ परिच्छेद ।

जहाज़में ।

१० वीं फरवरीको यात्राकी तैयारी पूर्ण हो चुकी। १६ वीं तारीख़ को सरकारी 'रेजलिउट' जहाज़ यात्रियोंको ज़ञ्ज़ीबार ले जानेके लिए प्रस्तुत हुआ। डाक्टर साहबने बहुत सावधानीके साथ बेलूनको जहाज़पर रक्खा। हैड्रोजन गैस तैयार करनेके लिए आवश्यकतानुसार पुराने लोहेके टुकड़े और सलफ्युरिक एसिड भी जहाज़ पर रख लिया गया।

यात्राके एक दिन पहले सन्ध्या-समय रॉयल भौगोलिक समिति ने बेलून-यात्रियोंके सन्मानार्थ एक विराट नैशभोजकी तैयारी की। जिस समय नैश भोज बड़े समारोहके साथ सुसम्पन्न हो रहा था और बीच-बीचमें डा० फर्गुसन और उनके मित्र केनेडीके प्रशंसावाक्योंसे भोजनगृह प्रतिध्वनित हो उठता था, उस समय केनेडी मन-ही-मन बहुत संकुचित होता था। वह जानता था कि मेरा रेजलिउट जहाज़में यात्रा करनेका उद्देश्य बेलून द्वारा अफ्रिका-भ्रमण करना नहीं, किन्तु यदि संभव

हुआ तो अन्तिम मुहूर्त्त तक फर्गुसन को लौटा लाना है। केनेडीका मुखमण्डल लाल हो गया। आमन्त्रित सज्जनोंने समझा कि केनेडीके इस भावान्तर का कारण और कुछ नहीं, केवल उसकी नम्रताही है। अपनी प्रशंसा सुनकर ही उसकी ऐसी स्थिति होगई है। यह देख सब लोग केनेडी की और भी प्रशंसा करने लगे। इसी समय तार द्वारा समाचार आया कि, राजराजेश्वरी विक्टोरिया डा॰ फर्गुसन और केनेडी को अभिनन्दित करके सहर्ष सूचित करती हैं कि, उनके इस कार्य्यसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है, ईश्वर उनकी यात्राको सफल करे। शीघ्रही चारों ओरसे सम्राज्ञीकी जय की आवाज़ आने लगी। केनेडी सोचने लगा, क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ ?

रेज़लिउट जहाज़ जंज़ीबारके लिए रवाना होगया। राह में उल्लेख-योग्य कोई विशेष घटना नहीं हुई। फर्गुसन फुरसतके समय नाविकोंको अपने पूर्व्ववर्त्ती पर्य्यटक वार्थ, वार्टन, स्पिक् आदि की अफ्रिका-भ्रमणकी अद्‌भुत कहानियाँ सुनाया करते थे। एक दिन उन्होंने कहा,—

"यदि आप लोगोंका यह खयाल हो कि, हमें अधिक दिन तक आकाश-भ्रमण करना पड़ेगा, तो आप लोग भूलते हैं। ज़ंज़ीबारसे सेनीगाल नदी अधिक से अधिक ४००० मील दूर होगी। इतना मार्ग तय करनेके लिए बेलून को १० दिन बस हैं।"

"बेलून इतनी जल्दी जा सकता है, परन्तु ऐसी हालतमें देश देखना असंभवित है। देश देखनेके लिए तो ठहर-ठहर कर जाना पड़ेगा।"

"बेलून हमारा आज्ञाकारी होगा, तो हम अपनी इच्छानुसार उसे ठहरा सकेंगे। जिस समय ज़रूरत होगी, उसे नीचे ले जायँगे और जब इच्छा होगी तब नील आकाशको भेद कर उसे ऊपर उड़ा ले जावेंगे।"

जहाज़के अध्यक्षने कहा—"ऊपर जाने पर प्राय: प्रबल वायुस्रोत ही मिलेगा। सुना है कि, वहाँ कभी-कभी इतने ज़ोरकी हवा चलती है कि, जिसका वेग प्रति घण्टे २४० मील से अधिक होता है। आपका बेलून ऐसे प्रबल वायु-स्रोतमें ठहर सकेगा?"

"क्यों नहीं ठहरेगा? नेपोलियन के राज्याभिषेक के समय—सन १८०४ ई० में—भी ऐसा ही हुआ था। रात्रिके ११ बजे पेरिस से बेलून छोड़कर डा० वार्नेज़िन दूसरे दिन सवेरे ब्रा सियाना झीलमें गिर थे।"

इन बातोंको सुनकर केनेडीका हृदय थर थर काँपने लगा। उसने शुष्क कण्ठसे कहा—"बेलून तो सब कुछ सह लेगा, पर क्या बेलून के यात्री भी इतना वेग सहन कर सकेंगे? मैं तो समझता हूँ कि, उनके हाड़गोड़ टूट कर चूरमूर हो जायँगे।"

फर्गुसनने कहा—"भाई डिक्! डरनेका काम नहीं है।

बेलूनको असली वायुस्रोतमें न छोड़ेंगे. वह आसपासकी हवाके वेगसे ही उड़ता चलेगा। बेलूनके भीतर बैठने वालोंको हवाका वेग न सहन करना पड़ेगा। उस समय यदि तुम बत्ती जलाओगे तो वह ज़रा भी न काँपेगी। हमको इतने जल्दी जानेकी ज़रूरत भी नहीं है। हमारे पास दो महीनेके खाने पीनेके लिए सामग्री मौजूद है, इसके सिवा मि० केनेडी भी कभी-कभी कुछ शिकार कर लिया करेंगे।"

जहाज़का एक छोटा कर्मचारी कहने लगा—"मि० केनेडी, आपके सौभाग्यको देखकर ईर्षा होती है। देखता हूँ, इस भ्रमणमें आपको गौरव और शिकारका आनन्द दोनों ही प्राप्त होंगे।" बाधा देकर केनेडीने कहा—"आपके अभिनन्दनके लिये धन्यवाद है, किन्तु मैं उसे ग्रहण नहीं कर सकता।"

नाविकगण एक साथ कहने लगे—"क्यों? क्यों? क्या आप न जायँगे?"

"न।"

"डाक्टर फर्गुसनके साथ न जायँगे?"

"मैं न जाऊँगा केवल यही नहीं, किन्तु यदि हो सका तो मैं उनको भी न जाने दूँगा।"

"सब लोग विस्मयके साथ डाक्टरके मुँहकी ओर देखने लगे। उन्होंने कहा—"आप लोग इनकी बातों पर ध्यान न

दीजिये। ये सनमें भली भाँति जानते हैं कि, मुझे इनके साथ अवश्य जाना पड़ेगा।"

केनेडीने गम्भीर स्वरसे उत्तर दिया—"मैं शपथ करके कह सकता हूँ—"

बाधा देकर फर्गुसनने कहा,—"भाई, शपथ करना अच्छा नहीं, शपथ मत कीजिए। देखो, तुमने अपना वज़न कराया, अपनी बन्दूक़, गोली, बारूद आदिका वज़न कराया और उसीके अनुसार आपके सामने यह वेलून तैयार कराया गया है। अब 'मैं न जाऊँगा' ऐसा कहनेसे काम नहीं चल सकता। आपको चलनाही होगा।"

केनेडी किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर चुप हो रहा।

* * *

इतनेही दिनोंमें जहाज़के नाविकोंके साथ जो का खूब परिचय बढ़ गया था। साधारण नाविक बड़े आश्चर्यके साथ जो की वक्तृता सुना करते थे। एक दिन वह कहने लगा— "वेलूनमें बैठते ही उसकी सुविधा-असुविधा सब ध्यानमें आजा-यगी। मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि एकबार वेलूनमें बैठते ही फिर उससे उतरनेकी इच्छा न होगी। थोड़ेही दिनोंके बाद आप लोग सुनेंगे कि, हमलोग वेलूनमें बैठकर सीधे ऊपर की ओर जारहे हैं।"

"तो क्या आप लोग सीधे चन्द्रमा तक चले जायँगे?"

"चन्द्रमा तो एक छोटी बात है। हर कोई वहाँ जा

सकता है । सुना है, वहाँ न हवा है न पानी । हम जब जायँगे तब हवा पानीका खूब इन्तज़ाम करके जायँगे ।"

एक मद्यभक्त नाविकने कहा—"जल नहीं है तो न सही, जब तक मद्य है तबतक कोई चिन्ताकी बात नहीं है ।"

"उस जगह मद्य भी नहीं है ।"

"तो हमारे भाग्यमें चन्द्रलोकका दर्शन नहीं लिखा । न सही, हम इन चमचमाते हुए किसी नक्षत्रलोकको ही जायँगे ।"

जौने कहा—"नक्षत्रलोक ? इन सब नक्षत्रोंकी बातें मुझे ढेरों मालूम हैं । एकबार मैं सेण्टार देखने जाऊँगा—समझे ?"

"सेन्टार कौन ? वही न जिसके चारों ओर एक गोलाकार घेरा-सा दिखाई देता है ?"

"उसे हम क्या कहते हैं, जानते हो ? विवाहका घेरा, परन्तु सेण्टार की स्त्री को कभी कोई खबर नहीं मिली ।"

"आप लोग बहुत ऊँचे जायँगे ! जान पड़ता है कि, आपके डाक्टर साहब दुस्साहस और विद्यामें दैत्यके समान हैं ।"

"क्या कहा, दैत्य ? नहीं जी, वे बहुत अच्छे आदमी हैं ।"

"अच्छा, सेण्टारसे आप कहाँ जाययँगे ?"

"वहाँसे जुपिटर (बृहस्पति) । वह लोक बहुत सुन्दर है । वहाँ अधिकसे अधिक ८॥ घण्टेका दिन होता है । आलसियोंके लिये वहाँ बहुत सुविधा है । क्यों नहीं ? वहाँ का एक

वर्ष हमारे यहाँके बारह वर्षके समान होता है। यहाँ जो आदमी ६ महीनेके भीतर मरनेवाला हो, तो वहाँ जाने पर वह कुछ दिनोंके लिये और बच जायगा।"

एक मज़दूर-बालकने, जो नक्षत्रलोक की कहानी बड़े चावसे सुन रहा था—आश्चर्य-चकित होकर कहा—"क्या कहा, बारह वर्षका एक वर्ष!"

"क्यों, तुम्हें विश्वास नहीं होता? हमारे बारह वर्ष और उनका एक वर्ष। यहाँ तुम इतने बड़े दिखाई देते हो, परन्तु जुपिटर जाओ तो तुम्हें कुछ समय माँका दूध पीना पड़े। अच्छा, तुम वहाँ जिसे पृथ्वीपर का ५० वर्षका बूढ़ा देखोगे, वहाँ उसकी उमर कितनी समझोगे? यही समझो, वहाँ वह ३।४ वर्षका बच्चा ही होगा।"

"आपने क्या मुझे मूर्ख समझ रक्खा है?"

"अरे! तुझे क्या मेरी बातोंपर विश्वास नहीं होता? अच्छा, एकबार जुपिटरको चल न, वहाँ जाकर सब अपनी आँखोंसे प्रत्यक्ष देख लेना। किन्तु वहाँ जानेके लिए वेश-भूषा अच्छा चाहिए। जुपिटर-निवासियोंकी इस ओर विशेष दृष्टि रहती है।"

नाविकगण हँसने लगे। जो और भी गंभीरतापूर्व्वक कहने लगा,—

"मालूम होता है, आप लोगोंको नेपच्यूनका हाल भी नहीं मालूम है। वाह! वहाँ नाविकोंका कितना आदर

है। आहा! नीतिविद्याका सच्चा मर्म नेपच्यूनवाले ही जानते हैं। परन्तु मार्समें सैनिकोंकाही आदर है। इतना अधिक आदर है कि, वह अन्य लोगोंको सहन नहीं होता। आरगोंमें, जानते ही हो, चोर-डाकुओंका बड़ा उपद्रव है। वहां वणिकोंका अभाव नहीं—लोगोंका भी अभाव नहीं है। परन्तु उस देशमें चोर और वणिकोंमें अधिक अन्तर नहीं देखा जाता है।"

छठा-परिच्छेद।

डाक्टरका कौशल।

जिस समय जो सरलचित्त नाविकोंके साथ इस प्रकार अनेक काल्पनिक विषयोंकी चर्चा कर रहा था, उस समय डाक्टर साहब जहाज़के उच्चकर्म्म-चारियोंको अपने बेलूनके कल-कौशलका वृत्तान्त सुना रहे थे। वे कहने लगे,—

"बेलूनको हम अपनी इच्छानुसार—चाहे जिस ओर नहीं ले जा सकते। इस विषयमें हम बहुत कुछ पराधीन हैं*।"

"बेलून भी तो अनेकांशमें जहाज़होके समान है। जहाज़को चाहे जिस ओर—प्रवाहको प्रतिकूल दिशामें लेजा सकते हैं। जलमें तिलमात्र भी बाधा नहीं पड़ती।"

"माफ कीजिए कप्तान साहब—यह आपकी भूल है। जल एक वस्तु है और वायु दूसरी वस्तु। इन दोनोंके धर्म क्या एकसे हैं? जलकी अपेक्षा हवा हज़ार गुनी हलकी है।

---

* जिस समय इस ग्रन्थकी रचना हुई थी, उस समय एरोप्लेनका जन्म नहीं हुआ था।

जहाज़में अधिकसे अधिक वज़न भर दिया जाय, तोभी उसका निम्नभाग आधेसे अधिक नहीं डूबता; पर सारा-बेलून हवाके समुद्रमें डूबा रहता है। बेलूनके ऊपर-नीचे दहिने-बायें सब ओर हवा-ही-हवा रहती है। जलप्रवाह एक ओरको प्रवाहित होता है, किन्तु हवाका प्रवाह सब तरफ चलता है। भूपृष्ठपर बड़े-बड़े पहाड़, गहरी गुफायें, भारी मैदान, विस्तृत मरुभूमि और घने जंगल रहते हैं, इस कारण वायुप्रवाह सैकड़ों जगह रुक छिड़कर नाना दिशाओंकी ओर प्रवाहित होता है। परन्तु आकाशमें ये अड़चनें नहीं हैं। अनन्त नीलाकाश बाधा-बन्धनहीन है। अतएव जितने ऊपर जाओ, वायुप्रवाहमें प्रायः उतनीही समता दिखाई देती है। ऊपरी वायुस्रोत प्रायः एकही ओरको प्रवाहित होता है। उसमें परिवर्त्तन बहुत कम होता है। आकाश-मार्गमें किस जगह वायुकी गति किस प्रकार की है, इस बातका पता लग जाय तो फिर कोई चिन्ता नहीं है। वायुमण्डलकी जो तह बेलूनके लिए अनुकूल हो, उसी तहमें उसे छोड़ देनेसे वह मज़ेके साथ उड़ता जायगा।"

जहाज़के अध्यक्षने कहा,—"उपयुक्त वायुस्रोत खोजनेके लिये आपको कई बार ऊपर नीचे जाना आना पड़ेगा। जब-जब आप ऊपरसे नीचे आना चाहेंगे, तब-तब आपको कुछ गैस छोड़ना पड़ेगा और जब-जब नीचेसे ऊपर जाना चाहोगे, तब-तब आपको बेलून हलका करनेके लिए हर बार कुछ वज़न फेंकना

पड़ेगा। कई बार ऐसा करनेसे आपके बेलूनका गेस और वज़न दोनों घट जायँगे और ऐसा होना विपद्‌जनक है।"

"हाँ, इस बार आपने मूल बातकी ओर ध्यान दिया। बेलूनको चलाना कठिन नहीं है—गैसकी रक्षा करना कठिन है।"

"आजतक यह समस्या हल नहीं हुई।"

"हुई क्यों नहीं है।"

"होगई? किसने की?"

"मैंनेही की है।"

अध्यक्षने विस्मयके साथ कहा—"क्या कहा, आपने की है?"

"हाँ, मैंने ही की है। जो मैं इस समस्याको हल न करता, तो बेलून पर चढ़कर अफ्रिका-भ्रमणके लिए साहसी कैसे होता?"

"पर आपने यह बात इङ्गलैण्डमें प्रकट क्यों नहीं की?"

"नहीं की है। वह कोई बड़ा आविष्कार नहीं है। उत्तापके कम ज़ियादा करनेसे ही सब काम निकल जाता है।"

"अच्छा, यहाँतक कुछ-कुछ समझमें आया, आगे स्पष्ट रीतिसे कहिए।"

बेलूनके नीचेका मुँह इस प्रकार बन्द कर दिया गया है कि, उसमें तनिक भी हवा प्रवेश नहीं कर सकती है। बेलूनके बीचमें दो नल लगे हुए हैं। उनमेंसे एकका मुँह बेलूनके गर्भमें हैड्रोजनके ऊपरी अंशमें और दूसरेका मुँह उसके

निम्नअंशमें खुला हुआ है। वेलूनको किसी कारण कितना-ही आघात क्यों न पहुँचे, वार्निशसे जुड़ा रहनेके कारण उसके भीतरी नलोंको ज़रा भी धक्का नहीं पहुँच सकता है। ये दोनों नल वेलूनसे नीचेकी ओर आकर बाहर एक गोलाकार वक्सके ऊपरी ढकनसे जुड़े हुए हैं। यह वक्स ही गैस को उत्ताप देनेका यन्त्र है। यह यन्त्र बहुत मज़बूतीके साथ झूलेसे बँधा हुआ है।"

"वेलूनके ऊपरी हिस्सेसे जो नल नीचे आते हैं, वे उस गोलाकार वक्सके भीतर कुण्डलाकार घूमते हुए वक्सकी तली तक जा पहुँचे हैं। अन्तमें प्लेटनस धातुके आवरणमेंसे होकर बाहर आते हैं। इन नलोंमें हैड्रोजन गैस रहता है, इसलिए इन्हें उत्ताप देतेही गैस हलका होकर फैलने लगता है। ऊपरका गैस भारी होनेके कारण नीचे आने लगता है और नीचे उत्ताप पाकर फिर ऊपरको उठता है। गैस जितना हलका और विस्तृत होता है; वेलून भी उतनाही ऊँचा उठने लगता है।"

"इसके पश्चात्? यह तो बहुत सुगम उपाय दिखता है।"

"गैस गरमी पाकर फैलता है—यह उसका धर्म ही है। एक डिग्री गरमी देनेसे वह $\frac{१}{४८०}$ गुणा फैल जाता है। यदि हम १८ डिग्री गरमी दें तो वेलूनका गैस $\frac{१८}{४८०}$ गुणा फैल जायगा

अर्थात् १६७८ घनफुट बढ़ जायगा। गैसके फैलनेसे बेलून भी फूलकर ऊपरको उठने लगेगा।"

"आपको सहस्र धन्यवाद हैं। आपने आज मुझे अनेक बातें बतलाई हैं। मैंने अपने मनमें परीक्षा करके देखा है कि, आपकी बतलाई हुई सब बातें ठीक हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि, आप इस कार्य्यमें अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे।"

श्रोतमण्डली अत्यन्त उत्सुक होकर डाक्टर साहब के मुँह की ओर देखने लगी। वे गंभीरतापूर्वक कहने लगे,—

"गैस छोड़े और वज़न फेंके बिना बेलूनको इच्छानुसार हलका या भारी करनेकी तदबीर खोज निकालनेके लिए अनेक लोग बहुत समयसे प्रयत्न करते आये हैं, परन्तु इस प्रयत्नमें आजतक किसीको सफलता प्राप्त नहीं हुई है।"

"इसके पहले भी क्या किसीने प्रयत्न किया था?"

"हाँ, एक फरासीसी और एक बेलजियम-निवासी बेलून-विहारीने इसके लिए बहुत प्रयत्न किया था, परन्तु उनमेंसे एक भी क्तकार्य्य नहीं हो सका। मैंने उनके मार्गको छोड़कर एक नये मार्गका ही अवलम्बन किया है। मैंने वज़न रखने या फेंकनेके व्यवहारको बहुत कम कर दिया है। हमारे बेलूनपर बहुत थोड़ा वज़न रक्खा गया है, वह भी विशेष आवश्यकता पड़े बिना न फेंका जायगा।"

"यह तो बड़ा आश्चर्य्यजनक आविष्कार है।"

"इसमें आश्चर्य्यका कुछ कारण नहीं है। बेलूनमें जो

गैस रहता है, यदि हम उसेही इच्छानुसार संकुचित या विस्तृत कर सकें, तो फिर बेलूनको हलका या भारी करनेके लिए वज़न फेंकने या गैस छोड़नेकी आवश्यकता न रहे। जिस समय गैस संकुचित कर दिया जायगा, उस समय बेलून भारी हो उठेगा और शीघ्रताके साथ नीचे—ज़मीनकी ओर—आने लगेगा, और जब गैस विस्तृत कर दिया जायगा, तब बेलून हलका होकर ऊपर उठने लगेगा।"

"यही तो कहता हूँ—इसमें कुछ भी कठिनाई नहीं है?"

"आप देखेंगे, मेरे साथ पाँच लोहेके सन्दूक़ हैं, उनमें से एकमें जल भरा है। जलके भीतर वैद्युतिक प्रवाह चला देने से हाइड्रोजन और आक्सजन गैस उत्पन्न होगा। दोनों गैस बराबर-बराबर तैयार हों, इसके लिए जलके साथ कुछ सलफ्यूरिक एसिड मिला देंगे।"

"तत्पश्चात्?"

"पहले बक्समें गैस उत्पन्न होगा और जल द्वारा दूसरे दो बक्समें जाकर संगृहीत होगा। इन तीन बक्सोंके ऊपर एक और बक्स रहेगा, उस जगह गैस दो भिन्न-भिन्न नलों द्वारा जाकर मिल जायगा। आक्सजन और हैड्रोजनका मिलना और कुछ नहीं असंभवको संभव करना है।

इङ्गलैण्डमें शीतकालमें जिस उपायसे कमरे गरम किये जाते हैं; उसी उपायका हमने अवलम्बन किया है। मान लो, यदि हम बेलूनके गैसको १८० डिग्री उत्ताप दें तो

गैसका विस्तार $\frac{१८०}{४८०}$ गुणा हो जायगा। इतनी गरमी पाकर गैस खूब विस्तृत हो जायगा और वेलूनको फुला देगा। वेलून फूलकर १६७४० घनफुट वायुकी जगहको दबा लेगा। इसका परिणाम यह होगा कि, वेलून से २० मन वज़न फेंकनेमें वेलून जितनी शीघ्रतासे ऊपरको उठता उतनी शीघ्रतासे उठेगा। हमारे वेलूनमें जिस परिमाणमें गैस भर सकती है; मैं उससे आधी भरूँगा, इससे वेलून ऊपरको न उठकर हवामें बहने लगेगा। मैं जितनी गरमी दूँगा, गैस भी उतनाही विस्तृत होकरको वेलूनको ऊपर उठाने लगेगा। जब मैं उसे नीचे उतारना चाहूँगा, तब ताप कम करते ही गैस शीतल और संकुचित होने लगेगा और वेलून नीचे भूमिकी ओर आता हुआ दिखाई देगा।"

सातवां परिच्छेद ।

यात्रा ।
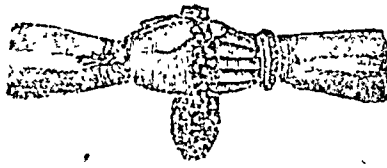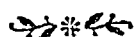
जलिउट जहाज़ ज़ंज़ीबार बन्दरपर आ पहुँचा। ज़ंज़ीबारका पूर्व्वीय प्रदेश हस्तिदन्त, मूँगा, मोती आदि चीज़ोंके व्यापारके लिये प्रसिद्ध है। अफ्रिका के अन्तर्जातीय समरके समय जो लोग बन्दी हुए थे, वे ज़ंज़ीबार प्रदेशमें दासरूपसे बेचे गये थे।

ज़ंज़ीरबारके अँगरेज़ी कन्सलने बेलून-यात्रियोंकी अभ्यर्थना करके उन्हें अपने घर निमंत्रित किया। जहाज़से उनका माल-असबाब उतारा जाने लगा। यहाँ घर-घर यह समाचार फैल गया कि, एक नवागत खृष्टान आकाशमें उड़ना चाहता है। यह विचित्र समाचार सुनतेही द्वीपवासी चञ्चल हो उठे। वे सोचने लगे—यह नवागत खृष्टान अवश्यही चन्द्र, सूर्य्य देवताओंका अनिष्ट करनेके लिए आकाश-भ्रमण करना चाहता है। उनके अन्धधर्म-विश्वासमें आघात पहुँचा। कारण कि, सूर्य और चन्द्र उनके उपास्यदेव हैं। काफिरोंने सलाह की—जिस तरह हो सके, हम लोगोंको उसके इस कार्य्यमें

बाधा डालना चाहिए और बलप्रयोगके द्वारा इस यात्राको रोक देना चाहिये। अँगरेज़ी कन्सल चिन्तित हो उठा।

जहाज़के अध्यक्षने कहा—"हम किसी प्रकार स्थान-त्याग न करेंगे। काफिरोंकी इतनी धृष्टता! देखा जायगा, यदि ज़रूरत पड़ेगी तो हमलोग उनसे युद्ध करेंगे।"

डाक्टर साइबने कहा—"युद्ध करनेसे हमारी जय होगी—इसमें कोई सन्देह नहीं है। किन्तु ऐसा करनेसे यदि हमारा बेलून अकस्मात् फट या टूटजाय तो सर्वनाश हो जायगा। इतनी दूरतक आकर भी हम अफ्रिका-भ्रमणसे विमुख रह जायँगे!"

कुछ देरतक वादानुवाद होनेके पश्चात् स्थिर हुआ कि, पूर्ववर्त्ती द्वीपपुञ्जमेंसे किसी एक द्वीपपर बेलून उतारना चाहिए। वहाँ पहरेका भी खूब प्रबन्ध रहना चाहिए। जहाज़के अध्यक्षने लंगर खींचकर कुम्बेनी द्वीपकी ओर जहाज़ चलाया। डाक्टर फर्गुसन सावधानीके साथ बेलूनको गैस-पूर्ण करने लगे।

काफिरगण दूरसे चीत्कार करने लगे—कोई विचित्र हावभाव दिखा रहा था और कोई-कोई मन्त्र पढ़कर वज्रका आवाहन कर रहे थे। काफिर जादूगरोंने भी अनेक उपायों और कला-कौशलोंसे काम लिया, परन्तु जब किसी प्रकार बेलूनका कुछ अनिष्ट नहीं हुआ और वह गैसपूर्ण होकर धीरे-धीरे ऊपर जाने और हिलने-डुलने लगा, तब तो वे और भी उत्तेजित हो उठे।

विदाका समय धीरे-धीरे निकट आता जाता था। सबके हृदयमें एक प्रकारकी वेदना का अनुभव होने लगा। सभी सोचने लगे—असभ्य बर्बरजातिपूर्ण अज्ञातदेशमें इन दुःसाहसिक यात्रियोंको न जाने कितने दुःख—कितनी आपदायें भोगनी पड़ेंगी। यदि वेलून न चला और दुर्भाग्यवश इन नरभक्षी काफिरोंके हाथ पड़ गया, तो इन बेचारोंकी न जाने क्या दुर्गति होगी। डाक्टर फर्गुसनके मुखपर चिन्ताका कोई भाव व्यक्त नहीं होता था। वे निश्चिन्त मनसे अनेक विस्मयजनक कहानियाँ सुनाकर सबको प्रसन्न करनेकी चेष्टा कर रहे थे। परन्तु उनका सारा उद्यम व्यर्थ गया—सन्ध्याकालीन विदा-भोजमें कोई आनन्दानुभव नहीं कर सका।

दूसरे दिन सवेरे जिस समय ये लोग जहाजसे उतरे, उस समय वेलून मन्द पवनसे हिलता-डुलता हुआ वायुमें उड़ रहा था। नाविकगण वेलून की रस्सी पकड़े हुए थे। यात्राका समय आगया। केनेडी झट उठकर फर्गुसनके पास गया और हाथ मिलाकर कहने लगा—

"प्रियबन्धु! क्या आप सचमुच ही जायँगे?"

"डिक्! क्या तुम्हें अबभी सन्देह है? मैं निश्चय जाऊँगा।"

"तुम्हारे रोकनेके लिये मैंने शक्ति भर चेष्टाकी।"

"आप रोकने की चेष्टा क्यों करते हैं?"

"तो भाई अब मुझे दोष मत देना। मेरा मन अब स्थिर होगया है। चलो, मैं भी अब आपहीके साथ चलता हूँ।"

फर्गुसनका मुँह उज्ज्वल हो उठा। वे प्रसन्न मनसे कहने लगे—"मैं पहलेही जानता था कि तुम चलोगे।"

विदाका अन्तिम मुहूर्त्त आगया। यात्री लोग जहाज़के अध्यक्ष और नाविकोंसे सप्रेम करमर्दन करके बेलून पर चढ़ गये। फर्गुसन अग्नि जलाकर गैसको उत्ताप देने लगे। बेलून धीरे-धीरे फूलने और ऊपरको उठने लगा। डाक्टर साहब अपने साथियोंके बीचमें खड़े थे, वे सिरसे टोपी उतारकर कहने लगे,—

"भाइयो! हम अपने इस व्योमयानको एक माङ्गलिक नामसे प्रसिद्ध करते हैं। आओ, हम इसका नामकरण करें। आजसे इस बेलूनका नाम 'विक्टोरिया' हुआ।"

एकत्रित जनमण्डली उल्लाससे जयध्वनि करने लगी। नाविकगण इस समय भी बेलूनकी रस्सी पकड़े हुए थे। परन्तु अब उसे अधिक समय तक पकड़े रहना उनकी शक्तिसे बाहर था। फर्गुसन, केनेडी और जो तीनोंने फिर ऊपरसे सबसे विदा माँगी। गैस धीरे-धीरे बेलूनमें फैल रहा था। फर्गुसनने चिल्लाकर कहा,—

"छोड़ो—छोड़ो—बेलूनकी रस्सी छोड़ दो—सावधान!"

नाविकोंने रस्सी छोड़ दी। क्षण भरके भीतर विक्टोरिया शून्यमार्गमें चला गया। रेजलिउट जहाज़से उसी समय चार बार तोपका शब्द हुआ।

बेलून क्रम-क्रमसे ऊपरकी ओर उठने लगा। ऊपर हवा

शीतल और आकाश निर्मल था। बेलून १५०० फ़ुट ऊँचे जाकर दक्षिण-पश्चिमकी ओर दौड़ने लगा। उस समय पैरोंके नीचे ज़ंज़ीबार द्वीप एक कृष्णवर्ण प्रान्तरकी नाईं दिखाई देता था। कहीं-कहीं जाते हुए शस्यहीन खेत, और कहीं-कहीं शस्यसम्पन्न विस्तृत भूमि उस कृष्णवर्ण प्रान्तरमें वर्णवैचित्र्यकी सृष्टि कर रही थी। ज़ंज़ीरबारके निवासी छोटी-छोटी चींटियोंके समान दिखाई देते थे। रेजलिउट जहाज़से तोपकी आवाज़ बहुत धीमे स्वरसे कानों तक आरही थी। जोने पुलकित होकर कहा,—

"आहा! कैसा सुन्दर दृश्य है!!"

विक्टोरिया २५०० फुट ऊँचे चढ़ गया। उस समय रेजलिउट जहाज़ धीमरोंकी एक छोटीसी डोंगीके समान दिखाई देता था। अफ्रिकाका पश्चिमी समुद्र-तट केवल एक स्वच्छ फेन-राशिके समान प्रतीत होता था। विक्टोरिया उस समय प्रति घण्टा ८ मीलके हिसाबसे समुद्र लाँघ रहा था। वह दो घंटेमें अफ्रिकाके समीप पहुँचा। फर्गुसनने गैसके उत्तापको कम कर दिया। देखते-देखते विक्टोरिया बहुत नीचे उतर आया। इस समय अफ्रिकाकी सघनवन-श्रेणी खूब स्पष्ट रीतिसे दृष्टिगोचर होती थी। धीरे धीरे बेलून फागुलि नामक ग्रामके ऊपर आया। ग्रामवासियोंने देखा कि, एक अद्भुत पदार्थ राक्षसके समान आकाशमार्गमें विचरण कर रहा है। वे पहले भयसे और पीछे क्रोधसे

चीत्कार कर उठे। उनके सुदृढ़ और मज़बूत हाथोंसे बारम्बार विषबाण निकलकर शीघ्रही आकाशकी ओर आने लगे। उस समय विक्टोरिया आकाशमें इतने ऊपर उड़ रहा था कि, उनके बाण वहाँ तक किसी प्रकार नहीं पहुँच सकते थे। डाक्टर साहब निर्भय चित्तसे अपने पूर्ववर्त्ती पर्य्यटक बार्टन और स्पिक्के मार्गका अनुसरण करके बेलून उड़ा रहे थे।

केनेडीने पुलकित होकर कहा—"आहा, कैसा सुन्दर रथ है! इसके आगे घोड़ागाड़ी कोई चीज़ नहीं है।"

जौने कहा—"घोड़ागाड़ी तो ठीक ही है, स्टीमरमें भी इतना आनन्द नहीं आता।"

डाक्टर साहबने कहा—"मैं तो रेलकी अपेक्षा बेलूनमें जाना अधिक पसन्द करता हूँ। रेल हू-हू करके चलती है—जिस देशमें होकर जाती है, उस देशका कोई दृश्य दिखाई नहीं देता है।"

जौने थोड़े ही समयमें कुछ भोजन तैयार कर लिया। तीनों यात्री उस महाशून्यमें आनन्दसे साथ भोजन करने लगे। उस समय बेलून उर्वरा भूमि परसे जारहा था। नीचे दुबले पतले और दीर्घ पथ टेढ़े-मेढ़े होकर फैले हुए दिखाई देते थे। पासही हरे-भरे धान्यके खेत फल-फूलों और पत्तोंसे सुशोभित होरहे थे। शस्यक्षेत्र चारों ओर समुद्रके समान फैले हुए थे। मन्द वायु शस्यशीर्षोंको हिलाडुलाकर खेतोंको

तरङ्गायित कर रहा था। वे लोग जब जिस गाँव परसे जाते थे, तब ग्रामनिवासी उन्हें दैत्य समझकर उनपर आक्रमण करते थे। उनके चीत्कारसे अन्तरीक्ष काँप उठता था। ऐसे अवसर पर फर्गुसन वेलूनको ऊपर ले जाकर उसकी रक्षा करते थे। शत्रुके बाण वेलूनका स्पर्श नहीं कर सकते थे।

दोपहर होगये। सूर्य्यका तेज असह्य होउठा। निर्मल नील आकाशके नीचे विक्टोरिया निर्भय चला जारहा था। इस समय वह आउजराओ प्रदेश पार कर रहा था।

डाक्टरने कहा—"देखो, देशकी मूर्त्ति कैसी बदलती जातीहै। यहाँ अब उतने सघन गाँव नहीं दिखाई देते हैं—आमोंके बगीचे भी उतने नहीं हैं। मालूम होता है कि, अब अफ्रिकाके जङ्गली प्रदेशका यहाँसे अन्त हो चुका। भूपृष्ट क्रमशः कंकर-पत्थर-बहुल होता जाता है। जान पड़ता है कि, पास ही कहीं शैलमाला होगी।"

केनेडीने चारों ओर देखकर कहा—"मैं समझता हूँ कि, पश्चिम दिशाकी ओर जो वह मेघमाला दिखाई देती है, वह बहुत करके कोई ऊँची पर्वत-श्रेणी ही होगी।"

फर्गुसन दूरबीन लेकर देखने लगे। देखकर कहा—"तुम ठीक कहते हो डिक! वह आउरिजारा शैलमाला है।

सामने जो पर्वत दिखाई देता है, उसका नाम डुथुमि है। आज रात्रिको हम डुथुमिके उस पार जाकर विश्राम करेंगे। ५००।६०० फुट ऊपर चढ़े बिना, हम उक्त पर्वत-शृङ्गको नहीं लाँघ सकते हैं।

वेलून उड़ रहा था। जो चिल्लाकर कहने लगा—"देखो, यह कितना बड़ा वृक्ष है! ऐसे १०।१२ वृक्ष एक जगह लगा दिये जायँ, तो एक बड़ा जङ्गल बन जाय।" फर्गुसनने कहा—"इस वृक्षका नाम बाउवाव् है। देखो उसकी एक-एक शाखा कितनी लम्बी है, लगभग १०० फुटसे कम न होगी। कौन कह सकता है, सन् १८४५ ई० में शायद इसी वृक्षके नीचे फरासीसी पर्य्यटक मेइजानकी मृत्यु हुई हो। देखो, यहाँसे कुछ दूरी पर एक ग्राम दिखाई देता है,—इसका नाम जिलामोरा है। मेइजानने इसी ग्राममें अकेले जानेकी चेष्टा की थी। ग्रामके सर्दारने उसे कैद करके एक बाउवाव् वृक्षकी जड़से बाँधकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले थे! उ: कैसी नृशंस नरहत्या है! अभागा मेइजान २६ वर्ष की अवस्थामें ऐसी निष्ठुरताके साथ मारा गया था।"

फर्गुसन्ने गैसके उत्तापको बढ़ाया। वेलून प्राय: ८ हज़ार फुट की ऊँचाई पर जा पहुँचा। इस समय वेलून डुथुमि पहाड़की चोटी परसे जारहा था। कुछ ही समयके उपरान्त वेलून पर्वतशृङ्गको लाँघ गया। वेलून फिर नीचे

उतर आया। फर्गुसनने लङ्गर छोड़ दिया। थोड़ेही समयके भीतर वह एक विशाल वृक्षकी शाखासे आबद्ध होगया। जौ उसी लङ्गरकी रस्सीके सहारे वृक्ष पर उतरा और उसने वृक्षकी शाखासे लङ्गरको मज़बूती के साथ बाँध दिया।

इस समय सन्ध्या हो चुकी थी। रात्रिको नियमित रूपसे पहरा देनेका प्रबन्ध करके, तीनों यात्री भोजन करनेके लिये बैठ गये।

आठवाँ-परिच्छेद।

काफिरोंका आक्रमण।

रात्रि निर्विघ्न व्यतीत होगई। किन्तु सवेरे केने-डीकी तबियत बहुत बिगड़ गई। उसे भया-नक ज्वर हो आया। देखते-देखते आकाश सघन मेघोंसे आच्छादित होगया। ऐसा मालूम होने लगा, मानो प्रलयके मेघ उमड़ आये हों। उस समय विक्टोरिया जङ्गे-मेरो प्रदेशके ऊपरसे जा रहा था। जनवरी महीनेके एक पक्षको छोड़कर प्रायः सदैव ही यहाँ वर्षा हुआ करती है। सहसा सबको गंधकके गैसके समान बास आने लगी। फर्गु-सनने कहा,—

"वार्टनने ठीक ही लिखा है कि, यह प्रदेश मनुष्य-स्वास्थ्य के लिए बड़ाही घातक है—यहाँकी हवा बहुत विषाक्त है। डिक्! तुम डरो मत, कोई चिन्ताकी बात नहीं है। हमलोग अभी ऊपर चलते हैं, विषाक्त हवासे बाहर जाते ही तुम्हारी तबियत पूर्ववत् फिर स्वस्थ हो जायगी।"

विक्टोरिया-धीरे धीरे ऊपरको चढ़ने लगा। कुछही समयके उपरान्त वह मेघलोकको लाँघकर ऊपर पहुँच गया। दूरवर्त्ती रुवेंझो पर्वतकी असंख्य शिखरें सूर्य्य-किरणोंसे चमक रही थीं। विक्टोरिया चल रहा था। तीन घण्टेके उपरान्त केनेडी फिर पूर्ववत् स्वस्थ होगया। वह कहने लगा,—"डाक्टर साहब, आपकी यह औषधि तो कुनैनसे भी अधिक गुणकारी प्रतीत होती है।"

दश बजेसे क्रमशः मेघ छँटने लगे। थोड़ेही समयके भीतर आकाश स्वच्छ होगया। बेलून-यात्रियोंको फिर पृथ्वी-तल दिखाई देने लगा। पैरोंके नीचे सैकड़ों गिरि-शिखर सूर्य्यालोकसे चमक रहे थे। फर्गुसन बहुत सावधानीके साथ विक्टोरियाको चलाने लगे।

फर्गुसनने कहा—"यदि हमलोग जङ्गेसेरी प्रदेशकी कर्द-मास—गीली भूमि परसे पैदल आते, तो इस समय हमारे कष्टोंकी सीमा न रहती। हमारे सवारीके जानवर अभीतक आधेसे अधिक मर चुके होते और हम भी जीवन्मृत अवस्था को पहुँच जाते। नैराश्य, थकावट, भूख, प्यास और ज्वर इस समय हमारे हृदयको भग्न कर डालते और पथप्रदर्शक मौका पाते ही हमको लूट लेते—उनकी निष्ठुरता अवर्णनीय है। दिनको सूर्य्यकी असह्य ज्वाला और रात्रिको भयंकर शीत हमारे अञ्जर-पञ्जर ढीले कर देती। इस प्रदेशमें एक बड़ी जातिके मकड़े होते हैं। तुम कितनेही मोटे कपड़े

पहनो, वे उन्हें छेदकर तुम्हें काटे बिना न रहेंगे। फिर उनकी दंशन-यन्त्रणा इतनी भयङ्कर है कि, मज़बूतसे मज़बूत आदमी कुछ समयके लिए सुधि-बुधि खो बैठता है। इनसे बचो तो हिंस्रपशु और असभ्य मनुष्योंसे निस्तार नहीं है। इस प्रदेशमें जिन लोगोंने यात्रा की है, उनकी भ्रमण-कहानी पढ़नेसे आँखोंमें आँसू भर आते हैं।"

सामने समीप होमें एक बहुत ऊँची रुवेंहो शैलमाला दिखाई देती थी। अफ्रिकाकी भाषामें इसका अर्थ 'हवाकी गति' होता है। यह पर्वतमाला इतनी ऊँची है कि, वायु-प्रवाह इससे टकराकर अन्य ओरको हो जाता है। फर्गुसनने कहा—"सावधान! हमलोग रुवेंहो पर्वतके बहुत पास आ गये हैं। पर्वतशिखर लाँघनेके लिए हमको बहुत ऊपर चढ़ना पड़ेगा। वेलूनका गैस उत्तप्त होकर फैलने लगा। वेलून भी क्रम-क्रमसे ऊपरको उठने लगा। कनेडीने पूछा,—

"क्या इतनी ऊँचाई पर हम अधिक समय तक रह सकते हैं?"

"वेलून बड़ा हो, तो इससे भी ऊँचे जा सकते हैं। पर अधिक ऊपर जानेसे स्वास लेनेमें तकलीफ मालूम होने लगती है। क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि, ब्रियोस और गेफूस नामक यात्री आकाशमें इतने ऊपर तक गये थे कि, उनके नाक और कानमेंसे रक्त बहने लगा था। इस समय हमलोग प्रायः ६००० फुटकी ऊँचाईपर हैं, देखो न भूपृष्ठकी कोई भी वस्तु स्पष्ट दिखाई नहीं देती।"

वायु-प्रवाह प्रबल वेगसे बह रहा था। विक्टोरिया अल्प-कालहीमें तुषार-मण्डित ग्रैलशृङ्गको लाँघ गया। फार्गुसनने पर्वतका चित्र अङ्कित कर लिया। इवेहो पर्वतके पश्चात् जो भूभाग मिला, वह सघन वनसे आच्छादित और वृक्षलताओंसे परिपूर्ण था। इसके बाद कुछ मरुभूमि मिली। विस्तृत मरुभूमिके बीच कहीं-कहीं अनेक छोटी-मोटी पहाड़ी नदियाँ नाचती-खेलती हुई बह रही थीं। विक्टोरिया क्रमशः नीचे उतरने लगा। थोड़ी ही देरके उपरान्त उसका लङ्गर एक विशाल वृक्षकी शाखासे आबद्ध होगया। जो रस्सीके सहारे वृक्षपर उतरा और उसने लङ्गरको वृक्षकी एक शाखासे खूब मज़बूतीके साथ बाँध दिया।

फार्गुसनने कहा—"तुम दोनों बन्दूक़ लेकर नीचे उतरो। शायद कुछ मिल जाय।"

हम पहले ही कह चुके हैं कि, केनेडी शिकारसे बहुत प्रेम रखता था। मित्रकी आज्ञा पातेही वह बन्दूक़ लेकर झट नीचे उतर पड़ा। जो भी साथ था। जाते समय फार्गुसनने मित्रको सावधान कर दिया। उन्होंने कहा,—"अधिक विलम्ब मत करना। मैं ऊपर रहकर चारों ओर दूर-दूर तक देखता रहूँगा। यदि किसी विपद्‌की संभावना होगी, तो मैं शीघ्र बन्दूक़की आवाज़ करूँगा। बन्दूक़की आवाज़ सुनते ही तुम सावधान होजाना।"

केनेडी जोको साथ लेकर शिकारकी तलाशमें जङ्गलमें

घुस गया। वह कहने लगा—"देखो, इस जगह पहले कोई यात्री-दल आया होगा, ये मृत मनुष्योंके कङ्काल और पशु-ओंकी हड्डियाँ इस बातका अभीतक प्रमाण दे रही हैं।" दोनों आदमी सघन वनमें और भी चले गये। थोड़े ही समयके पश्चात् केनेड़ीकी अचूक गोलीने एक मृगको गिरा दिया। जो मृग-माँस भूनते-भूनते कहने लगा—

"मेरा जी बहुत घबराता है।"

"क्यों?"

"मुझे भय है कि, हमलोगोंके वापिस जानेपर यदि वेलून न मिला?"

"क्या पागल तो नहीं होगये? तुम क्या समझते हो कि, फर्गुसन हमको छोड़कर चले जायँगे?" "छोड़कर तो नहीं चले जायँगे; पर किसी कारणसे लङ्गर खुल जाय तो?"

"यह सम्भव नहीं है। लङ्गर तुमने खूब मज़बूतीके साथ बांधा है। और मान लो, यदि ऐसा भी हो तो फर्गुसन इच्छा करते ही क्या उसे फिर नीचे नहीं ला सकेंगे?"

"इसमें सन्देह नहीं कि, वे इच्छा करते ही वेलूनको नीचे ला सकते हैं, किन्तु यदि प्रबल वायुवेग वेलूनको कहींका कहीं उड़ा ले जाय, तो फिर वेलूनको इस जगह लौटा लाना भी क्या उनकी इच्छाके अधीन है?"

"इस समय इन अशुभ भावनाओंके करनेकी क्या आवश्यकता है—?"

जोने बाधा देकर कहा—"हमें सभी विपत्तियोंके लिए प्रस्तुत रहना चाहिए।"

केनेडीने चौंककर कहा—"अरे! क्या बन्दूकका शब्द हुआ?"

"हाँ, बन्दूकहीका शब्द तो है। मालूम होता है, कोई विपद् आगई!"

जो अधिक विलम्ब सहन नहीं कर सका। माँसके टुकड़ोंको बीनकर झट विक्टोरियाकी ओर दौड़ा। केनेडी भी दौड़ने लगा। वनकी सघनताके कारण बेलून दिखाई नहीं देता था। फिर बन्दूकका शब्द हुआ। दोनों और जलदी—जी छोड़कर दौड़ने लगे। जङ्गलसे बाहर आकर देखा—बेलून स्थानभ्रष्ट नहीं हुआ है, केनेडी विस्मित होकर कहने लगा—

"बेलून तो ठीक दशामें है, पर मामला क्या है, समझमें नहीं आता!" यहाँ-वहाँ देखकर जो चिल्ला उठा—"सर्वनाश!" "सर्वनाश!!"

"क्या है, क्या है, कुछ भी तो कहो?"

"वे देखो, काफिर लोग बेलूनपर आक्रमण कर रहे हैं!"

विक्टोरिया इस समय भी कुछ दूर था। प्रायः ३० आदमी उसके नीचे नाच-कूद और चीत्कार कर रहे थे। कोई-कोई वृक्षपर चढ़कर सबसे ऊँची शाखापर पहुँच गये थे। इसी समय फिर बन्दूकका शब्द हुआ। उन्होंने देखा कि, एक

आक्रमणकारी जो बेलूनकी रस्सी पकड़कर ऊपर चढ़ रहा था, बन्दूककी गोलीसे आहत होकर नीचेकी ओर गिरा और धरतीसे १०-१२ हाथ ऊँची एक वृक्ष-शाखा पर रह गया।

जो कहने लगा—"कैसा आश्चर्य है! काफिर नीचे क्यों नहीं गिरा? क्या गोली नहीं लगी?"

थोड़ेही समयके पश्चात् वह हँसकर फिर कहने लगा—"देखो, वह कैसा वृक्षकी डाली को पकड़े हुए है। मैं समझा था कि ये काफिर हैं—किन्तु अब समझा,—ये काफिर नहीं—एक जातिके बन्दर हैं।"

केनेडीने आश्वस्त होकर कहा—"चलो, बच गये, काफिर न होनाही अच्छा है।"

दस पाँच बार पिस्तौलकी आवाज़ करते ही बन्दरोंका दल डरकर भाग गया। जो और केनेडी बेलून पर चढ़ने लगे। जो कहने लगा,—"कैसा भयानक आक्रमण था!"

"डाक्टर साहब! मैंने यही समझा था कि काफिरोंने ही आक्रमण किया है।"

"हमारा सौभाग्य है कि, वे सब काफिर न होकर बन्दर निकले। देखनेमें इन बन्दरों और काफिरोंमें अधिक अन्तर नहीं है। यदि ये लोग किसी प्रकार लङ्गर खोल देते, तो हम सब बड़ी विपद्में पड़ जाते।"

जोने गम्भीरतापूर्वक कहा—"क्यों मिस्टर केनेडी, मांस-भूनते समय मैंने भी यही कहा था न?"

बैलून निर्विघ्न चलने लगा। वह सन्ध्या होनेके प्रथम ही मावुंगुरु नामक पार्वत्य-प्रदेशको पार करके जिहोवासोरा पर्वतश्रेणीके पश्चिम तीर पर जा ठहरा। रात्रिको कोई विशेष घटना नहीं हुई। सवेरे मानचित्र देखकर फार्गुसनने कहा,—

"डिक्, यहाँसे काजे नगर प्रायः १०० मील होगा। यदि वायुप्रवाह अनुकूल रहा, तो हमलोग आजही वहाँ पहुँच जायँगे।"
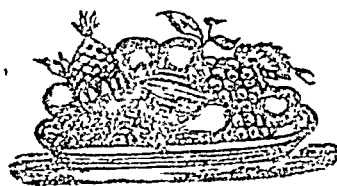
नवाँ परिच्छेद ।
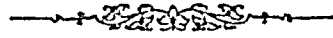
काजे नगर ।

मध्य अफ्रिका में काजे एक प्रसिद्ध नगर है। नगर कहनेसे हम जो कुछ समझते हैं, काजे उस प्रकार का नहीं था। छै प्रकाण्ड वन-कुञ्जोंमें कुछ घरोंको लेकर ही उक्त नगर बसा था। बड़े-बड़े घरोंके पास दासों की छोटी-छोटी झोपड़ियाँ मकानोंके सामने बड़े-बड़े प्राङ्गण, खुले उद्यान और उद्यानोंके अन्तर्गत पलाण्डू, आलू, कूषाण्ड आदिके खेत काजे नगरको सदैव सुशोभित किये रहते थे।

काजे ही उस समय अफ्रिका-प्रवासी वणिकोंका एक प्रधान मिलनकेन्द्र था। दक्षिणसे दास और हस्तिदन्त लेकर वणिकगण वहाँ आते थे। पश्चिमके वणिक भी टीन और काँचकी बनी हुई नाना प्रकार की वस्तुयें लेकर आया करते थे। इस कारण काजे की व्यापार-भूमि सदैव कोलाहलपूर्ण रहती और झिंगा, दमामा प्रभृति बाजोंकी ध्वनिसे मुखरित

हुआ करती थी। सहस्रों वणिक खच्चर और गधोंकी पीठ पर माल लादे हुए बाज़ारको आते-जाते हुए दिखाई देते थे। कोई दास खरीदने में लगे हुए और कोई-कोई काँच और टीनके बदले हाथी-दाँत खरीदते हुए दिखाई देते थे।

धनवान वणिक पुत्र-कलत्र और दासोंको लेकर वहाँ सुख-स्वच्छन्दताके साथ निवास करते थे। ये लोग अफ्रिकाके भीतर वाणिज्य करके अपनी आजीविका चलाते थे—इनमें से कोई-कोई माल लेकर अरब तक जाते थे।

अकस्मात् वह कोलाहलमय चञ्चल बाज़ार नीरव हो गया। क्रेता, विक्रेता सभी अपने-अपने प्राण लेकर भागे। कोई-कोई समीपवर्त्ती घरोंमें जा छिपे। जो लोग खच्चरों या गधों पर माल लादे जा रहे थे, वे उसे वैसाही छोड़ कर भाग गये। सब लोग विस्मित होकर देखने लगे कि, स्वर्गसे एक विराट् वस्तु धीरे-धीरे नीचेको आ रही है।

थोड़ेही समयके उपरान्त विक्टोरिया नीचे आगया। एक बड़े वृक्षकी शाखासे उसका लङ्गर खूब मज़बूतीके साथ बाँधा गया। नागरिक लोग शंकितमनसे एक-एक दोदो आदमी मिल कर धीरे-धीरे उसके समीप जाने लगे। कोई जादूका मन्त्र पढ़ने लगे, कोई-कोई हथियार सम्हालने लगे और कोई-कोई अपने माल की रक्षा करने लगे। स्त्री, बालक, बूढ़े सभी विस्मित होकर बेलून और बेलून-यात्रियों की ओर देख

रहे थे। इसासे बड़ी तीव्र ध्वनिसे बज रहे थे। अन्तमें नागरिकागण अपने हाथ ऊपर उठाकर नवागत यात्रियोंके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने लगे।

फर्गुसनने कहा—"देखो, ये लोग हमारी पूजा कर रहे हैं। इनकी पूजन-पद्धति इसी प्रकार की है।"

एक जादूगरके आदेशानुसार वाद्य-ध्वनि बन्द होगई। कोलाहल शान्त होते ही उसने इन यात्रियोंसे कुछ कहना प्रारम्भ किया, किन्तु उनकी बातोंको कोई समझ नहीं सका। फर्गुसनने दो चार अरबी शब्दोंका उच्चारण किया। इनके मुँहसे अरबी शब्दोंको सुनकर उस जादूगरने अरबी भाषा में एक छोटीसी वक्तृता दी। फर्गुसन अपने साथियों से कहने लगा,—

"ये लोग बेलूनको चन्द्र और हम तीनों आदमियोंको चन्द्र-पुत्र समझ रहे हैं। इस देशमें सूर्य्यकी पूजा की जाती है। यह जानकर कि, चन्द्रदेव अनुग्रह करके सूर्य्यदेशमें पधारे हैं, ये लोग अपनेको कृतार्थ समझ रहे हैं।"

फर्गुसनने यह समझ कर कि चुप रहना उचित नहीं है, अरबी भाषामें कहा—"चन्द्र हज़ार वर्षमें एक बार अपने भक्तोंको देखनेके लिए तुम्हारे देशमें आते हैं। तुम्हें कोई वरदान माँगना हो तो माँगो।"

जादूगरने कहा—"हमारे सुलतान बहुत दिनसे बीमार हैं, आप उनकी रक्षा कीजिए।" फर्गुसनने कहा—"तथास्तु!"

केनेडी विस्मित होकर कहने लगा—"क्या तुम सुलतानको देखने जाओगे ?"

"हाँ जाऊँगा, ये लोग अच्छे मालूम पड़ते हैं। किसी विपद्‌की आशंका नहीं है।"

"कौन जाने भाई,—मेरी बुद्धि कुछ काम नहीं देती।"

"डिक्, कुछ भय नहीं है। बार्टन और स्पिक् इस जगह आये थे। उन्होंने लिखा है—ये लोग अतिथि-सेवा करने में बहुत निपुण हैं।"

"तुम जाकर क्या करोगे ?"

"यह औषधि लिए जाता हूँ" यह कहकर फर्गुसनने उस चञ्चल जन-समुदायकी ओर देखकर कहा,—

"सुलतानके ऊपर चन्द्रकी कृपा हुई है! चलो, रास्ता दिखाओ।" शीघ्रही सर्वत्र महान् आनन्दके चिह्न दिखाई देने लगे। गीत, वाद्य, और हर्ष कोलाहलसे वह नीरव स्थल फिर गूँज उठा। नागरिक लोग पिपीलिका-श्रेणीके समान आगे चलने लगे। जाते समय फर्गुसनने मित्रसे कहा—"देखो भाई, बहुत सम्भव है कि शीघ्र ही हम पर कोई भारी विपद् आजाय। इच्छा करते ही जिससे हमलोग पल भरके भीतर यहाँ से जा सकें, इसके लिए तुम प्रस्तुत रहना। गेस को धीरे-धीरे उत्ताप देते रहना। ऐसा करनेसे बेलून छोड़ते ही क्षणभरमें सुदूर आकाशमें पहुँच जावेगा। लङ्गर दृढ़ बँधा हुआ है, इससे उत्ताप देने पर भी कोई भय नहीं है।

जी, तुम नीचे उतरो और इस वृक्षके नीचे रहकर लङ्गरकी रक्षा करना। कोई शैतान लङ्गरकी रस्सी को काट न दे।"

केनेडीने कहा—"क्या उस बुढ़े काफिरको देखनेके लिए अकेले ही जाओगे?"

जौने कातरस्वरसे कहा—"क्या मुझे साथ ले चलेंगे?"

"नहीं, मैं अकेलाही जाऊँगा। तुम लोग मेरे लिए कुछ चिन्ता मत करो। पर मैंने जो कुछ कहा है, उस पर विशेष ध्यान रखना—बिल्कुल तैयार रहना।"

काफिरोंका चीत्कार क्रमशः बढ़ने लगा। वे क्रमशः अधीर होने लगे। फर्गुसन भी अधिक विलम्ब न करके, और औषधियोंका बक्स साथ लेकर बेलूनसे नीचे उतर पड़े। राजकुटीर नगरसे कुछ दूरी पर था। जुलूस चलने लगा। उस समय ३ बजे थे। थोड़ीही दूर चले थे कि, सुलतानके पुत्रने आकर चन्द्रदेवको साष्टाङ्ग प्रणाम किया। चन्द्रने आशीर्व्वाद देकर राजपुत्र को ज़मीनसे उठने का आदेश दिया।

जुलूस छायापथ से घूमते घूमते-अन्तमें राजकुटीरके समीप जा पहुँचा। राजकुटीर एक छोटी सुन्दर पहाड़ीके समीप बना हुआ था। घर की दीवारें लाल मिट्टीसे बनी हुई सर्प और मनुष्यकी मूर्त्तियोंसे सुशोभित थीं। घर का छप्पर दीवारों पर नहीं रक्खा था, इससे ऊपर से हवा आ रही थी। आजू-बाजू से हवा आनेके लिए और कोई मार्ग नहीं था।

पहरेवालों, राजकर्मचारियों, राजमन्त्रियों; और राज-

परिवारके लोगों तथा एकत्रित जनताने फर्गुसनकी बड़ी नम्रताके साथ अभ्यर्थना की। फर्गुसनने देखा कि, उनके सुन्दर केश वेणीके समान पीठपर पतित होकर मन्द पवन के झकोरोंसे हिलडुल रहे हैं। गलेमें कई किस्मके ज़ेवर पहने हुए हैं। उनके कान बहुत बड़े हैं। कानोंके छिद्रोंमें लकड़ीके गुरिया झूल रहे हैं। सब लोग उज्ज्वल वस्त्र धारण किये हुए हैं। सैनिकगण तीच्ण विष-बाण और नङ्गी तल-वार लिये हुए अभिमानपूर्वक खड़े हैं। फर्गुसनने घरके भीतर प्रवेश किया।

राजगृहमें भीतर प्रवेश करते ही सब लोग जयध्वनि करने लगे। राजपरिवारकी स्त्रियोंने उनका अभिवादन किया। 'उपातू' नामक एक पीतलका बाजा शीघ्रही झन-झन करके बज उठा। जयडङ्केके गम्भीर निनादसे दिग्-मण्डल व्याप्त हो गया। स्त्रियाँ देखने में स्वरूपवान् थीं। वे बड़े-बड़े नलों द्वारा धूम्रपान कर रही थीं। छै रम-णियाँ अन्यान्य रमणियोंसे कुछ दूरी पर अलग बैठी थीं। सुलतानकी मृत्युके पश्चात् उसके शवके साथ उनके जीवित अवस्थामें समाधि लेनेकी प्रथा थी। यह कार्य्य परलोकगत सुलतान को तृप्ति मिलने की कामना से किया जाता था।

फर्गुसन सुलतानके पास पहुँचा। देखा, एक ४० वर्षका अति रुग्ण पुरुष एक साधारण लकड़ीके पलङ्ग पर लेटा हुआ है। फर्गुसन देखते ही समझ गया कि, चिरकालके व्यसन

और अपरिमित सुरापानसे उसकी जीवनी शक्ति अत्यन्त क्षीण पड़ गई है। उसकी शक्तिहीन दुर्बल देहमें नव बल का संचार करना मनुष्य-शक्तिसे बाहर की बात है। सुलतान की मृत्यु होनेमें अधिक विलम्ब नहीं था। फर्गुसनने एक तीव्र औषधि दी। उसके प्रभावसे सुलतानकी गई हुई चेतना-शक्ति कुछ कालके लिए फिर लौट आई। रोगीको हाथ पैर हिलाते देखकर राजपरिवारके आनन्द की सीमा नहीं रही। अब फर्गुसनने अधिक विलम्ब करना उचित नहीं समझा। वे शीघ्रही लौट पड़े।

जिस पेड़से वेलून बँधा था, जो उसके नीचे बैठा-बैठा काफिरोंकी पूजा ग्रहण कर रहा था। युवतियाँ उसे घेरकर नृत्य करने लगीं। किसी-किसीने गाना भी प्रारम्भ किया। स्वर्ग का नृत्य नरलोक-वासियोंको दिखाने की इच्छासे जो भी उनके साथ-साथ नाचने लगा। उसके हस्त-सञ्चालन, चरण-निक्षेप, मुखविन्यास और मनोहर हाव-भावोंको देखकर काफिरगण मन-ही-मन कहने लगे—आहा! स्वर्गका नृत्य कैसा सुन्दर है! वे भी जोका अनुकरण करके नाचने लगे।

अकस्मात चारों ओरसे भीषण कोलाहल सुनाई दिया। जोने देखा, नागरिक और जादूगर लोग उत्तेजित होकर और उच्चस्वर से चीत्कार करते हुए वेलून की ओर दौड़ते हुए आ रहे हैं। फर्गुसन सबके आगे-आगे बड़ी तेजीसे दौड़ते हुए आ रहे थे। जो चकित होकर रह गया।

फर्गुसन और जो बेलून पर चढ़ने लगे। कुसंस्कार-संजात भयने उन उत्तेजित नागरिकोंको बेलूनके पास नहीं आने दिया। केनेडी व्यग्र होकर कहने लगा,—

"फर्गुसन, मामला क्या है ? क्या सुलतान मर गया ?"

"मरा नहीं है। डिक, अब चणभरका अवकाश नहीं है—लङ्गर खोलनेको भी समय नहीं। चलो, लङ्गर काट दो।"

"क्यों ? क्या हुआ ?"

केनेडीने अपनी बन्दूक़ उठा ली।

फर्गुसन कहने लगा—"ठहरो—ठहरो, बन्दूक़ रहने दो।" इसके पश्चात् उन्होंने आकाशकी ओर उँगली दिखाकर कहा—"ये देखो।"

"क्या देखूँ ?"

"आकाशमें चन्द्रमा नहीं दिखाई देता ?"

उस समय चन्द्रदेव निर्मल नील आकाशको आलोकित करके धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहे थे।

काफिरोंने फिर भयङ्कर गर्जना की। वे कहने लगे—हम ठगे गये हैं। आकाशमें कभी दो चन्द्र नहीं हो सकते। इन भगोड़े ठगोंको दण्ड देनेके लिए वे अधीर हो उठे। किसीने धनुष चढ़ाया और किसीने बन्दूक़ उठाई! इतनेमें एक जादूगरने इन सबको रोक दिया और वह स्वतन्त्र बेलूनका लङ्गर पकड़नेके लिए वृक्षपर चढ़ने लगा।

जोने रस्सी काटनेके लिए हथियार उठाया।

फर्गुसनने कहा—"ठहरो।"

"काफ़िर चढ़ रहा है।"

"चढ़ने दो। देखो, लङ्गर बचा सकते हैं या नहीं। यदि लङ्गर काटना ही आवश्यक प्रतीत होगा, तो उसके लिए अधिक समय न लगेगा। सावधान! गैस ठीक है?"

"ठीक है।"

जादूगरको लङ्गर के पास पहुँचा देखकर, काफ़िरगण उल्लाससे जयध्वनि करने लगे।

वह उत्साहित होकर लङ्गर खोलने लगा। बन्धन छुटते ही विक्टोरिया पहले एकबार काँपा और फिर उसी क्षण काफिरको लेकर शून्य आकाशमें उड़ गया। जो लोग क्रोधसे गर्ज रहे थे, वे किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर रह गये।

केनेडीने कहा—"वह काफिर तो लङ्गरको पकड़े हुए झूम रहा है।"

जोने कहा—"क्या उसे अब छोड़ देना चाहिये। रस्सी काट दूँ?"

फर्गुसनने बाधा देकर कहा—"नहीं, नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं है। कुछ दूर और चलकर उसे नीचे उतार देंगे।"

देखते-देखते विक्टोरिया काजे नगर लाँघ गया। काफिर अब भी लङ्गरको पकड़े हुए झूल रहा था। जब फर्गुसनने

देखा कि अब पाससें कोई गाँव या मनुष्योंका निवास नहीं है, तब उन्होंने बेलूनको नीचे उतारना प्रारंभ किया। ज्योंही धरती १०—१५ हाथ रहगई, त्योंही काफिर लङ्गर छोड़कर झट कूद पड़ा और धरती पर पैर लगते ही सरपट होकर भागा।

दसवाँ परिच्छेद ।

अग्नि में ।

आकाश क्रमशः मेघाच्छन्न होने लगा। वायु-प्रवाह भी प्रबलसे प्रबलतर होता जाता था। इसी प्रबल वायु-वेगसे ताड़ित होकर विक्टोरिया प्रति घण्टे २५ मीलके वेगसे चल रहा था। फर्गुसनने कहा,—

"इस समय हम चन्द्रराज्यमें हैं। इस देशमें चन्द्रमाकी पूजा की जाती है, इसलिए इस प्रदेशका नाम भी चन्द्रराज्य पड़ गया है, पृथ्वीपर ऐसी उर्व्वरा भूमि बहुत कम है।"

"जो दुःख प्रकाश करके कहने लगा—"भगवान्‌की कैसी समझ है! ऐसे असभ्य देशमें ऐसी भूमि!"

फर्गुसनने कहा—"कौन कह सकता है, यह देश एक दिन शिक्षा और सभ्यतामें पृथ्वीके सब सुसभ्य देशोंके समान न रहा होगा?"

केनेडी—"क्या तुम ऐसा ही विश्वास रखते हो?"

"अवश्य। देखो, कालस्रोत कैसा प्रवाहित होता जाता

है। पृथ्वीके आदिसे अब तकके इतिहासपर दृष्टि डालो—मनुष्य कैसा एक देशसे दूसरे देशमें, एक राज्यसे दूसरे राज्यमें घूमता फिरता है। क्या एक दिन एशिया ही समग्र मानव-जातिकी निवास-भूमि नहीं थी? क्या एशियाके जङ्गल और ऊसर खेत मनुष्योंने एक दिन उपजाऊ नहीं बनाये थे? किन्तु जिस दिन एशियाकी स्वर्ण-घड़ी निःशेष होगई, उस दिन वहाँ स्वर्ण छूनेसे पत्थर होने लगा। उसी समय एशियाकी प्रिय सन्तान यूरोपमें जा बसी। देखो, इस समय यूरोप भी दिन पर दिन ऊसर होता जाता है—वहाँ पहलेके समान उपज नहीं होती है। वहाँके वृक्षोंमें भी पहलेके समान मधुर फल नहीं फलते हैं। यूरोपकी जीवनी शक्ति क्षीण देखकर गति-शील मानवजाति अमेरिका जा पहुँची। एकदिन अमेरिका की भी यही दशा होगी। इस समय लोग उसके हृदयको फाड़कर जिस दुग्धको पी रहे हैं, उसकी कमी एक न एक दिन अवश्य आयेगी और अफ्रिका ही फिर मानवोंका आश्रय-स्थल होगा। आज अफ्रिकाके जलमें विष और स्थलमें विषवाण दिखाई देते हैं, आज उसके विपुल जङ्गलोंमें सिंह, व्याघ्र, रीछ आदि निर्भय मनसे फिरते हैं, किन्तु कल यही विष अमृत हो जायगा और ये ही अरण्य सुन्दर नगरोंके रूपमें परिणत हो जायँगे। इस समय हम जिस प्रदेशपरसे जा रहे हैं, कौन कह सकता है कि कल उसमें ऐसे मनुष्य आकर न बसेंगे, जिनके नये-नये आविष्कारोंके सामने वर्तमान

युगके वैज्ञानिक आविष्कार बच्चोंके खेलमात्र न समझे जायँगे ?"

जो उत्तेजित होकर कहने लगा—"हाय, वह दिन यदि देखनेको मिले!"

"वह दिन अभी बहुत दूर है।" यात्रियोंमें जिस समय इस प्रकार बातचीत हो रही थी, उस समय उज्ज्वल सूर्य्य-किरणें मेघमण्डलको तहों-तहोंपर चमक रही थीं। मेघराशि उज्ज्वल सूर्य्यालोकसे अलौकिक रूप धारण कर रही थी। बड़े-बड़े वृक्ष, वृक्षोंके समान लतायें, नर्म गलीचेके समान हरित तृण-विभूषित भूखण्ड, मानों सभीने एक नई शोभा धारण की हो। जगह-जगहपर सुशोभित उच्च भूखण्ड यहाँ-वहाँ बिखरे हुए पर्वतोंके समान दिखाई देते थे। दुर्भेद्य जङ्गल, कण्टकमय वनभूमि, बीच-बीचमें छोटे-छोटे ग्रामोंके समूह यन्त्रचालित चित्रावलीके समान आँखोंके सामनेसे नाचते चले जाते थे।

मालगाजार नदी जगानिका हृदसे जन्म लेकर कितने खेतोंको धोती हुई, कितने मार्गोंको काटती हुई और कितने अरण्योंके पैर चूमती हुई तीव्र वेगसे बह रही थी। ऊपरसे वह एक प्रवाहमान जलप्रपातकी नाईं प्रतीत होती थी। उसके किनारे हज़ारों गाय, भैंस, बकरी आदि पशु निःशंक मनसे विचरण करते और कभी-कभी तृण-समूहमें छिप जाते थे। कहीं-कहीं हाथियोंके झुण्ड छोटे-छोटे

वृक्षोंको चूर्ण करते, लतागुल्मादिको तोड़ते और बड़े-बड़े वृक्षोंकी शाखा-प्रशाखाओंको नवाते हुए आहारकी खोजमें फिरते दिखाई देते थे।

केनेडीने प्रसन्न होकर कहा—"यह जगह शिकारके लिए बहुत अच्छी है। बेलून नीचे ले चलो, तो कुछ शिकार कर लूँ।"

"नहीं डिक्, यहाँ शिकारका काम नहीं है। रात्रि होना ही चाहती है। मेघोंका रङ्ग-ढङ्ग देखनेसे ज्ञात होता है कि, शीघ्रही प्रबल वर्षा होने वाली है। इस देशकी वृष्टि बड़ी भयानक होती है। बिजलीका उत्पात तो असहनीय होता है। देखो न, मेघोंको तह-तहमें बिजली कैसी खेल रही है?"

"वर्षाके पहले हम लोग नीचे उतर चलेंगे।"

"नहीं, नीचे जानेसे ही विपद्‌की अधिक आशंका है।" इससे हम ऊपर जाना ही अच्छा समझते हैं। हमारा बेलून थोड़े ही समयमें इस मेघमण्डलको लाँघकर ऊपर निकल जावेगा। पर भय केवल इस बातका ही है कि, ऊपर जाते समय कहीं प्रबल वायुके वेगमें पड़कर हम लोग पथभ्रष्ट न हो जायँ।"

"यदि ऐसा ही मौक़ा आगया तो क्या करोगे?"

"जहाँ तक हो सकेगा औरभी ऊपर जानेकी चेष्टा करेंगे।"

प्रकृति क्रमशः गंभीर रूप धारण करती जाती थी। शीघ्र ही वर्षा होनेके लक्षण दिख रहे थे। निश्चल मेघमाला, निष्कम्प वृक्ष, और गंभीर प्रकृतिको देखकर फर्गुसनके मनमें भयका सञ्चार होने लगा। देखते-देखते गगन-विहारी पक्षी वृक्ष-कोटरोंमें जा छिपे। रात्रिके ८ बजनेके समय बेलून ठहर गया।

फर्गुसन उद्विग्न होकर कहने लगे—"डिक्! वर्षा हुआ ही चाहती है। कहो, अब क्या करना चाहिये?"

जोने उत्तर दिया—"इस समय मेघ बहुत ऊँचे हैं, मालूम होता है, आज रात्रिको वर्षा न होगी।"

"मेघोंका चेहरा अच्छा नहीं है—कहीं यह हवाका बवण्डर न हो। यदि यह बवण्डर ही हुआ तो हमको इस शून्य आकाशमें भौंरेके समान घूमना पड़ेगा। मेघोंकी रग-रगमें बिजली भरी हुई है। इससे बेलूनमें आग लग जाने का भी भय है। यदि बेलूनको नीचे उतारकर किसी वृक्षकी शाखासे लङ्गर बांध दें, तो हवाके प्रबल झकोरेसे बेलून पछाड़ खाकर नीचे गिरे बिना न रहेगा।"

इस समय विक्टोरिया मेने झदके ऊपर निश्चल भावसे खड़ा था। निकटवर्त्ती ग्राम-समूह मृतवत् सो रहे थे। बीच-बीचमें बिजलीकी चमक उस सघन अन्धकारको भेदकर झदके जलमें क्रीड़ा करती हुई दिखाई देती थी।

केनेडीने चिन्तित होकर कहा—"अब क्या उपाय है?

विक्टोरियाको अब दूसरी जगह रखना चाहिए। तुम सोओ, मैं जागता हूँ।"

"मैं भी तुम्हारे साथ जागता रहूँगा। न जाने कब कौनसी विपद् आजाय।"

जोने कहा—"इस समय तो कोई विपद् आनेकी कुछ आशंका नहीं है। आप दोनों सोइये, मैं पहरा देता हूँ।"

फर्गुसनने उसकी बात न मानी। उन्होंने कहा,—"तुम सोओ, आज मैं स्वयं ही पहरा दूँगा और ज़रूरत पड़नेपर तुम्हें सावधान कर दूँगा।"

केनेडी और जो सो रहे। फर्गुसन पहरा देने लगे। थोड़े ही समयके उपरान्त ऊपरकी एकत्रित मेघराशि धीरे-धीरे नीचे उतरने लगी। अन्धकार औरभी सघन होगया। चारों ओर अँधेरा-ही-अँधेरा दिखाई देने लगा—सूचीभेद्य अँधेरेसे विश्व ढँक गया। फर्गुसनको चिन्ता औरभी बढ़ गई।

सहसा आकाशके एक छोरसे दूसरे छोर तक बिजली चमक गई, साथही भयंकर मेघ-गर्जनसे दिग्मण्डल काँप उठा।

फर्गुसनने घबरा कर कहा—"उठो—उठो, सावधान हो जाओ।"

केनेडी व्याकुल होकर उठ बैठा और कहने लगा—"क्या हमको बेलूनसे नीचे उतरना होगा?"

"नहीं—नहीं, ऐसा करनेसे बेलूनकी रक्षा न हो सकेगी। जबतक मेघराशि नीचे उतरती है; तबतक हमको उससे ऊपर निकल चलना चाहिए।"

फर्गुसनने गैसको आँच देना प्रारंभ किया। फिर बिजली चमकी! भयंकर वज्र-ध्वनिसे आकाश काँप उठा। फिर—फिर—फिर एक मिनिटमें २०—२५ बार बिजली चमकी। भयंकर मेघ-गर्जनसे कान बहरे होने लगे। मूसलाधार वर्षा होने लगी। एक-एक बिन्दु जल एक-एक शिलाके समान आकर लगता था। सारे आकाश-भरमें दारुण अग्नि-काण्ड मच गया। बेलून-विहारियोंकी आँखें मुँद गईं।

फर्गुसनने कहा—"हमको बहुत पहले ऊपर जाना था। अब इस अग्निस्तरको भेदकर ऊपर जाना पड़ेगा। बेलून ज्वालाग्राही पदार्थ—गैससे परिपूर्ण है, अग्निके तनिक स्पर्शसे ही वह जलकर भस्मके रूपमें परिणत हो जायगा।"

"तो अब नीचे ही चलना चाहिए।"

"नीचे जानेसे क्या वज्राघातका भय मिट जायगा?" उस समय मेघराशि ज्वालामुखीके समान सहस्र मुखसे अग्नि उगल रही थी। बेलून क्रमशः ऊपर उठ रहा था। वह कभी-कभी वायु-चक्रमें पड़कर रुक जाता था और कभी फिर ऊपर उठने लगता था। वायुके प्रबल धक्के बेलून पर पड़ रहे थे, इससे बेलूनके ऊपरका रेशमी आवरण छिन्न-भिन्न हो गया था। फर्गुसन इस समय भी गैसको उत्ताप दे रहे

थे और विक्टोरिया धीरे-धीरे ऊपरको उठ रहा था। इस समय भी बेलूनके ऊपर नीचे चारों ओर बिजली चमक रही थी और दशों दिशायें वज्राघातकी कर्कश ध्वनिसे विकम्पित हो रही थीं।

फर्गुसनने निराश होकर कहा—"अब केवल भगवान्‌का ही भरोसा है। वह रक्खेगा तो रहेंगे—अन्यथा और कोई उपाय नहीं है।"

फर्गुसनके दोनों साथी एकदम हतबुद्धि होगये थे। फर्गुसनकी बातें उनके कानोंमें प्रवेश नहीं करती थीं। इस समय बेलून उस सघन अन्धकार और अग्निराज्यके मध्य भयंकर शिलावृष्टिसे आहत होता हुआ ऊपर उठ रहा था।

लगभग पन्द्रह मिनिटके भीतर बेलून मेघ-सीमाको लाँघ गया। आहा! कैसा सुन्दर दृश्य था! मस्तकके ऊपर उज्ज्वल नक्षत्र-जड़ित निर्मल आकाश और पैरोंके नीचे प्रलयकालीन वायु-प्रवाह सहस्र मुखसे अग्नि उगलता हुआ दिग्‌दिगन्तमें व्याप रहा था! चन्द्रमाकी शीतल उज्ज्वल स्वर्णमयी किरणें काले-काले मेघोंके ऊपर पड़कर एक अपूर्व सौन्दर्य्यकी सृष्टि कर रही थीं।

तीनों यात्री इस मानव-दृष्टिसे अतीत दृश्यको चुपचाप देख रहे थे।

ग्यारहवाँ परिच्छेद।
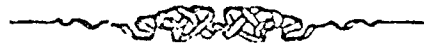
नवीन वाहन।

रात्रि निर्विघ्न कट गई। सवेरे मेघ-निर्मुक्त स्वच्छ आकाशमें सूर्य्य भगवान् उदित हुए। मन्द-मन्द पवन चल रही थी। फर्गुसन कुछ नीचे उतरकर, उत्तरमुखगामी वायु-प्रवाहका अनुसन्धान करने लगे। वे कई बार ऊपर नीचे गये, परन्तु उन्हें वायुका अनुकूल प्रवाह नहीं मिला। वायुस्रोत उनको पश्चिमकी ओर ले जाने लगा। कुछ दूर चलनेपर उन्हें चन्द्र-पर्वतमालाकी धूसरवर्ण चोटियाँ दिखाई देने लगीं। यह पर्वतमाला टाङ्गानिका झदकी प्राचीरके समान चारों ओरसे घेरे खड़ी है।

फर्गुसन—"इस समय हम अफ्रिकाके जिस स्थानपर आ पहुँचे हैं, इस जगह कभी कोई नहीं आया।"

केनेडी—"क्या हमें चन्द्र-पर्वतमाला लाँघनी पड़ेगी?"

"नहीं—मालूम पड़ता है, इसकी आवश्यकता न पड़ेगी।

हम विषुवत् रेखाकी ओर जानेकी चेष्टा करेंगे। यदि आवश्यक हुआ तो इसी जगह लङ्गर डालकर अनुकूल वायुकी अपेक्षा करेंगे।"

फर्गुसनकी आशा शीघ्रही पूर्ण हो गई। वे जिस वायुके अनुसन्धानमें थे—वह उन्हें मिल गया। विक्टोरिया शीघ्र गतिसे चलने लगा। फर्गुसनने प्रसन्न होकर कहा—"इस समय हम ठीक मार्गपर चल रहे हैं। अच्छा हुआ। जाते-जाते यह अपरिचित प्रदेश भी देखनेको मिल गया।"

"क्या हम इसी प्रकार नित्य उड़ते ही जायँगे?"

"डिक्, नील नदीका जन्मस्थान तो देखना ही होगा। उस महातीर्थके दर्शनके निमित्त तो इतना आयोजन ही किया गया है। हम समझते हैं कि, हमें अभी ६०० मील और चलना पड़ेगा।"

"हाँ—हाँ चलिए, रोकता कौन है? ६०० क्यों ६००० मील चलिए। पर हमारे हाथ पैर तो अकड़े जाते हैं—जड़वत् हुए जाते हैं, पृथ्वीकी धूलपर क्या एक बार भी न उतरोगे?"

"फर्गुसनने हँसकर कहा—"नीचे उतरे बिना काम कैसे चल सकता है? रसद बहुत थोड़ी रहगई है। तुम्हारे हाथमें बन्दूक और जङ्गलमें वन्यपशु रहते भी क्या कुछ माँस का प्रबन्ध न हो सकेगा?"

"क्यों न हो सकेगा, मैं तो तैयार हो हूँ—बेलून नीचे उतारिए।"

"कुछ जल भी लेना होगा।"

दोपहरके समय बेलून कई ग्रामोंको लाँघता हुआ चला जा रहा था। फर्गुसनने कहा—"यहाँके काफिर कुछ अंशमें सभ्य हैं। उनमें राजतन्त्र-प्रणाली प्रचलित है। राजाकी क्षमता असीम होती है।" फर्गुसन धीरे-धीरे बेलूनके उत्तापको कम करने लगे। बेलून नीचे उतरने लगा। कुछ समयके उपरान्त उन्होंने लङ्गर छोड़ दिया। सोचा कि, लङ्गर किसी वृक्षकी शाखा या शिलाखण्डसे फँस जायगा। बेलून भूमिसे थोड़ी ऊँचाईपर उड़ रहा था और लङ्गर एक लम्बी रस्सी द्वारा नीचे लटक रहा था। कुछ देर चलनेके उपरान्त लङ्गर ऊँचे घासवाले क्षेत्रमें छिप गया। वह घास इतना ऊँचा था कि, किसी-किसी स्थानपर उसका शिरोभाग बेलूनके झूलेको स्पर्श करने लगता था।

केनेडी क्रमशः अधीर होने लगे। अन्तमें उन्होंने निराश होकर कहा—"लङ्गर अभी तक नहीं फँसा—अब शिकार न हो सकेगी।"

बेलून जा रहा था। कोसों लम्बी-चौड़ी और बड़े-बड़े घाससे आच्छादित भूमि वायु-दोलित समुद्रकी नाईं शोभा पा रही थी। जहाँतक दृष्टि जाती थी, यही घास-आच्छादित भूमि दृष्टिगोचर होती थी। लङ्गर पूर्ववत् घास-क्षेत्रको चीरता हुआ जा रहा था। अकस्मात् एक भारी धक्का लगा—बेलून हिल उठा। जो कहने लगा—"लङ्गर किसी शिलाखण्डसे फँस गया है।"
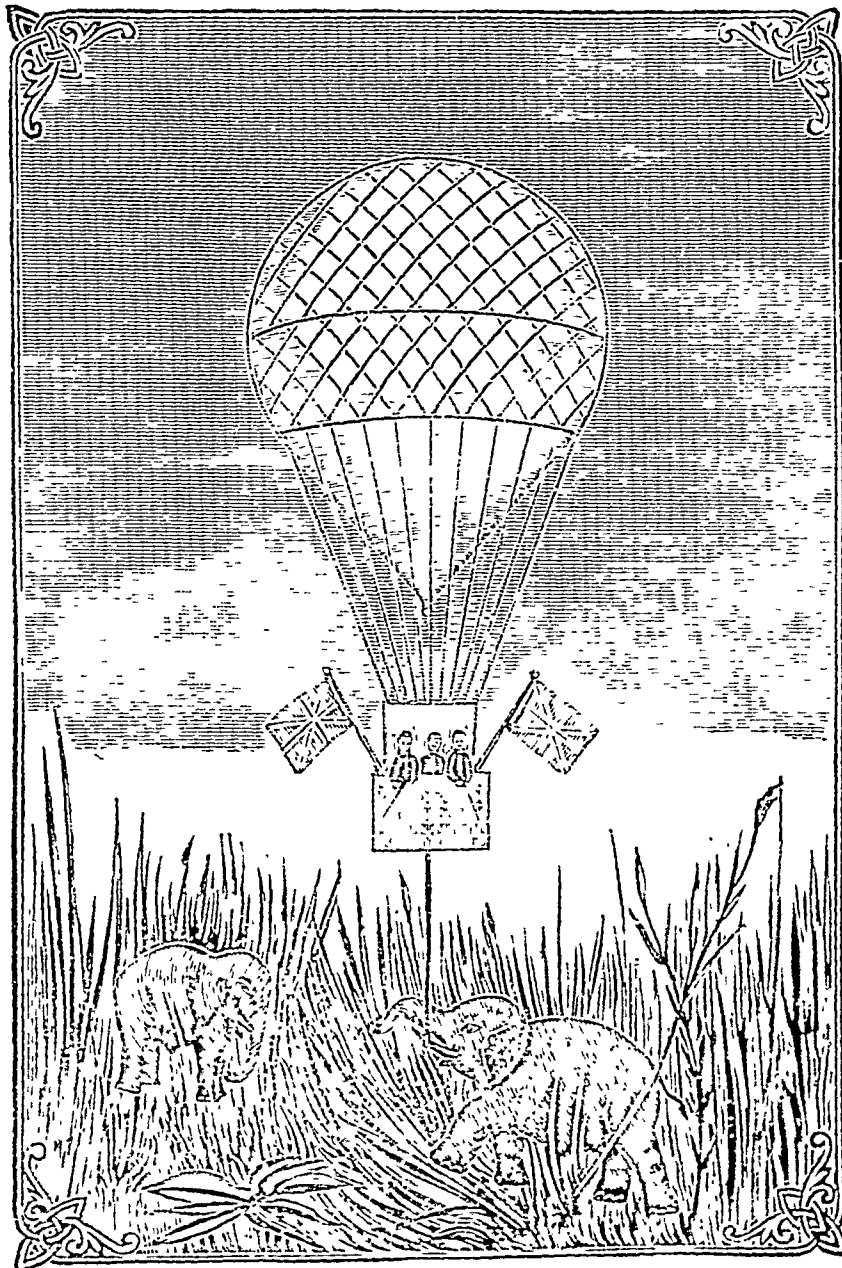
हाथी के दाँत में बेलून का लङ्गर। [पृ० ८५-८६]

जोके मुँहका वाक्य पूरा न हुआ था कि, सहसा एक गम्भीर चीत्कार-ध्वनि सुनाई दी। सब एक साथ कहने लगे—"क्या बात है?—यह चीत्कार-ध्वनि किसकी है?"

"कैसा भयानक चीत्कार है—ऐसा भयङ्कर शब्द तो कभी नहीं सुना!"

केनेडीकी बात काटकर जोने कहा—"क्या हम फिर चलने लगे? मालूम होता है, लङ्गर खुल गया।"

केनेडीने रस्सी खींचकर कहा—"नहीं, खुला नहीं है। यह देखो, रस्सी तनिक भी नहीं खिंचती है।"

"तो क्या शिलाखण्ड भी चल रहा है?"

नीचे घासमें बड़ी हलचल दिखाई देने लगी, मानो उसे कोई मथन कर रहा हो। थोड़ेही समयके उपरान्त घासके ऊपर काला-काला कुछ दिखाई दिया। जोने घबरा कर कहा—"बापरे बाप! बड़ा भारी साँप है!"

केनेडीने झट, बन्दूक लेकर कहा—"साँप कहाँ है?"

फर्गुसन—"साँप नहीं—हाथीकी सूँड है।"

"हाथी?" केनेडीने फिर बन्दूक उठायी।

"डिक, ठहरो—ठहरो। तनिक धैर्य्य रक्खो।"

"हाथी हमको खींचे लिये जा रहा है।"

"कुछ डर नहीं है, जिस ओर हम जा रहे थे, वह भी उसी ओर जा रहा है।"

हाथी शीघ्रतासे भागने लगा। घासका वन समाप्त होते

गया और एक साफ़ मैदान आगया। सबने देखा कि, उसके दो सफ़ेद दाँत प्रायः पाँच हाथ लम्बे हैं और उन्हीं दाँतोंमें लङ्गर फँसा हुआ है। लङ्गर खोलनेके लिए हाथीने बहुत चेष्टा की—बहुत सूँड हिलाई-डुलाई, पर फल कुछ न हुआ।

जो ही-ही करके हँसने और कहने लगा कि—"यह हमारा नया वाहन है। अब घोड़ा नहीं चाहिए—हम इसी हाथीपर चढ़कर यात्रा करेंगे।"

केनेडी चिन्तित होकर बारम्बार बन्दूक संभालने लगा। हाथी शीघ्रतासे भागता जाता था। वह कभी दाहिनी ओर और कभी बाईं ओर सूँडको फटकारता था, इससे बेलूनको बारम्बार धक्का लगता था। आवश्यकता पड़ते ही लङ्गरकी रस्सी शीघ्र काट दी जाय, इसके लिए फर्गुसन हाथमें कुठार लेकर खड़े होगये। उन्होंने कहा—"जबतक विशेष आवश्यकता न होगी, लङ्गर न काटूँगा।"

प्रायः डेढ़ घण्टा हो गया—बेलूनको लिए हुए हाथी दौड़ रहा था। फर्गुसनने देखा, आगे एक सघन वन आरहा है। अब बेलूनकी रक्षाके लिए हाथीके दाँतसे लङ्गर छुड़ाना नितान्त आवश्यक होगया।

केनेडीसे न रहा गया। उसने निशाना मिलाकर गोली छोड़ी। गोली उसके सिरसे टकराकर एक ओर जा गिरी। बन्दूकका शब्द सुनकर हाथी और भी शीघ्रतासे भागने लगा।

जोने कहा—"आप अकेले उसे न मार सकेंगे—मैं भी मारता हूँ।" ऐसा कहकर दोनोंने हाथीपर गोलियाँ छोड़ीं। दोनों गोली उसके दोनों बाजुओंमें प्रवेश कर गईं। हाथी क्षण भरके लिए थमा और फिर ऊपरको सूँड उठाकर बनकी ओर भागने लगा। उसके क्षतस्थानोंसे छल् छल् करके रक्त बह रहा था।

बनभूमि निकट आगई। फर्गुसनने सोचा, वेलून अभी किसी वृक्ष-शाखासे टकराकर नष्ट हुआ चाहता है। उन्होंने उत्तेजित होकर कहा—"मारो—मारो और गोली मारो। हम लोग बनके बहुत समीप आ पहुँचे हैं।"

केनेडी और जोने फिर गोली छोड़ना प्रारम्भ किया। प्रायः १०—१२ गोली उसके शरीरमें घुस गईं। चीत्कारसे बनभूमि कम्पित हो उठी। उसकी सूँडकी फटकारसे वेलूनपर गहरे धक्के पड़ रहे थे। ऐसा मालूम होता था कि, वह शीघ्र ही टूटकर चूरमूर हुआ चाहता है। सहसा एक प्रबल धक्केसे फर्गुसनके हाथका कुठार छूटकर नीचे धरतीपर जा गिरा। अब उन्होंने एक छुरी निकाली और वे लङ्गरका बन्धन काटनेकी चेष्टा करने लगे, परन्तु उससे उनका काम न निकला। हाथी इस समय भी बनकी ओर भागता जाता था।

केनेडीने फिर बन्दूक दागी। इस बार गोली उसकी आँखमें लगी। और आँख फूट गई। हाथी रुक रहा और

किस ओर भागूँ यह सोचने लगा। इसी समय केनेडीकी एक गोली उसके हृदयमें प्रवेश कर गई।

असह्य यन्त्रणासे हाथी चीत्कार कर उठा और क्षणभर खड़े रहनेके उपरान्त शैलच्युत शिलाखण्डकी नाईं धरतीपर गिर पड़ा। गिरते ही उसके दोनों दाँत बीचसे टूट गये। साथ-ही-साथ हाथीकी जीवन-लीला भी समाप्त होगई।

तीनों यात्री बेलूनसे नीचे उतरे। जोने हाथीकी सूँडका कोमल भाग काटकर भोजन बनाना प्रारंभ कर दिया। केनेडी कुछ पक्षी मार लाये। अवकाश पाकर फर्गुसन बेलूनकी परीक्षा करने लगे। थोड़े ही समयके उपरान्त रसोई तैयार हो गई। उस मुक्त आकाशके नीचे, अज्ञात देशके नीरव प्रान्तरमें, तीनों यात्री आनन्दपूर्वक भोजन करने लगे।

बारहवाँ परिच्छेद ।

नील नदी ।

प्रातःकाल जोने फर्गुसनके हाथसे गिरा हुआ कुठार ढूँढ लिया । बेलून चलने लगा । वह प्रति घण्टे १८ मीलकी वेगसे जा रहा था । आज फर्गुसनका चित्त बहुत अस्थिर दिखाई देता था । वे बारंबार दूरबीन लेकर चारों ओर देखते थे । विक्टोरिया रुवेसी पर्वतको लाँघकर कारोगोया शैलमालाको प्रथम शृङ्गके पास जा पहुँचा । प्राचीन कहानी पढ़नेसे फर्गुसनको यह बात ज्ञात थी कि, कारोगोया पर्वतमाला ही नील नदीका प्रथम क्रीड़ा-क्षेत्र है । उनको यह कथन अब सत्य प्रतीत होने लगा । क्योंकि यह पर्वतश्रेणी ही उकेरिउ ह्रदको चारों ओरसे घेरे हुए थी । कुछ आगे चलने पर उनको ऐसा दिखाई देने लगा, मानो क्षितिजके निकट उस विश्वविख्यात ह्रदकी उज्ज्वल जलराशि क्रीड़ा कर रही है ।

फर्गुसन उस प्रदेशको विशेष ध्यानपूर्वक देखने लगे ।

उन्होंने देखा, उनके पैरोंके नीचेकी भूमि ऊसर है। कहीं-कहीं पहाड़की तराईमें कुछ फ़सल पैदा हुई है। क्रमशः ऊँची ज़मीन मिलने लगी। बेलून देखते-देखते कारोगोया प्रदेशके मुख्य नगरके समीप जा पहुँचा। छोटी-छोटी ४०-५० झोंपड़ी लेकर नगर बसा हुआ था। वहाँके पीतवर्ण काफ़िर बड़े आश्चर्यके साथ विक्टोरियाको देखने लगे। उस देशकी स्त्रियाँ बहुत स्थूलाङ्गी थीं। वे किसी प्रकार अपने शरीरके भारको लेकर घरमें चलती-फिरती थीं। फर्गुसनने साथियोंसे कहा—"मोटापन ही इस देशकी स्त्रियोंकी सुन्दरताका लक्षण समझा जाता है। ये लोग स्त्रियोंको स्थूलाङ्गी बनानेके लिए अनेक प्रयत्न करते हैं।

बेलून विक्टोरिया न्याञ्जा ह्रदके पाससे उत्तरकी ओर जाने लगा। दूरबीन उठाकर देखा, उस ओर आदमियोंका नाम-निशान भी नहीं दिखाई दिया। ह्रदका किनारा काँटीले जङ्गलसे आच्छादित था। एक क़िस्मके पीले रङ्गके मच्छरोंसे वह स्थान भरा हुआ था। जहाँ दृष्टि जाती थी, वहीं करोड़ों-अरबों मच्छर उड़ते हुए दिखाई देते थे। सैकड़ों जल-घोड़े ह्रदमें क्रीड़ा कर रहे थे। ह्रदका पश्चिमी किनारा समुद्रके समान विस्तृत था।

सन्ध्या होते ही फर्गुसनने एक द्वीपपर लङ्गर डाल दिया। इस ह्रद (झील) में जितने द्वीप दिखाई देते थे, वे सभी ह्रद-गर्भस्थ पर्वतकी चोटियाँ थीं। फर्गुसनने एक बड़े

पत्थरसे लङ्गर बाँध दिया। ह्रदके किनारे जो जातियाँ निवास करती थीं, वे वन्य पशुओंकी अपेक्षा अधिक हिंस्र थीं। फर्गुसनने कहा—"तुम निःशंक होकर सोओ, रात्रिको किसी विपद्‌की आशंका नहीं है।"

केनेडीने कहा—"क्या आप न सोयेंगे?"

"मुझे नींद न आयेगी। चिन्तासे मेरा सिर घूम रहा है। यदि सवेरे अनुकूल वायुस्रोत मिल गया, तो अवश्य ही कल नील नदीका जन्मस्थान देख सकूँगा। जिस तीर्थ-स्थानको देखनेके लिए इतना विराट् आयोजन किया है, उसके सिंहद्वार तक आकर क्या निद्रा आसकती है?"

केनेडी और जोको नील नदीका जन्मस्थान देखनेकी इतनी लालसा नहीं थी। फर्गुसनको पहरेपर छोड़कर वे दोनों निश्चिन्त होकर सो रहे।

सवेरे चार बजे बेलून फिर चलने लगा। उस समय वायु-प्रवाह प्रबल वेगसे उत्तरकी ओर बह रहा था। बेलून प्रति घण्टे ३० मीलके वेगसे चल रहा था। पैरोंके नीचे न्याञ्जा ह्रदकी जलराशि वायुवेगसे आन्दोलित हो रही थी, लहरोंके ऊपर उज्ज्वल फेन-समूह चमक रहा था। ८ बजे बेलून ह्रदके पश्चिम तीरपर जा पहुँचा। उस ओर केवल मरुभूमि और किसी-किसी स्थलपर सघन वनके सिवा और कुछ नहीं था। बेलून और अग्रसर होने लगा। यहाँसे ह्रद-तीरस्थ ऊँचे पर्वतोंकी शुष्क चोटियाँ दिखाई देने

लगीं। मालूम होताथा कि, वहांसे एक वेगशाली नदी टेढ़े-मेढ़े मार्गसे बह रही है। फर्गुसनने कहा—"देखो —देखो! अरबी लोगोंका कथन बिल्कुल ठीक निकला। वे कहा करते हैं कि एक नदी है, इउकेरिउ ह्रदकी जलराशि उसी नदीके द्वारा उत्तरकी ओर बहती जाती है। यह वही नदी है और इसीका नाम नील है।"

"नील नदी!" केनेडी विस्मित होकर कहने लगा,—"नील नदी!"

उस समय बेलून नदीके ऊपर शून्यमार्गसे उड़ता जाता था। विशाल पर्वत-श्रेणियाँ जगह-जगह नदीके मार्गको रोके खड़ी थीं। टकराई हुई जलराशि भीम वेगसे उछलती और गर्जन करती हुई कहीं-कहीं जल-प्रपातके रूपमें और कहीं-कहीं पर्वत-रन्ध्रोंके भीतर सहस्र धाराओंसे गिरती थी। पर्वतसे सैकड़ों हज़ारों धारायें आकर उस वेगशाली जल-प्रवाहमें मिलती थीं।

फर्गुसनने कहा—"यही नील नदी है।"

केनेडी—"यह सचमुच नील नदी ही है, इसका क्या प्रमाण है?"

"इसका निर्भ्रान्त प्रमाण है।"

"इस समय नीचे उतरना संभव नहीं है। देखो, ये काफ़िरगण बेलून देखकर कैसे क्रोधित हो रहे हैं!"

"होने दो, हमें नीचे उतरना ही होगा।"

"यहाँ उतरनेसे विपद् आ सकती है।"

"भले आवे, इसकी चिन्ता नहीं है। यदि नीचे उतरनेके लिए शत्रुओंसे युद्ध करना पड़े तोभी स्वीकार है।"

फर्गुसनने बेलूनको ऊपर चढ़ाया। २५०० फुट ऊपर जाकर देखा, चारों ओरसे सैकड़ों हज़ारों क्षुद्र नदियाँ आकर नील नदीमें गिर रही हैं। उनमेंसे अधिकांश पश्चिमी पर्वतमालासे आती हैं। फर्गुसनने मानचित्रको आलोचना करके कहा,—"जो उत्तरसे इस स्थलपर आये हैं, उनके आविष्कार-स्थानको भी हम देख सकते हैं। गण्डारोको यहाँसे क़रीब ८० मील होगा। अब बेलूनको कुछ नीचे उतारते हैं—सावधान हो जाओ।"

बेलून नीचे उतरने लगा। इस जगह नील नदीका विस्तार अधिक नहीं था। निकटवर्त्ती ग्रामोंके अधिवासी बेलूनको दैत्य समझकर भयभीत हो उठे। फर्गुसनने देखा, पासमें नील नदीकी ७—८ हाथ गहरी धारा बह रही है।

उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—"यह वही जल-प्रपात है, जिसका वर्णन सुप्रसिद्ध यात्री डिबोनाने लिखा है।"

बेलून ज्यों-ज्यों आगे जाने लगा, त्यों-त्यों नदीका विस्तार अधिक मिलने लगा। क्रमशः नदीमें छोटे-छोटे द्वीप-समूह दृष्टिगोचर होने लगे। फर्गुसन इन द्वीपोंको खूब ध्यानपूर्वक देखने लगे। कुछ काफ़िर एक डोंगीपर

चढ़कर बेलूनके नीचे जानेकी चेष्टा करने लगे; ज्योंही वे बेलूनके नीचे आये, त्योंही केनेडीने एक बन्दूक़ छोड़कर उनका स्वागत किया। वे तुरन्त प्राण लेकर भाग गये।

फर्गुसनकी दृष्टि एक जगह स्थिर नहीं थी। वे एक दूरवीक्षण यन्त्र लेकर नदीके ठीक बीचमें स्थित एक द्वीपको देखने लगे। देखते-देखते कहा,—

"वे चार वृक्ष दिखाई दिये ? इसी द्वीपका नाम बेङ्गल द्वीप है। हम लोग आज इसी द्वीपपर उतरेंगे।"

"यहाँ कुछ काफ़िरोंका निवास तो नहीं है ?"

"रहने दो, अधिकसे अधिक २० काफ़िर होंगे। बन्दूक़ रहते इतने काफिरोंको भगाना कितनी बड़ी बात है !"

इस समय सूर्य्य भगवान् मस्तक पर अग्नि-वर्षा कर रहे थे। बेलूनको द्वीपके समीप आते देखकर काफ़िरगण चीत्कार करने लगे। उनमेंसे एकने सिरपरसे वृक्षके छालकी टोपी उतारकर ऊपरको फेंकी। केनेडीने टोपीको लक्ष्य करके गोली मारी। टोपी टुकड़े-टुकड़े होकर नीचे गिर पड़ी। काफ़िर डरकर भाग गये। कई एक नदीमें कूद पड़े। कुछ समयके उपरान्त नदीके दोनों तीरोंसे अगणित बाणोंकी वर्षा होने लगी।

वर्षा थम गई। फर्गुसन और केनेडी नीचे उतरे। एक ओर छोटे-छोटे अनेक पहाड़ थे। फर्गुसन मित्रको उसी ओर ले गये। कँटीले वृक्ष-लता आदि हटाते-हटाते

फर्गुसनके शरीरसे कई जगह रक्त बहने लगा। वे अकस्मात् हर्ष-ध्वनि करके कहने लगे,—

"देखो डिक्,—प्रमाण देखो।"

"यह तो पत्थर पर कुछ लिखासा है!"

"देखो, दो अँगरेज़ी अक्षर हैं!"

"केनेडीने ज़ोरसे पढ़ा—"ए. डी.।"

फर्गुसनने कहा—"ए. डी. और कुछ नहीं, आन्ड्रिया डिबोनाका संक्षिप्त नाम है। ये महाशयही सबसे पहले नील नदीकी उत्तरीय सीमा देख गये थे।"

दोनों मित्रोंने आनन्दमग्न होकर कर मर्द्दन किया।

तेरहवाँ परिच्छेद ।

राक्षसोंके राज्यमें ।

दो दिन निर्विघ्न व्यतीत हो होगये । पर्य्यटकागण आगे बढ़ते-बढ़ते तीसरे दिन एक ग्रामके समीप जा पहुँचे । ग्राम वृत्ताकार बसा हुआ था । उसके मध्यमें एक विशाल वृक्ष आकाशमें सिर उठाये खड़ा था । उसकी विस्तृत शाखाओंकी सघन छायामें कई छोटी-छोटी झोंपड़ी बनी थीं ।

जो कहने लगा—"देखो, वृक्षकी डालों-डालोंमें कितने फूल फले हैं ।"

फर्गुसनने बारीकीसे देखकर कहा—"ये फूल नहीं हैं जो—ये नरकङ्काल ! नरमुण्ड हैं ! बर्छोंमें छेदकर डालियोंमें खोंसे गये हैं !"

जो काँप उठा ।

देखते-देखते वह ग्राम आँखोंसे ओझल हो गया और उसी समय एक दूसरा ग्राम दिखाई देने लगा । ग्रामके

चारों ओरका मैदान मनुष्योंके अधूरे शव, कटी हुई भुजाओं, खण्डित शिरों और नरकङ्कालोंसे भरा पड़ा था! वन्यपशु उन नरदेहों को लेकर खींचातानी कर रहे थे!

फर्गुसनने कहा—"ये नरकङ्काल दण्डित अपराधियोंके शेष चिह्न हैं। कैदियोंको पकड़ कर इस वनमें छोड़ देते हैं और जङ्गली जानवर आकर उनको खा जाते हैं। अफ्रिकाके दक्षिणी भागमें इनके साथ और भी क्रूर व्यवहार किया जाता है। अपराधियोंको पकड़कर एक घरमें बन्द कर देते हैं—पीछे उनके स्त्री, पुत्र, परिवार, और यहाँ तक कि उनके पालित पशुओंको भी उसी घरमें बन्द करके उसमें आग लगा देते हैं।"

केनेडी—"उः कैसी निष्ठुर प्रथा है! यह भी फाँसीके समानही नृशंस व्यापार है।"

जो अभी तक नीरव आकाशकी ओर देख रहा था। कुछ पक्षियोंको देखकर आश्चर्यके साथ कहने लगा—"क्या ये सब पक्षी हैं? देखो, कितने ऊपर उड़ रहे हैं।"

केनेडीने दूरवीक्षण यन्त्रसे देखकर कहा—"हाँ, ये ईगल पक्षी हैं। आहा! कैसे सुन्दर हैं। जिस ओर हम जारहे हैं, उसी ओर वे भी जा रहे हैं।"

फर्गुसनने व्यस्त होकर कहा—"भगवान् उनसे रक्षा करे! मुझे नर-माँस-भक्षी काफ़िरोंसे उतना डर नहीं है, जितना इन ईगल पक्षियोंसे है। इनके हाथसे बचना कठिन काम है।"

केनेडीने हँसकर कहा—"भले पागल हुए हो। मेरे हाथमें बन्दूक रहते हुए भी भय !" इतना कहकर उसने झट बन्दूक उठा ली।

फर्गुसनने बाधा देकर कहा,—"ठहरो—ठहरो डिक, तुम अच्छे शिकारी हो यह मैं जानता हूँ, पर इसकी भी कुछ खबर है कि, ईगलकी एकही ठोकरसे बेलूनकी क्या दशा होगी? बेलून फटकर बेकाम हो जायगा।"

जो हँसकर कहने लगा—"बेलून से कुछ ईगल पक्षी बाँध दो न? वे हमारे बेलूनको खींचते चलेंगे।"

जोकी बात सुनकर फर्गुसन और केनेडी दोनोंको हँसी आगयी। केनेडीने कहा—"तुम्हारा प्रस्ताव बहुत अच्छा है जो, पर यह तो बतलाओ—क्या वे हमारी आज्ञामें चलेंगे?"

"क्यों न चलेंगे? पहले उन्हें कुछ सिखाना पड़ेगा। घोड़ों के जैसे लगाम रहती है, उसके बदले ईगलके उसकी आँखों पर ढक्कन लगा देंगे। जब जो आँख खुली रहेगी, तब ईगल अवश्यही उसी मार्गसे चलेगा।"

इस प्रकार बातचीत होते-होते दोपहर होगये। वायु मन्द होनेके कारण विक्टोरिया धीरे-धीरे चल रहा था। सहसा वंशीकी ध्वनि सुनाई दी। सब विस्मित होकर नीचेकी ओर देखने लगे। देखा, दो दलोंमें भीषण युद्ध होरहा था। दोनों दलोंके बाणोंसे आकाश छा रहा था। युद्धमें निमग्न रहनेके कारण उन्होंने बेलून नहीं देखा। बेलून पर दृष्टि पड़तेही

कुछ समयके लिये युद्ध रुक गया। प्रबल चीत्कार-ध्वनि सुनाई देने लगी। शीघ्रही वेलूनको लक्ष्य करके बाण छोड़े गये! एक बाण वेलूनके इतने पास आगया कि, जौने उसे बड़ी फुर्तीके साथ हाथसे पकड़ लिया।

फर्गुसनने कहा—"चलो, और ऊपर चलो। युद्ध देखने में हमारा सर्वनाश हुआ जाता था।"

फिर युद्ध आरम्भ होगया। पहलेके समान रक्तकी नदियाँ बहने लगीं। एकके प्रहारसे दूसरेका सिर कटने लगा। जो व्यक्ति आहत होकर धराशायी होते थे, शत्रुगण झट दौड़कर उनका सिर काट लेते थे। रमणियाँ भी युद्धमें योग दे रही थीं। वे कटे हुए सिरोंको बीनकर युद्धक्षेत्रके दोनों बाजू जमा कर रही थीं। एक रमणी दूसरेके हाथसे बलपूर्व्वक सिर छीन लेती थी। आवश्यकता पड़नेपर वे इस कार्य्यके लिये हथियार चलानेसे भी कुण्ठित नहीं होती थीं।

जौ ने कहा—"कैसा भयानक दृश्य है!"

फर्गुसन—"ये लोग अगर किसी प्रकारकी पोशाक पहन कर लड़ते, तो इन असभ्य काफिरों और अन्य देशके सुसभ्य सैनिकोंमें क्या अन्तर रहता?"

बन्दूक लेकर केनेडीने कहा—"मैं चाहता हूँ कि, युद्धमें बाधा पहुँचाऊँ।"

फर्गुसनने रोककर कहा —"इसकी कुछ ज़रूरत नहीं है। चलो, हम अपनी राह लगें। जो लोग युद्ध-व्यवसायी हैं—

सैनिक हैं, वे भी इस भीषण नरहत्याके भयङ्कर दृश्यको इस प्रकार बेलून पर चढ़कर देखते तो जान पड़ता है कि उनकी रक्तपिपासा और राज्य जीतनेकी लालसा भी क्षण-भरमें दूर हो जाती।"

दो दलोंके दो नेता थे। उनमेंसे एक बहुत बलवान् और मोटा-ताज़ा था। जिस ओर शत्रुओंका अधिक जमाव दिखाई देता था, वह उसी ओर भीम वेगसे टूटता और एक हाथमें तीक्ष्ण भाला और दूसरेमें तलवार लेकर शत्रुओंका निपात करता था। उसकी सारी देह रक्तसे भीग रही थी। वह कभी-कभी उत्तेजित होकर शत्रु-समूह पर टूट पड़ता था और तलवारकी चोटसे उनकी भुजाओंको काट कर अभिमान-पूर्वक उनका रक्त चूसने लगता था।

इस दृश्यको देखकर केनेडी कहने लगा—"राक्षस! राक्षस! देखो, फर्गुसन, यह सर्दार जीते मनुष्योंको काट-काटकर खारहा है!"

उसी समय केनेडीकी बन्दूककी गोली सर्दारके सिरमें प्रवेश कर गई। सर्दार प्राणहीन होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। योद्धाओंके आश्चर्यकी सीमा न रही। शत्रु-दलका उत्साह बढ़ गया और वह प्रबल वेगसे उस नेता-रहित सैन्य पर आक्रमण करने लगा। सर्दारके मरनेपर उसकी सेनामें खल-बली मच गई और वह भयभीत होकर भागने लगी।

उस समय फर्गुसन बेलूनको ऊपर चढ़ा रहे थे। उन्होंने

ऊपर चढ़ते-चढ़ते देखा कि, विजयी लोग अपर पक्षके आहत-और निहत योद्धाओंके हाथ पाँव आदिको लेकर आपसमें लड़-झगड़ रहे हैं और रुधिराक्त नरदेहोंको परम आनन्दके साथ भक्षण कर रहे हैं।

चौदहवाँ परिच्छेद ।

"रक्षा करो, रक्षा करो!"

रातको भयङ्कर अन्धकार था। अपना-पराया कुछ नहीं सूझता था। फर्गुसनने एक वृक्षकी शाखासे बेलून बाँध दिया।

रातको १२ बजे केनेडीको पहरे पर नियुक्त करते समय फर्गुसनने कहा,—"डिक्, खूब सावधान रहना—बड़ा अन्धकार है।"

"क्यों? क्या कुछ विपद्‌की आशङ्का है?"

"इस समय तो कुछ नहीं है, पर उसके आनेमें क्या विलम्ब लगता है? सुनो, कुछ गुन-गुन शब्दसा सुनाई देता है। वायु-प्रवाह हमको कहाँ खींच लाया है; अँधेरेमें इसका कुछ पता नहीं चलता।"

"वह शब्द और कुछ नहीं, दूरस्थित किसी जङ्गली जानवरकी हुँकार मात्र है।"

"जो हो, खूब सावधानीके साथ पहरा देओ। किसी प्रकारकी आशङ्का होते ही मुझे पुकारना।"

"बहुत अच्छा, ऐसा ही करूँगा, आप निश्चिन्त होकर सोइये।"

आकाश मेघाच्छन्न होगया। हवाका कुछ चिह्न दिखाई नहीं देता था। केनेडी उस नीरव अन्धकारमें खूब सतर्क होकर यहाँ-वहाँ देखने लगा। मनुष्यका मन जिस समय शङ्कित होता है, उस समय उसे न जाने क्या से क्या दिखाई देने लगता है, अनेक काल्पनिक और अस्तित्वशून्य दृश्य प्रत्यक्षवत् होकर उसके सामने नाचने लगते हैं। केनेडीको सहसा एक क्षीण प्रकाशकी रेखा दिखाई दी। वह विशेष ध्यान-पूर्वक उसकी ओर देखने लगा। अब वह प्रकाश लुप्त होगया। केनेडी सोचने लगा, तो क्या यह माया है?

वह उत्सुक होकर देखने लगा। कुछ समय बीत गया। वह क्षीण प्रकाश फिर नहीं दिखाई दिया। केनेडी निश्चिन्त होगया।

वह क्या है—वह? केनेडी एकदम चौंक पड़ा। अरे! यह वंशीकी ध्वनि कहाँसे सुनाई दी? निश्चयही यह वंशीकी ही ध्वनि है! यह क्या? यह किसी रात्रिचारी पक्षीकी कण्ठ-ध्वनि तो नहीं है? वन्यपशुका चीत्कार तो नहीं है? फिर मनमें आया, मालूम होता है, यह मनुष्यका कण्ठ है। केनेडीने बन्दूक सुधार कर पास रखली। फिर सोचा, मनुष्य हो,

पशु हो, पक्षी हो या कुछ भी हो, बेलून पृथ्वीसे बहुत ऊँचेपर है—डर क्या है ?

कुछ समयके उपरान्त मेघयुक्त चन्द्रमाके प्रकाशमें केनेडीको कुछ अस्पष्ट छाया-मूर्त्तियाँ दिखाई दीं। अच्छी तरह देखनेके पहलेही चन्द्रमा बादलोंसे फिर ढँक गया। केनेडीसे अब न रहा गया। उसने झट हाथ पकड़ कर फर्गुसनको उठा दिया। कहा—"चुप ! धीरे-धीरे बात कहना।"

"क्या हुआ डिक् ?"

"पहले जो को भी जगा दो।"

जो उठ बैठा। केनेडीने सब वृत्तान्त कह सुनाया। जो कहने लगा—"मालूम होता है, पहलेके समान बन्दर होंगे।"

केनेडीने गम्भीरभावसे कहा—"वे भी हो सकते हैं, पर हमको सावधान हो जाना उचित है। मैं और जो लङ्गरकी रस्सी पकड़कर नीचे उतरते हैं। नीचे वृक्ष पर जाते ही सब भेद खुल जायगा।"

फर्गुसनने कहा—"अच्छा जाओ—मैं गैस ठीक किये रखता हूँ। नितान्त आवश्यक हुए बिना बन्दूककी आवाज़ मत करना।"

दोनों उतर कर वृक्षकी एक मोटी शाखा पर जा बैठे। कुछ क्षणके पश्चात् जो ने धीरे-धीरे कहा—"कुछ सुनाई दिया ?"

"हाँ, सुनाई दिया। क्या कोई वृक्ष काट रहा है ?"

"शब्द पाससे नहीं आरहा है। मालूम होता है, एक बड़ा भारी साँप है!"

"साँप ? साँप नहीं, खूब ध्यान देकर सुनो। साफ़ मनुष्य कीसी आवाज़ मालूम पड़ती है!"

जो कानके पास हाथ लगाकर सुनने लगा। कहा—"मुझे भी ऐसाही सन्देह होता है। मालूम होता है, कोई वृक्षपर चढ़ रहा है।"

"अच्छा, तुम वृक्षके उस ओर देखो, मैं इस ओर देखता हूँ।"

दोनों हाथमें बन्दूक़ लेकर प्रतीक्षा करने लगे।

एक तो मेघोंके कारण चारों ओर अन्धकार था ही, इसपर वृक्ष-पत्रोंकी सघनता उसे और भी गहन बना रही थी। कुछ क्षणके पश्चात् जोने देखा,—कुछ काफ़िर पेड़ पर चढ़ रहे हैं। उसने झट केनेडी का हाथ दबाकर संकेत किया। अब काफ़िरोंकी धीमी-धीमी आवाज़ भी सुनाई देने लगी। जोने बन्दूक़ उठाकर निशाना मिलाया।

केनेडीने कहा—"अभी ठहरो।"

कुछ काफ़िर वृक्ष पर बहुत धीरे-धीरे चढ़ रहे थे। थोड़ी देरके पश्चात् सघन अन्धकारको भेदकर दो मनुष्य-मूर्त्तियाँ दिखलाई दीं। जो वृक्षके उसी ओर बैठा था।

केनेडीने कहा—"मारो!"

दोनोंकी बन्दूकें एक साथ वज्रकी नाईं गर्ज उठीं। वह ध्वनि आहत काफ़िरोंके आर्त्तनादके साथ मिलकर काँपती-

काँपते आकाशमें मिल गई। अन्यान्य काफिर चीत्कार कर उठे और ऐसा मालूम होने लगा, मानो वे भाग रहे हैं। किन्तु उस चीत्कार और आर्त्तनादके मध्य जो और केनेडीके कानोंमें यह किसका शब्द पहुँचा? उनको सन्देह हुआ कि सुननेमें भ्रम होगया है! नहीं तो कहीं ऐसा भी सम्भव है? अफ्रिकाके इस महा अरण्यमें—इन नरभक्षी राक्षसोंके मध्य सुसभ्य फरासीसी कण्ठ! यह कभी सम्भव हो सकता है? नहीं—भ्रम नहीं है! सुनो, फिर घोर आर्त्तनाद सुनाई दिया—"रक्षा करो—रक्षा करो!"

केनेडी और जो झट रस्सी पकड़कर वेलून पर चढ़ गये। फर्गुसनने कहा,—"डिक, सुना?"

"फर्गुसन, क्या यह सच है? मानो कोई फरासीसी पुकार रहा है—रक्षाकरो—रक्षा करो।"

"अवश्यही कोई फरासीसी पादरी है। मालूम होता है, काफिर उसकी हत्या करेंगे।"

केनेडी क्रोधसे जल उठा। कहने लगा—"फर्गुसन, जिस तरह होसके उसकी रक्षा करना चाहिए। मैं केवल आपकी आज्ञाकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"मालूम होता है, वे बन्दूककी आवाज़ सुनकर भाग गये हैं। क्योंकि बन्दूककी आवाज़ उनके लिये एक बिलकुल नई वस्तु है। पर जब तक दिन नहीं उगता, तबतक पादरीकी रक्षाके लिये कोई उपाय नहीं हो सकता है।"

"पादरी यहीं कहीं पासही होगा । कारण—"

यह क्या ? फिर वही करुण कण्ठकी कातर प्रार्थना—"रक्षा करो—रक्षा करो" सुनाई देने लगा । शब्द आकाशमें कम्पित होकर विलीन होगया । इस शब्दको सुनकर ज्ञात होता था कि उसकी शक्ति क्रमशः क्षीण होती जाती है ।

जौ—"यदि इसी रातको काफिर उसको हत्या कर डालें—"

केनेडीने फर्गुसनका हाथ पकड़कर कहा—"हाँ,—सुनो—सुनो, यदि इसी रातको वे उसको हत्या कर डालें—तो ?"

"यह सम्भव नहीं है । काफिर लोग उज्ज्वल सूर्य्यालोकहीमें बन्दियोंको बध करते हैं । बध करनेके समय सूर्य्य होना ही चाहिये ।"

केनेडीने उत्तेजित होकर कहा—"मैं इसी समय बन्दूक लेकर जाता हूँ—"

जौ कहने लगा—"मैं भी चलता हूँ—मैं भी चलता हूँ ।"

फर्गुसनने बाधा देकर कहा—"तुम लोग ठहरो—बहुत जल्दी मत करो । तुम्हारे जानेसे फल तो कुछ होगा नहीं ; पर हम किस जगह ठहरे हुए हैं, यह शत्रुओंको विदित हो जायगा । ऐसा होनेसे हमपर विपद् आये बिना न रहेगी और जिसकी तुम रक्षा करना चाहते हो, वह भी विपद् में पड़े बिना न रहेगा ।"

"क्यों ? काफिर तो डरकर भाग गये हैं। क्या वे फिर लौट आयेंगे ?"

"डिक्, इस बार दया करो, मेरी बात मानो। तुम यदि बन्दी होगये तो फिर सर्वनाश हो समझो !"

"किन्तु तुम एक बार मनमें विचार कर देखो कि, एक विपद्ग्रस्त भारत पादरी इस प्रकार नैराश्य और दुःखके गहरे गड्ढेमें पड़कर त्राहि-त्राहि पुकारे और हम मृतवत् चुपचाप सुना करें ! क्या यह उचित होगा ? क्या उसका रोदन वृथा जायगा ? वह सोचेगा, मरनेके समय मेरी बुद्धि स्खलित होगयी है। जिसे बन्दूकका शब्द समझकर मैं आशान्वित हुआ था, वह बन्दूक का शब्द नहीं—मेरे विकृत मस्तकका—"

बाधा देकर फार्गुसनने कहा—"हम इसी समय उसे अभय देते हैं।" उन्होंने मुखकी दोनों बाजुओं को दोनों हथेलियोंसे दबाकर उच्च कण्ठसे कहा,—

"आप जो हों, धैर्य्य रखिये। हम तीन अँगरेज़ आपकी रक्षाके लिये प्राणपनसे चेष्टा कर रहे हैं। साहस मत छोड़िये।"

फार्गुसनकी कण्ठध्वनिको डुबाकर काफिरोंकी गर्जनाने वनभूमिको कम्पायमान कर दिया।

केनेडीने अस्थिर होकर कहा—"फार्गुसन ! फार्गुसन ! मालूम होता है, अब वे उसकी हत्या करेंगे। हमने पुकारकरके और भी बुरा किया। अब उसकी रक्षाके लिये जो कुछ हो सके, इसी समय करना चाहिये।"

जो बिलकुल हताश होकर कहने लगा—"हाय ! इस समय यदि दिन होता—"

फर्गुसनने अस्वाभाविक स्वरसे कहा—"दिन होता तो क्या करते ?"

अब केनेडीसे न रहा गया—वह बन्दूक लेकर कहने लगा—"मैं अभी नीचे जाता हूँ। इसी बन्दूकके द्वारा शत्रु-ओंको भगाकर पादरीकी रक्षा करूँगा।"

"जो तुम ऐसा न कर सके, तो समझो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है ! ऐसी स्थितिमें तुम्हारी और पादरीकी—दोनोंकी रक्षाके लिए हमें प्रयत्न करना पड़ेगा। सोचो, फिर कितनी कठिन बीतेगी ? क्या किसी दूसरे उपायसे काम नहीं निकल सकता ?"

"जिस तरह हो सके—पादरीकी रक्षा करो। और इसी समय करो—अब देरी सहन नहीं होती।"

"बहुत अच्छा—"

फर्गुसनकी बातको काटकर जोने कहा—"क्या किसी उपाय से आप इस अन्धकारको दूर कर सकते हैं ? यदि ऐसा हो जाता तो एकबार उसे देख सकते—"

फर्गुसन कुछ समयके लिए चुप हो रहे। वे चिन्तामग्न होगये। उन्होंने कुछ समयके पश्चात् साथियोंके मुँहकी ओर देखकर कहा—"देखो, अपने बेलूनपर उपयुक्त वज़न है। पादरीका वज़न हम तीनोंमेंसे किसी एकके बराबर होगा।

कुछ कम भी हो सकता है, क्योंकि अनाहार और असह्य यन्त्रणासे वह अवश्यही सूख गया होगा। जो हो, हमारी तौलका वज़न फेंक देनेपर भी प्रायः ३० सेर वज़न और रह जायगा। यदि वह भी फेंक दिया जाय, तो हम साँस लेते ही बहुत ऊपर उठ जायँगे।"

"तुम्हारा मतलब क्या है?"

"सुनो, बेलूनको पादरीके पास ले जायँगे, और उसे बेलूनमें रखकर उसकी समानताका वज़न नीचे फेंक देंगे। पर ऐसा करने पर भी बेलून ऊपरको न उठेगा। उसे शीघ्रतासे ऊपर उठानेके लिए, वह शेष ३० सेर वज़न भी फेंक देना पड़ेगा। अन्यथा गैसको ताप देकर ऊपर उठानेमें विलम्ब होगा और ऐसा करनेसे काफ़िरोंके हाथ पड़जानेका भय रहेगा।"

"आपकी युक्ति उत्तम है, अब विलम्ब मत कीजिए।"

"एक असुविधा और है। जब कभी फिर नीचे उतरनेकी ज़रूरत पड़ेगी, तब कुछ गैस छोड़ना पड़ेगा—३० सेर वज़न का गैस छोड़े बिना हम नीचे न आ सकेंगे। भाई, तुम जानते ही हो कि गैस ही बेलूनके प्राण हैं। पर अब अधिक सोच-विचार करनेकी ज़रूरत नहीं है।"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं। इस समय बन्दीकी रक्षा करना अपना धर्म्म है। जिस तरह हो सके उसे बचाना चाहिए।"

"वज़न हाथके पास रख लो। बन्दीको बेलूनमें रखने और वज़न फेंकनेकी क्रिया एक साथ होनी चाहिए।"

"अब अन्धकारके लिए क्या उपाय है?"

"अन्धकार? इस समय पहलेके समान गम्भीर तो है नहीं। अपना सब प्रबन्ध होजाने दो, फिर देखा जायगा। इस समय अन्धकार हम लोगोंको छिपाकर हमारा उपकार ही कर रहा है। जो बन्दूक़ ठीक कर रक्खो—डिक्, तुम भी तैय्यार हो जाओ।"

जो और केनेडीने शीघ्र सब प्रबन्ध कर लिया।

फर्गुसनने कहा—"जो, तुम्हें वज़न फेंकनेका काम सौंपता हूँ और डिक्, तुम पर बड़ा भार है। तुम बन्दीको क्षण भरमें बेलूनपर ले आना। बस, यही तुम्हारा मुख्य काम है। जो, बेलूनका लङ्गर खोल दो।"

लङ्गर खुल गया। हवा बहुत मन्द-मन्द चल रही थी, अतः बेलून भी धीरे-धीरे चलने लगा। जलको गैस बनानेके लिए जलमें जो दो बिजलीके तार थे, वे फर्गुसनने बाहर निकाले। फिर बेगसे दो कोयलेके टुकड़े निकाल कर उनके अग्रभागको तीक्ष्ण किया। जब वे ज़रूरतके अनुसार पैने होगये, तब उन्होंने उन दो बिजलीके तारोंके साथ उनको जोड़ दिया। कोयलेके दोनों पैने अग्रभागोंसे तारोंके मिलते ही, क्षण भरके भीतर, उनसे तेज़ प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलने लगा। लेशमात्र अन्धकार न रहा।

जो विस्मित होकर कहने लगा—"धन्य आपके कौशलको, —धन्य—"

गंभीर कण्ठसे फर्गुसनने कहा—"चुप।"

वे हाथ घुमाकर चारों ओर प्रकाश फैलाने लगे। जिस ओरसे आर्त्तध्वनि आई थी, उस ओर भी देखा। बेलून चल रहा था।

उन्होंने बिजलीके प्रखर प्रकाशमें देखा,—जिस वृक्षकी शाखासे बेलून बँधा था, वह एक खुले मैदानके बीच अवस्थित है। समीपवर्त्ती गन्नेके खेतोंमें प्रायः ४०—५० झोंपड़ी बनी हैं और उन्हीं झोपड़ियोंको घेरे असंख्य काफिर खड़े हैं। बेलूनके प्रायः ५०—६० हाथ नीचे मैदानमें एक वध-स्तंभ—शूली गड़ी है। उस शूलीके नीचे ईसामसीहके क्रूशको छातीपर रक्खे हुए एक ३० वर्षीय अर्द्धनग्न फरासीसी पादरी पड़ा हुआ है! उसका सारा शरीर रक्तसे भीगा हुआ था और क्षतस्थानोंसे रक्त निकल रहा था!

काफिरोंने देखा, मानों एक बड़ा धूमकेतु अग्नितुल्य उज्ज्वल पूँछ फैलाकर आकाशसे नीचे उतर रहा है। वे भयभीत होकर चीत्कार करने लगे। उनकी चीत्कारको सुनकर उस मरणोन्मुख पादरीने एक बार सिर उठाकर देखा। फर्गुसन कह उठे—"अच्छा अच्छा, अभी जीता है। तुम लोग तैयार हो?"

केनेडी और जोने एक साथ कहा—"हाँ, तैयार हैं।"

"जी, गैसे बुझा दो।"

गैस बुझ गया। बेलून धीरे-धीरे बन्दीकी ओर अग्रसर होने लगा। काफिरगण भयभीत होकर अपनी-अपनी झोंपड़ियोंमें भाग गये—शूलीके पास कोई न रहा।

बेलून यथासम्भव नीचे उतरा। कुछ साहसी काफिरोंने देखा, बन्दी भाग रहा है। वे चीत्कार करते हुए दौड़े। केनेडीने बन्दूक हाथमें ले ली। फर्गुसनने कहा—"अभी ठहरो, मारो मत।"

बन्दी पादरी उस समय बड़े कष्टके साथ जङ्घाओंपर हाथ रक्खे बैठा था। उसमें उठने या खड़े होनेकी शक्ति नहीं थी। केनेडीने बन्दूक रखकर एक पलभरके भीतर पादरीको बेलूनमें रख लिया। जोने उसी समय ढाई मन वज़न नीचे फेंक दिया।

बेलून ऊपरको नहीं उठा!

केनेडीने घबराकर कहा—"अरे क्या हुआ? बेलून क्यों नहीं उठता?"

जो—"एक काफिर उसे नीचेसे खींच रहा है।"

"डिक्—डिक्—जलका बक्स—"

केनेडीने झट एक जलपूर्ण बक्स नीचे फेंक दिया।

बेलून पल भरमें २०० हाथ ऊपर उठगया।

केनेडी और जो उल्लाससे जय-ध्वनि करने लगे।

बेलून अकस्मात् और छह सातसौ हाथ ऊपर चढ़ गया।

केनेडी गिरते-गिरते बच गया। कहने लगा—"अरे! फिर क्यों?"

फर्गुसनने कहा—"काफिरने बेलून छोड़ दिया।"

सबने देखा, वह चीत्कार करता हुआ और हवामें घूमता-घूमता ज़मीनपर गिर पड़ा।

फर्गुसनने दोनों बिजलीके तारोंको कोयलेके टुकड़ोंसे जुदा कर दिया। उसी समय फिर पूर्ववत् अन्धकार हो गया। सघन अँधेरेमें बेलून ग़ायब होगया।

* * * * *

मूर्च्छित पादरीने जिस समय आँख खोली, उस समय कुछ रात बाक़ी थी। फर्गुसनने फ्रेञ्च भाषामें कहा—"इस समय आप मुक्त हैं—अब कुछ भय नहीं है।"

पादरीने क्षीण कण्ठसे कहा—"आप लोगोंके अनुग्रहसे आज मैंने अत्यन्त निष्ठुर मृत्युके हाथसे रक्षा पाई है, अतएव आपको इसके लिए मैं धन्यवाद देता हूँ; किन्तु मेरी मृत्यु निकट आ रही है--अब मैं अधिक समय तक न बच सकूँगा।" वह फिर मूर्च्छित होगया।

फर्गुसनने सावधानीके साथ उसे बिस्तर पर लिटा दिया। उसकी देहमें प्रायः २०—२५ आगके जले जख़्म और भालोंके घाव थे। इस समय भी उनसे रक्त बह रहा था। डाक्टर फर्गुसनने उन सब घावोंको धोकर दवा लगा दी।

———

पन्द्रहवाँ परिच्छेद।

स्वर्ण-भूमि।

उपरि-लिखित विपद्-रात्रि व्यतीत होतेही सुन्दर प्रभात हुआ। सवेरे फर्गुसनने परीक्षा करके कहा—

"अब भरोसा है—पर खूब यत्न होना चाहिए।"

इस समय पादरी आरामसे सो रहा था। फर्गुसनने उसे जागरित करना उचित नहीं समझा। जो और डिकने उसकी सेवा-शुश्रूषा करनेका भार लिया। पादरीके जागने पर फर्गुसनने पूछा—

"इस समय कैसा मालूम होता है? स्वास्थ्य अच्छा है?"

"हाँ, कुछ अच्छा है। मुझे ऐसा ज्ञात होरहा है, मानो मैं स्वप्न देख रहा हूँ और स्वप्नकी हालतहीमें आपसे वार्त्तालाप कर रहा हूँ। अच्छा, आप लोग कौन हैं? कृपाकर अपना परिचय बतलाइये, जिससे मैं भगवान्‌के पास अपनी शेष प्रार्थनाके समय आपकी बातें निवेदन कर सकूँ।"

"हम तीनों अँगरेज़ पर्य्यटक हैं। वेलून पर बैठकर अफ्रिका-भ्रमण कर रहे हैं। मार्ग चलते-चलते भगवान् की कृपासे अकस्मात् आपकी रक्षा करनेमें समर्थ हुए हैं। मालूम होता है, आप पादरी हैं।"

"हां, मैं एक फ्रेञ्च पादरी हूँ। ईश्वरने आप लोगोंको मेरी रक्षाके निमित्त भेजा था। ईश्वरको सहस्र धन्यवाद हैं। मेरा जीवन पूर्ण हुआ चाहता है। आप लोग तो यूरोपसे आये हैं? मुझे यूरोपकी बातें—फ्रान्सके समाचार सुनाइये। मैंने पाँच वर्षसे फ्रान्सका नाम नहीं सुना।"

"आप इतने दिनोंसे इन्हीं राक्षसोंमें रहते थे?"

"उनको भी तो मुक्तिका उपाय बताना चाहिए। वे मूर्ख, असभ्य और बर्ब्बर हैं, पर वेभी हमारे भाई ही हैं।"

फर्गुसन पादरीसे फ्रान्सकी बातें करने लगे। जोने उनके लिए चा तय्यार कर दी। पादरीको आज बहुत दिनोंके पश्चात चा पीनेको मिली थी। वह मुक्त पवन और निर्मल नील आकाशमें उड़ते-उड़ते ऐसा अनुभव करने लगा कि, मानो मेरे शरीरमें पुनः शक्ति सञ्चार कर रही है। अभी तक वह शय्या पर लेटा था, शरीरमें शक्ति आतेही वह उठ बैठा और सबके साथ करमरदन करके कहने लगा—

"भाइयो, आप लोग खूब साहसी पर्य्यटक हैं। ऐसे असम्भव पर्य्यटनको भी आपने संभव कर दिखाया है। आप लोग शीघ्रही हर्ष और गौरव के साथ स्वदेशका मुख देखनेमें

समर्थ होंगे, आत्मीय स्वजनोंसे मिलकर प्रसन्न होंगे और अपने—"

पादरी आगे एक शब्द भी न कह सका। वह इतना दुर्बल हो गया कि, सबने पकड़कर उसे सावधानीके साथ शय्यापर लिटा दिया। फर्गुसनने देखा कि, उसके क्षीण शरीरके भीतर प्राण छटपटा रहे हैं—उसका अन्त समय निकट आगया है। उन्होंने फिर उसके घावोंको धो दिया और उसके उष्ण शरीरपर शीतल जल छिड़का। उनके पास अधिक जल नहीं है, इसकी ओर उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया। कुछ समयके पश्चात पादरीकी देहमें फिर चेतना-शक्तिका संचार हुआ। वह धीरे-धीरे आत्म-कहानी वर्णन करने लगा। वह कहने लगा—

"ब्रिटानी प्रदेशके अन्तर्गत आराडन नामक एक छोटे ग्राममें मेरा निवास है। मै बहुत दरिद्र हूँ। बीस वर्षकी उम्रमें मैं अपना घरबार छोड़कर इस बान्धवहीन निर्जन अफ्रिकामें आया था। निरन्तर सहस्रों बाधा-विघ्नोंने आकर मेरे मार्गको रोका, भूख-प्यास आदिने सताया, परन्तु मैं अपने उद्देश्यसे विमुख नहीं हुआ। इसी प्रकार धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते मैं यहाँतक आया था।" वह लम्बी श्वास लेकर कहने लगा—

"नेमबरा जातिके काफ़िर बड़े निष्ठुर हैं। उनसे मैंने असीम कष्ट पाया है। ग्राम्यकलहमें लिप्त रहनेके कारण

एक बार उन्होंने मुझे छोड़ दिया था। उस समय मैं चाहता तो भाग सकता था। किन्तु मैंने सोचा कि, इन धर्म्महीन लोगोंको धर्म सिखलाना मेरा कर्त्तव्य है। अतएव मैं स्वदेश की ओर न लौटकर क्रमशः आगे बढ़ता गया। काफिरगण मुझे पागल समझते थे। जबतक उनकी ऐसी धारणा रही, तबतक मैं बहुत सुखी था। मैंने उनकी भाषा सीख ली थी। वाराफ्रि सम्प्रदाय निम्नम् जातिमें सबसे अधिक निष्ठुर और हिंस्र है। इन लोगोंके मध्य मैंने बहुत दिनोंतक निवास किया है। कुछ दिन हुए उनका सरदार मरगया। उन्होंने समझा कि, मैंने कोई मन्त्र-तन्त्र करके उसे मार डाला है। शीघ्रही मुझे प्राणदण्डकी आज्ञा दीगई। सवेरा होते ही मैं शूलीपर टाँगा जाता, पर बीचहीमें आप लोगोंने आकर मेरे प्राण बचा लिये।

"मैंने पहले-पहल जब बन्दूकका शब्द सुना, तो उसी समय "रक्षा करो—रक्षा करो" कहकर पुकारा था। इसके पश्चात् बहुत समय तक जब मुझे कोई प्रत्युत्तर न मिला, तब मैंने सोचा कि वह बन्दूक का शब्द नहीं, मेरी जाग्रत अवस्थाका स्वप्न था। मैं अभीतक बचा हुआ हूँ, यही आश्चर्य है।"

फर्गुसनने कहा—

"आप चिन्ता मत कीजिए—धैर्य्य रखिये। मैं आपके पास ही बैठा हूँ। जब काफिरोंके हाथसे आपको बचा सका हूँ, तो क्या अब मृत्युके हाथसे आपकी रक्षा न कर सकूँगा?"

"मैं इतनी अधिक आशा नहीं रखता हूँ। भगवान्‌से मैं इतनाही चाहता था। मरनेके पहले वस्तुओंसे कर स्पर्श कर सका—स्वदेशकी मधुर बातें सुन सका—यही यथेष्ट है।"

पादरी क्रमशः दुर्बल होता जाता था। बेलून अपनी पहली चालसे चल रहा था। सन्ध्याके पहले ऐसा दिखाई देने लगा, मानों पश्चिममें भयङ्कर अग्निकाण्ड मच रहा हो—समस्त आकाश लाल-लाल होरहा था।

फर्गुसनने ध्यानपूर्वक देखकर कहा—"यह आग्नेय गिरि—ज्वालामुखी पर्वत की अग्नि-शिखा है।"

केनेडी व्यस्त होकर कहने लगा—"हवा हमको उसी ओर ले जा रही है।"

"कुछ भय नहीं है डिक्! हम लोग उसके बहुत ऊपरसे निकल जावेंगे। अग्नि-शिखा हमको स्पर्श न कर सकेगी।"

बेलून तीन घण्टेके पश्चात् उसी अग्नि-शिखाके समीप पहुँच गया। पर्वत-गर्भसे पिघलते हुए गन्धककी धारा फव्वारेकी नाईं निकलकर भीषण शब्द करती हुई चारों ओर गिर रही थी। बीच-बीचमें उत्तप्त शिलाखण्ड निकल कर आकाशमें बहुत ऊपर तक उड़ते थे। फर्गुसन बेलूनकी गैसको ताप देने लगे। वह धीरे-धीरे ६ हज़ार फुट ऊँचे चढ़ गया और सहजही आग्नेय शिखरको लाँघ गया।

पादरी की जीवन-लीला समाप्त हुआ चाहती थी। उसके

मुँहसे दो चार असम्बद्ध शब्द निकले। उसका श्वास क्रमशः क्षीण होने लगा।

उस समय मस्तकके ऊपर असंख्य तारागण चमक रहे थे। पादरी उसी तारागणविभूषित मण्डलकी ओर देखते-देखते अत्यन्त क्षीण स्वरसे कहने लगा—"भाइयो! मैं विदा होता हूँ। भगवान् आपकी यात्रा सफल करे! आप लोगोंने मेरा बड़ा उपकार किया है। मेरे इस ऋणको वही ईश्वर ही चुकावेगा।"

केनेडीने कहा—"अभी भरोसा है। क्या ऐसी सुन्दर रात्रिको भी कोई मर सकता है?"

"मृत्यु मेरे सामने खड़ी है। अब वीरके समान उससे आलिङ्गन करनेका समय है। मृत्युही इस जन्मका अन्त, और अनन्तका आरम्भ है। भाइयो, कृपा करके मुझे मेरे पैरोंके बल बैठा दीजिये।"

तत्काल पादरी की आज्ञा प्रतिपालित की गई। केनेडीने उसे उठाकर बैठा दिया। उसकी दुर्बल देह थर-थर कांपने लगी। वह धीरे-धीरे कहने लगा—"हे भगवान्! दया करके मुझे अपने समीप बुला लीजिये—अपने चरणोंमें स्थान प्रदान कीजिये।"

पादरीका मुखमण्डल प्रसन्न हो उठा। वह इस समय पृथ्वीके मायालोक को छोड़कर स्वर्गके सिंहद्वारकी ओर अग्रसर होरहा था। बन्धुओंको अन्तिम आशीर्वाद देनेके

पश्चात् वह केनेडी की भुजाओं पर लटक गया। फर्गुसनने गहरा श्वास लेकर कहा—"काम होगया! पुण्यात्मा पादरी की आत्मा नश्वर शरीरको छोड़कर अमरलोकको सिधारी!"

तीनों यात्रियोंके नेत्रोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी।

सवेरा हुआ। विक्टोरिया एक पर्वतशृङ्गको धीरे-धीरे लाँघ रहा था। नीचे कहीं-कहीं शुप्त ज्वालामुखी पर्वत मुँह बाये खड़े दिखाई देते थे और कहीं-कहीं सूखी पहाड़ी नदियोंकी विशेष रेखायें दृष्टिगोचर होती थीं। सामने जो पर्वतमाला दिखाई देती थी, लक्षणोंसे ज्ञात होता था कि वह बिल्कुल शुष्क, जलहीन और नीरस है। कहीं पत्थरोंके बड़े-बड़े ढेर और कहीं बड़ी-बड़ी शिलायें दृष्टिगोचर होती थीं। वहाँ वृक्षलतादिका नामनिशान नहीं था। जहाँतक दृष्टि जाती थी, केवल शुष्क, कठिन और नीरस पत्थर सूर्य-किरणोंसे चमकते हुए दिखाई देते थे।

पादरीके शवको ज़मीनमें समाधिस्थ करनेकी इच्छासे फर्गुसनने दोपहरके समय बेलूनको एक पर्वत-शिखरके निकट नीचे उतारा। बेलून ज़मीनके पास आगया। जो नीचे कूद पड़ा। उसने कुछ पत्थरोंको इकट्ठा करके उनसे बेलून की रस्सी बाँध दी। बेलून स्थिर होगया। फिर उसने कुछ वज़नदार पत्थरोंको उठाकर बेलूनमें रख दिया। बेलून अचल होगया। फर्गुसन और केनेडी नीचे उतरे।

वह पार्वत्य प्रदेश उष्ण था। सूर्य्य-किरणें मस्तकपर अग्नि-

वर्षा कर रही थीं। तीनों आरोहियोंने यत्नपूर्वक पादरीकी मृतदेहको ज़मीनमें गाड़ दिया।

फार्गुसनको चिन्तामग्न देखकर केनेडीने कहा—"आज आपके मुखमण्डल पर गम्भीरता छा रही है। कहिए, क्या सोच रहे हैं?"

"सोचता हूँ कि, अक्लान्त परिश्रम करके और धैर्यके साथ समस्त विपदाओंको सिर पर धारण करनेपर भी क्या पुरस्कार न मिलेगा? प्रकृतिकी कैसी विसंवादी—प्रवञ्चक व्यवस्था है। जहाँ केवल आराम है, वहाँ पुरस्कार नहीं है, और जहाँ अनगिनत विपत्तियाँ हैं, वहाँ धन-सम्पत्ति, मान जो चाहो—सब मौजूद है। जानते हो, आज इस वीरधर्मयाजक को कहाँ समाधि दी है?"

"क्यों?"

"देखो न, यह सुवर्ण-भूमि है। जहाँ-तहाँ सुवर्ण ही सुवर्ण दिखाई देता है। जो पादरी जीवनमें दरिद्रताके सिवा और कुछ नहीं जानता था, वह मरने पर इस स्वर्णभूमिमें गाड़ा गया है—उसकी समाधि पर करोड़ों रुपयेकी सोनेकी शिलायें रक्खी हुई हैं!"

"स्वर्णभूमि! तो क्या ये सब सोनेकी खानि हैं?"

"इन सब पत्थरोंमें—जिन्हें तुम पददलित कर रहे हो—विपुल परिमाणमें शुद्ध सोना मौजूद है।"

जो कहने लगा—"असम्भव! असम्भव! बिलकुल असम्भव!!"

"असम्भव नहीं जो, तनिक ध्यानपूर्वक देखनेसे तुम मेरे कथनकी सत्यता को जान सकोगे।"

जो उन्मत्तके समान यहां-वहाँ पड़े हुए पत्थरोंको बटोरने लगा।

फर्गुसनने कहा—

"जो, ठहरो—ठहरो—क्या कर रहे हो? शान्त होओ। यह अनन्त सम्पत्ति तुम्हारे किस कामकी? इसे हम साथ नहीं ले जा सकते हैं।"

"क्यों—क्यों?"

"बेलूनमें अतिरिक्त वज़न रखनेकी ज़रा भी गुञ्जायश नहीं है।"

"आप क्या कहते हैं? यहाँ इतना सोना पड़ा रहे और हम साथमें कुछ भी न ले जायँ! एक ही ढेला रखलेंगे, तो बड़े आदमी बन जायँगे।"

जो उत्तेजित हो उठा।

फर्गुसनने कहा—"जो, सावधान! देखता हूँ, स्वर्ण-मोह तुमको क्रमशः आच्छन्न कर रहा है। मनुष्य-जीवन असार है, यह बात क्या तुम पादरीकी समाधि देखकर नहीं समझ सके?"

जो विरक्त होकर कहने लगा—

"ये सब बातें वक्तृतामें अच्छी लगती हैं। यह निरी वक्तृता नहीं है देखो, राशि-राशि सुवर्ण पड़ा हुआ है! मि० केनेडी आओ, हम दोनों दो चार करोड़का सोना रखलें।"

केनेडीने हँस कर कहा—

"जी, इसे लेकर क्या करेंगे ? हमलोग कुछ धनके लूखे बन कर यहाँ नहीं आये हैं ।"

"नहीं भाई, कुछ सोना तो अवश्य रक्खेंगे । अच्छा, बालूके वज़नके बदले यदि सोना रखलें तो क्या हानि है ?"

फर्गुसनने कहा—

"हाँ, ऐसा कर सकते हो, किन्तु मैं अभी कहे देता हूँ कि, ज़रूरत पड़तेही वह बिना उज्रके नीचे फेंक दिया जायगा ।"

"क्या यह सब सोनाही है ?"

"हाँ, सब सोना है । प्रकृतिरानीने अपनी सञ्चित स्वर्ण-राशि अफ्रिका के इस अति निर्जन, अज्ञात और अनाधिगम्य प्रदेशमें—लोकदृष्टिके परे—छिपा रक्खी है । कालीफोर्निया और आष्ट्रे लियाकी सब सोनेकी खदानें एकत्र होकर भी इसकी समता नहीं कर सकती हैं !"

"हाय, इतना सोना व्यर्थ पड़ा है ! कोई इसका एक कण भी नहीं पा सकता है !"

"भगवान्के राज्यमें किसी वस्तुकी कमी नहीं है । कई अज्ञात स्थानोंमें इससे अधिक सम्पत्ति छिपी पड़ी है । जो हो, तुम्हारे सन्तोषके लिये हम—"

जोने बाधा देकर उच्च स्वरसे कहा—"मुझे किसी प्रकार सन्तोष न होगा—हाय हाय इतना सोना !"

"आगे सुनो। हम इस स्थानका ठीक परिचय लिखे लेते हैं। तुम जब इङ्गलैण्ड लौटकर जाओ, तब इस स्वर्ण-भण्डारका समाचार सबको सुनाना। देशके लोग यदि आवश्यक समझेंगे, तो यहाँ आकर सहजही यह सुवर्ण-भण्डार उठा ले जायँगे।"

"अच्छा तो वज़नके बदले सोना रखलूँ। यात्राके अन्तमें जो अवशिष्ट बचेगा—उसीसे सन्तोष करूँगा।"

जो फुरतीके साथ सोनेके पत्थर उठा-उठाकर बेलूनमें रखने लगा।

फर्गुसन धीरे-धीरे हँसने लगे।

जो एक मन, दो मन, तीन मन, क्रमशः वज़न रखने लगा। धीरे-धीरे उसने प्रायः १२ मन वज़न रख दिया! अभीतक फर्गुसन चुपचाप बैठे थे। अब उन्होंने बेलूनको धीरे-धीरे ऊपर उठाना प्रारंभ कर दिया। केनेडी झट अपनी जगह पर जा बैठा।

जो इस समय भी सोना बटोर रहा था!

फर्गुसनने कुछ समय तक बेलूनको गैसको ताप देकर जो को पुकार कहा—

"जो! बेलून तो चलताही नहीं है!"

जोने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह तन-मन एक करके सोना बटोरनेमें निमग्न था।

फर्गुसनने फिर पुकारा,—"जो—"

बिल्कुल इच्छा न रहने पर भी जौने बेलून पर आकर कहा—"कहिये क्या आज्ञा है ?"

"कुछ वज़न फेंक दो—बेलून भारी हो गया है।"

"आपहीने तो रखनेके लिये कहा था।"

"कहा था, पर इतना वज़न लेकर बेलून कैसे चल सकता है ?"

"इतना ! इतना क्या अधिक है ?"

"तुम्हारी क्या यही इच्छा है कि, हमलोग जीवन-भर अफ्रिकाके इन्हीं पत्थरोंमें रहें ?"

जौ कातर दृष्टिसे केनेडीकी ओर देखने लगा। उस दृष्टिका अर्थ और कुछ नहीं; उपस्थित विपद्‌के लिये साहाय्य-भिक्षा माँगना था। केनेडीने कुछ उत्तर नहीं दिया।

फर्गुसनने फिर कहा,—

"जौ, व्यर्थ विलम्ब होरहा है। हमारे पीनेका जल खतम होनेको आया है। इधर चारों ओर जहाँतक दृष्टि डालो, शुष्क पर्वतमालायें और पत्थरोंके ढेर ही ढेर दिखाई देते हैं—पानी का नाम-निशान नहीं है। इस जगहसे बहुत शीघ्र निकलनेकी आवश्यकता है। कुछ वज़न फेंकदो।"

भला पहले देखलो। बेलूनकी काल तो खराब नहीं होगई है ?"

"देख लिया। काल चल रही है। गैस भी उत्तम होरहा है। देखो, बेलून फूलकर कितना बड़ा होगया है।"

जौ ने अपनी इच्छाके विपरीत एक सबसे छोटा सोनेका ढेला उठाकर बेलूनसे नीचे फेंक दिया। बेलून नहीं उठा।

"अभी और फेंको जौ, वज़न अब भी अधिक है।"

जौने और भी पाँच सेरका ढेला फेंक दिया। बेलून फिर भी नहीं उठा! क्रमशः सात सेर—दशसेर—बीससेर वज़न फेंका गया। कैसा सर्वनाश है! तोभी बेलून निश्चल ही रहा!

फर्गुसनने कहा—'हम तीनों आदमियोंका वज़न प्रायः ५ मन है। कमसे कम ५ मन वज़न तो फेंकना चाहिये।

"पाँ—च—म—न!" जौ का मुँह फीका पड़ गया।

निरुपाय होकर कुछ वज़न फेंककर कहा—

"यह लो सब फेंके देता हूँ—अब तो बेलून उठेगा?"

बेलून जैसा, था वैसाही बना रहा।

"अरे! यह तो उठता ही नहीं।"

"फेंको—फेंको—और वज़न फेंको।"

जौ फेंकने लगा। वह मानो अपने पञ्जरकी एक-एक हड्डीको तोड़कर एक-एक सुवर्ण-खण्ड फेंक रहा था। इस बार बेलून कुछ ऊपर उठा—वह लगभग सौ फुट ऊपर चढ़ गया।

फर्गुसनने कहा—

"इस समय जितना वज़न है, यदि अब उसके फेंकनेकी ज़रूरत न पड़ी तो—"

"क्या अब भी फेंकनेकी ज़रूरत पड़ेगी? तो अब मुझे ही न फेंक दो।"

जो की बातें सुनकर फर्गुसन और केनेडी हो हो करके हँसने लगे। जो चुप हो रहा। उसका हृदय फटा जाता था। वह मौन धारण करके अब शेष स्वर्ण-खण्डोंपर लेट रहा।

बैलून धीरे-धीरे चलने लगा।

सोलहवाँ परिच्छेद।

मरु-भूमि।

दूसरे दिन फर्गुसनने कहा—"हम बहुत धीरे जा रहे हैं। दश दिनमें आधा मार्ग तय हुआ है। किन्तु इस समय जिस गतिसे वेलून जा रहा है, उससे यह जानना कठिन है कि शेष मार्गके लिए कितने दिन और लगेंगे। जल क्रमशः घटता जाता है—यही सबसे अधिक चिन्ताकी बात है।"

केनेडीने कहा—"जलकी क्या चिन्ता है? जिस प्रकार अभी मिलता गया है उसी प्रकार आगे भी मिलेगा!"

केनेडीकी आश्वासन-वाणीसे फर्गुसनकी चिन्ता दूर नहीं हुई। वे दूरबीन लेकर उस विस्तृत जलहीन प्रदेशकी अवस्था देखने लगे। देखा, कहीं नीची भूमिका चिह्न भी दिखाई नहीं देता, वरन ऐसा प्रतीत होने लगा कि आगे विस्तृत मरुभूमि आ रही है! दूर वा समीपमें कहीं ग्राम या मनुष्यावासका चिह्न दृष्टिगोचर नहीं होता था। वृक्षल-

तादि क्रमशः विरल होते जाते थे। बीच-बीचमें छोटे-छोटे पर्वत दैत्यके समान खड़े दिखाई देते थे। कहीं-कहीं दोचार सूखे पेड़ वा कण्टकमय गुल्मलतादि मिलते थे। फर्गुसनकी चिन्ता क्रमशः बढ़ने लगी। दिन पूर्ण होनेपर उन्होंने हिसाब लगाकर देखा—स्वर्णभूमिसे केवल ३० मील दूर आये हैं और जल घटकर केवल १५ सेर बाकी रह गया है! फर्गुसनने पांच सेर जल भविष्यके लिए जुदा रख दिया। अब बेलूनके लिए केवल १० सेर जल रह गया। इस १० सेर जलसे ४०० घन फुट गैस तैयार हो सकेगी। विक्टोरियाके लिए प्रति घण्टा ९ घनफुट गैसकी आवश्यकता पड़ती थी। उन्होंने अपने साथियोंसे कहा—

"अब हम केवल ४४ घण्टे और चल सकते हैं। रात्रि को चलना असम्भव है, क्योंकि अँधेरेमें नदी झरना, झील आदिका कुछ भी पता न मिल सकेगा। हमको जलकी नितान्त आवश्यकता है। इस लिये अब जितना कम हो सके उतना कम पानी पीकर समय बिताना चाहिए।"

केनेडीने कहा—"इसकी क्या चिन्ता है? स्वल्प जल पीकर ही रहेंगे। इस समय तो हम प्रायः तीन दिन तक जा सकते हैं। इतने समयमें क्या जल न मिलेगा?"

रात्रि निर्विघ्न कट गई। बहुत सुन्दर रात्रि थी। फर्गुसन उज्ज्वल तारागण-जड़ित आकाशकी ओर देखने लगे। आकाशकी अवस्था देखकर वे समझ गये कि, वायुका वेग

इसी प्रकार मन्द रहेगा—उसके बढ़नेकी कोई आशा नहीं है। वे अधीर हो उठे।

सवेरे बेलून छोड़ा गया। विक्टोरिया बहुत धीरे-धीरे चलने लगा। क्रमशः सूर्य्यकी धूप तेज़ होने लगी। फर्गु-सन चाहते तो बेलूनको कुछ ऊपर लेजाकर शीतल स्थानमें पहुँच सकते थे, परन्तु यह देखकर कि गैस बढ़ानेमें कुछ जल खर्च होगा—उन्होंने वह विचार एकदम त्याग दिया। दोपहरको देखा कि, विक्टोरिया केवल १२ मील चला है! उन्होंने कहा,—

"अब हम इससे अधिक शीघ्रतासे नहीं जा सकते हैं। पहले बेलून हमारा दास था, परन्तु अब हम उसके दास हो गये हैं!"

जो साथिका पसीना पोंछकर कहने लगा—"उः कैसी गरमी है!"

"इस समय हमारे पास जल होता तो हम सूर्य्यतापसे ही हैड्रोजन गैस प्रस्तुत कर सकते थे—लैम्पोनको ताप देनेकी आवश्यकता न पड़ती। उस दिन पादरीको बचानेमें १ मन १० सेर जल फेंक दिया था। इस समय वह होता, तो उससे कितना उपकार होता।"

"उस जलके लिये क्या तुम्हें अनुताप हो रहा है?"

"अनुताप! अनुताप नहीं ठिक, उस जलको फेंककर हम लोग पादरीको निष्ठुर राक्षसोंके हाथसे बचा सके थे, इस लिए आनन्द हो रहा है।"

क्रमशः नीची भूमि आने लगी। खर्णपर्वत दृष्टिपथसे वहिर्भूत हो गया और अपेक्षाकृत समतल मैदान दिखाई देने लगा। कहीं-कहीं दो एक अधसूखी लतायें वा रसहीन वृक्ष दिखाई देते थे फर्गुसनने कहा—"यह अफ्रिकाकी नग्नमूर्त्ति है। पहले मैं इसी प्रदेशके विषयमें तुमसे कहता रहता था।"

"उत्ताप और बालूके सिवा यहाँ और क्या है?—यह तो होगा ही। जहाँ जम तहाँ तम। इतने दिनोंतक वन-जंगल नदी-नाले, खेत-बगीचे आदि देखकर यही मालूम होता था कि, हम लोग इङ्गलैण्डहीमें हैं, पर अब मालूम हुआ कि हमलोग अफ्रिकामें आये हैं।"

सारे दिन अग्निवर्षा करके सूर्य अस्त हो गया। फर्गुसनने देखा, हम २० मीलसे अधिक नहीं आये हैं।

दूसरे दिन फिर सूर्य उदित हुआ, फिर पूर्ववत् अग्निवर्षा होने लगी। वायुप्रवाह पहलेके समान ही मन्द था। फर्गुसनने दूरवीक्षण यन्त्र लेकर देखा—सामने अनन्त विस्तृत मरुभूमि है! सूर्य्य-किरणोंसे बालूराशि धू धू करके जल रही है!

फर्गुसन एकदम हताश हो गये। वे सोचने लगे—'मैं केनेडीको क्यों साथ लाया? जोको क्यों आने दिया? इनके प्राणनाशका कारण मैं ही हूँ।' कभी सोचते थे—'मैं इस देशकोही क्यों आया? इस विषम कार्य्यमें मैं प्रवृत्त क्यों हुआ? अब भी समय है—लौट जाऊँ। क्या लौट भी न

सकूँगा ? ऊपर जानेपर, मालूम होता है, वेगशाली वायु-प्रवाह मिल जायगा। क्या करूँ ? अच्छा तो क्या ऊपर जाऊँ ? पर जल कहाँ है ?—'

फर्गुसन इतने अधीर होगये थे कि, वे अपने मनका भाव छिपा नहीं सके। साथियोंको सब हाल सुना दिया। जो कहने लगा—"मैं सेवक हूँ। जो प्रभुकी इच्छा हो, वही मेरी इच्छा है।"

"केनेडी तुम्हारा क्या मत है ?"

"तुम जानते ही हो कि, मैं हताश होनेवाला आदमी नहीं हूँ। अपना यात्रा-पथ अत्यन्त विपद्पूर्ण है, यह मैं पहले ही जानता था; पर जब देखा कि तुम अकेले ही इस विपद्में सिर देनेको तैयार हो, तब सब विपत्तियोंको तुच्छ समझकर शीघ्र तुम्हारे साथ चलनेको तैयार हो गया। मैं छायाके समान तुम्हारे साथ रहूँगा। धैर्य्य रक्खो। लौट जानेमें भी फिर उन सब विपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा; जिनको अभी भोगते-भोगते आ रहे हैं। मैं कहता हूँ, आगे चलो। भाग्यमें जो लिखा होगा, सो होगा। चलो, चलो, उत्साह मत त्यागो।"

"भाइयो ! तुम्हें धन्यवाद है। तुम मुझपर इतना विश्वास रखते हो, यह मैं पहले से ही जानता हूँ।"

तीनों यात्रियोंने परस्पर हाथ मिलाया। फर्गुसनने कहा—

"मालूम होता है, हम गिनी उपसागरसे ३०० मीलसे अधिक दूर नहीं हैं।"

यह मरु-भूमि बहुत बड़ी नहीं है! उपसागरके किनारे बहुत दूरतक मनुष्योंका निवास है। यदि हो सकेगा, तो हम उसी ओर जायँगे। क्या उस ओर भी जल न मिलेगा? किन्तु भाई, इस समय वायु-प्रवाह तो अन्य ओरको प्रवाहित होरहा है।"

"यदि इस समय वायु-प्रवाह अनुकूल नहीं है, तो उस के लिये अपेक्षा करनाही भला है। जिस समय अनुकूल प्रवाह मिलेगा, उसी समय चलेंगे।"

यही हुआ। रात्रि निर्विघ्न कट गई। सवेरे फर्गुसनने देखा—केवल तीन सेर जल बाकी है! उस समय मेघहीन आकाशमें सूर्य्य चमक रहा था। विक्टोरिया ५०० फुट ऊपर उठा। किन्तु जैसा नीचे वैसा ऊपर—कहीं वायुका नाम नहीं था!

फर्गुसनने एक लम्बी श्वास छोड़कर कहा—

"इस समय हम मरुभूमिके ठीक बीचमें हैं। देखो, बालूका कैसा विस्तार है। जिस ओर दृष्टि डालो बालू-ही-बालू दिखाई देती है। प्रकृतिकी कैसी विचित्र लीला है! उसका रहस्य कौन जान सकता है? अफ्रिकामें एक ओर सघन वन, सरस मैदान, विपुल नदी-नाले, विशाल झीलें और एक ओर योजनोंके पश्चात् योजन विस्तृत नीरस बालू! जहाँ न तो वृक्ष लता आदि का नाम है, और न जहाँ पशु-पक्षी आदि कोई जीवही निवास करते हैं। यहाँ शीतल जलके बदले

ज्वालामय अग्नि बरसती है। ऐसा क्यों होता है केनेडी, जानते हो?"

"नहीं भाई, इन बातों की मुझे ख़बर नहीं है। पर अवस्था पहलेहीके समान है, इसीलिये चिन्तित हो रहा हूँ। देखो, बेलून तो खड़ा हो गया!"

इसी समय जो कह उठा—"मुझे मालूम होता है कि, पूर्व दिशामें कुछ मेघसा दिखाई देता है।"

"हाँ हाँ, जो ठीक कहता है। फर्गुसन, देखो—देखो।"

"देखा जायगा।"

"क्या आज शुक्रवार है?"

"क्यों जी? इससे क्या?"

"मैं शुक्रवारसे बहुत डरता हूँ, वह बड़ा अशुभ दिन है।"

"आज तुम्हारी यह अलीक धारणा भङ्ग हो जायगी।"

"तथास्तु!—ऐसा ही हो। यह गरमी अब सही नहीं जाती है।"

"केनेडीने कहा—

"इतनी गरमीसे बेलूनको कुछ हानि तो न पहुँचेगी?"

"नहीं—रेशमके ऊपर वार्निश दिया हुआ है। इससे अधिक गरमी पड़े तोभी कुछ भय नहीं है।"

जो आनन्दसे तालियाँ बजाकर कहने लगा—"मेघ-मेघ-वह देखो, आकाशमें एक मेघखण्ड दिखाई देरहा है—अब भय नहीं है।"

दोनों मित्रोंने देखा, सचमुच ही आकाशमें एक मेघ-खण्ड दिखाई देरहा है। वह धीरे-धीरे ऊपरको चढ़ रहा था। फर्गुसन ध्यानपूर्वक उसकी ओर देखने लगे। ११ बजेके समय उसने आकर सूर्य्यको ढँक दिया। किन्तु कुछ समयके उपरान्त दिखाई दिया कि, वह और ऊपर चला गया है। फर्गुसनने गम्भीरतापूर्व्वक कहा—

"इस मेघका कुछ भरोसा नहीं है। यह सबेरे जैसा था, इस समय भी वैसा ही है।"

"तुम्हारा कहना बिलकुल सच है। हमारे भाग्यमें आँधी-पानी कुछ नहीं है!"

"मुझे भी ऐसा ही मालूम पड़ता है। मेघ जैसे-जैसे ऊपरको उठता जाता है—"

बाधा देकर केनेडीने कहा—

"अच्छा, यदि मेघ पास नहीं आता, तो क्या हमलोग मेघके पास नहीं जा सकते हैं?"

"इससे अधिक फल कुछ न होगा। केवल कुछ गैस नष्ट होगा। किन्तु इस समय हम जैसे संकटमें पड़े हुए हैं, उसमें चुप होकर भी नहीं बैठा जा सकता है। अच्छा,—चलो।"

बेलून ऊपर उठने लगा। भूमितलसे १५०० फुट ऊपर जाकर विक्टोरिया मेघके भीतर प्रवेश करने लगा। देखा, न वहाँ हवा है और न उसमें पानी! फर्गुसन की चिन्ता और भी बढ़ गई।

सहसा जौ चिल्लाकर कहने लगा—

"देखो—देखो—केवल हमीं इस देशमें नहीं आये हैं। यह एक दूसरा बेलून भी उड़ रहा है। उसमें भी आदमी हैं!"

केनेडीने कहा—"जौ, तुम पागल तो न हो जाओगे?"

जौ आकाशकी ओर उँगली दिखाकर कहने लगा—"वह देखो—"

केनेडी भी जौ के समान विस्मित होकर कहने लगा—"फर्गुसन, सच तो है—देखो—देखो।"

फर्गुसनने गम्भीरतापूर्वक कहा—"समझ गया। वह सब माया है।"

"माया! माया क्या? देखो न साफ़ दिख रहा है, अपने ही समान एक बेलून है और उसमें कुछ आदमी भी हैं! जिस ओर हम जारहे हैं, उसी ओर वह भी जारहा है।"

फर्गुसनने कहा—"अच्छा, उनको अपना झण्डा दिखाओ।"

केनेडीने झण्डा दिखलाया, प्रत्युत्तरमें उस बेलूनके यात्रियोंने भी झण्डा बतलाया।

फर्गुसनने कहा—"क्यों, डिक्, अब विश्वास हुआ? वह बेलून तुम्हारे ही बेलूनकी प्रतिच्छाया मात्र है।"

जौ कहने लगा—"मुझे तो विश्वास नहीं होता। आकाशमें बेलून का प्रतिबिम्ब! आकाश क्या दर्पण है?"

"अच्छा, तुम हाथ फैलाकर संकेत करो।"

जौने वैसाही किया।

फर्गुसनने पूछा—"क्या देखा ?"

"वेलून ठीक हमारे ही समान नक़ल करता है। सचमुच वह प्रतिच्छाया ही है।"

मरुभूमिमें बहुधा ऐसा हुआ करता है। जिस समय हवा हल्की होती है, उसी समय प्रायः ऐसा दृश्य दिखाई देता है।

कुछ समयके उपरान्त वह दूसरा वेलून अदृश्य होगया। मेघखण्ड देखते-देखते और ऊपर चढ़ गया। थोड़ी बहुत जो हवा थी, वह भी उसके साथ ऊपर चली गई! फर्गुसन विवश होकर नीचे उतर आये।

वेलून बहुत धीरे-धीरे जारहा था। सन्ध्याके कुछ समय पहले जो कहने लगा—"देखो, कुछ दूरीपर दो ताल-वृक्ष दिखाई देते हैं।"

"यदि वे सचमुच वृक्ष हैं, तो वहाँ अवश्यही जल होगा।"

फर्गुसनने दूरवीक्षण द्वारा देखा, सचमुच तालवृक्ष दिखाई देते हैं। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—"मिल गया—जल मिल गया। अब चिन्ता नहीं है।"

जो कहने लगा—"तो अब कुछ पानी पीनेके लिये दीजिए। बड़ी गरमी लग रही है। प्याससे गला सूखा जाता है।"

फर्गुसनने यह देखकर कि अब जल समीपहीमें है। जो को थोड़ासा पानी पीनेके लिये दे दिया।

छः बज गये। विक्टोरिया उन तालवृक्षोंके समीप आया। फर्गुसनने भीत चित्तसे देखा—वे शुष्क वृक्ष हैं! वृक्षके नीचे कुएँके धूप-दग्ध पत्थर पड़े हुए हैं। वहाँ जलका चिह्न भी नहीं था! फर्गुसन अपने साथियोंको यह दारुण सम्वाद नहीं सुनाया चाहते थे, किन्तु उनके चीत्कारसे विस्मित होकर उन्होंने देखा कि, जहाँ तक दृष्टि जाती है मृत मनुष्योंके कङ्काल उस अग्नितुल्य उत्तप्त बालुराशि पर पड़े हुए हैं! शुष्क कुँएके चारों ओर औरभी कुछ नरकङ्काल पड़े हुए थे। उनको देखकर फर्गुसन समझ गये कि, ये प्यास-पीड़ित यात्रियोंके कङ्काल हैं। प्यासे यात्री कुआँ देखकर जलकी आशासे इस ओर आये होंगे। जो दुर्बल थे, वे कुएँ के समीप तक नहीं पहुँच सके—बीचहीमें मर गये। जो सबल थे, वे कुएँ के समीप आकर मृत्युमुखमें पतित हुए! तीनों यात्री इस दृश्यको देखकर एक दूसरेका मुँह ताकने लगे।

केनेडीने कहा—"फर्गुसन, अब जलकी आवश्यकता नहीं है। चलो भागें—यह दृश्य देखा नहीं जाता।"

"नहीं भाई, भागनेसे काम न निकलेगा। जल है या नहीं, यह देखनाही होगा। कुए की तलीकी परीक्षा किये बिना, यहाँसे जाना उचित नहीं है।"

जो और केनेडी बेलून से उतर कर कुए के समीप पहुँचे। देखा, कुएकी तलीमें भी एक बिन्दु जल नहीं है! वे वहाँकी बालू खोदने लगे, किन्तु फिर भी जल नहीं मिला! घोर

परिश्रमसे थककर भी उन्होंने खोदना बन्द नहीं किया । प्रबल वेगसे स्वेद बहने लगा--शरीर अवसन्न होगया—आँखोंके सामने अँधेरा छागया—मस्तक घूमने लगा, किन्तु हाय !! फिर भी जल न मिला !.
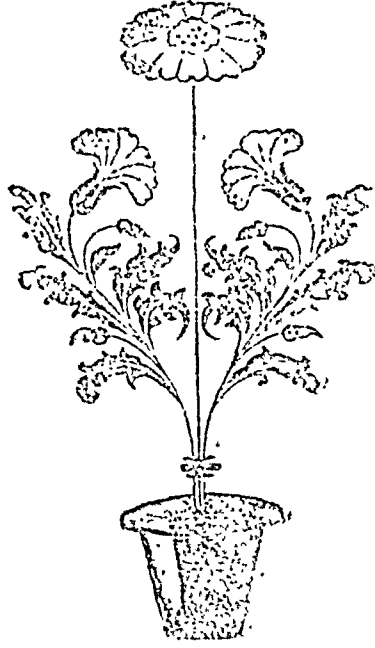
सत्रहवाँ परिच्छेद

जल-जल-कुछ जल।

दूसरे दिन सवेरे फर्गुसनने बेलून छोड़ते समय कहा—"अब हमलोग केवल छः घण्टे और जा सकेंगे। इतनेमें जल न मिला, तो मृत्यु निश्चय समझो!"

फर्गुसनको अत्यन्त चिन्ताग्रस्त देखकर जो कहने लगा—"यद्यपि इस समय वैसी हवा नहीं चलती है, तोभी अब कुछ भरोसा होता है।"

आशा वृथा हुई। हवा नहीं चली। बेलूनके भीतर जाकर तापमान यन्त्र देखा, गरमी १०९ डिग्री थी! केनेडी और जो शय्या पर लेट रहे।

ज्यों-ज्यों समय बीतने लगा, त्यों-त्यों प्यास बढ़ने लगी—मुँह सूखने लगा। उन्होंने जलके बदले शराब पी ली। किन्तु वह अग्नि-तुल्य थी; उससे प्यास शान्त न होकर और बढ़ गई। उस समय पासमें केवल एक सेर जल था—वह भी

अत्यन्त गरम होरहा था। सभी उस गरम जलकी ओर सतृष्ण नेत्रोंसे देख रहे थे, किन्तु उसके स्पर्श करनेका साहस किसीको न होता था। भला, ऐसा कौन साहसी था, जो उसे पीकर अपने शेष बल को भी खो देता ?

फर्गुसन सोचने लगे—बेलूनको अभी तक उड़ाते रहकर मैंने थोड़ा-बहुत जो जल था उसे नष्ट क्यों कर दिया ? जल को गैस न बनाकर, यदि उसे पीने ही के लिये रखता, तो कैसा अच्छा होता ? अधिकसे अधिक ६० मील आगे आये होंगे, यदि इतने न भी आते तो क्या हानि थी ? वहाँ भी जल नहीं था—यहाँ भी नहीं है। यदि हवा आती तो जिस प्रकार वहाँसे जा सकते थे, ठीक उसी प्रकार यहाँसे भी जा सकेंगे। तो फिर यहाँ क्यों आये ? क्यों व्यर्थ इतना जल नष्ट किया ? यदि एक सेर जल और रहता, तो हम सब अन्ततः ७—८ दिन और जीवित रह सकते थे। इतने दिनोंमें न जाने कब कैसा सुयोग मिल जाता। बेलूनको ऊपर लेजानेमें भी जल खर्च हुआ है। वज़न फेंककर भी तो ऊपर जा सकते थे। हाय! उस समय ऐसा क्यों नहीं किया ? जब नीचे आना होता, तब कुछ गैस छोड़कर नीचे आ सकते थे। पर ऐसा भी तो नहीं कर सकते थे, क्योंकि गैसही बेलून के प्राण हैं। जब उसके प्राणही न रहते, तब उस मृत बेलून को लेकर क्या करते ?

फर्गुसन इस प्रकार मन-ही-मन न जाने क्या-क्या सोच रहे

थे। इस चिन्तामें कितना समय व्यतीत होगया है, इसको उन्हें कुछ खबर नहीं थी। अन्तमें उन्होंने स्थिर किया कि, एकबार और अन्तिम प्रयत्न कर देखना चाहिये। कदाचित् ऊपर जानेपर वायु-प्रवाह मिल जाय।

इस समय केनेडी और जो तन्द्राग्रस्त होरहे थे। फर्गुसनने उनसे कुछ नहीं पूछा। वे धीरे-धीरे गैसको उत्ताप देने लगे। बेलून ऊपर उठने लगा। वह ऊपर—और ऊपर—चढ़ता गया, पर उसे कहीं प्रबल हवा न मिली। फर्गुसन उसे ५ मील ऊपर तक ले गये, पर उन्हें वहाँ भी वेगशाली वायुका चिह्न न मिला।

जल खतम होगया। मरुभूमिका अन्तिम बल—वह एक सेर जल भी खतम होगया! गैसके अभावमें कलकी अग्नि बुझने लगी। वैद्युतिक यन्त्र बेकाम होगया। विक्टोरिया धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। अन्तमें वह जिस जगहसे ऊपरको उठा था, ठीक उसी जगह नीचे आकर बालूसे टिक गया!

उस समय दोपहर हो चुके थे। फर्गुसनने हिसाब लगाकर देखा,—यहाँसे च्याड हृद ५०० मील से कम नहीं है। अफ्रिका का पश्चिमी किनारा भी प्रायः ४०० मील होगा! बेलूनके ज़मीन पर टिकते ही जो और केनेडीकी मोह-निद्रा भङ्ग होगई।

केनेडीने पूछा—

"क्या हमलोग इसी जगह रहेंगे ?"

"न रहने का क्या उपाय है ? सेफ़ीनका सब जल खतम हो चुका है।"

तीनों यात्री बेलूनसे नीचे उतरे और उन्होंने अपने वज़नकी बालू बेलूनमें रखदी। घण्टेके पश्चात् घण्टे बीतने लगे। कोई किसीके साथ बातचीत नहीं करता था। रात्रि होते ही जोने कुछ बिस्कुट निकाले, पर किसीने भी उनको हाथ नहीं लगाया। केवल एक-एक गण्डूष गरम जल पीकर रह गये।

सारी रात किसीको नींद नहीं आयी। असह्य गरमी थी। दूसरे दिन सवेरे देखा कि पीनेके लिये केवल आध सेर जल बाकी रह गया है! फर्गुसनने उसे एक ओर रख दिया। तीनों यात्रियोंने अन्तिम समयके सिवा उसे न पीनेकी प्रतिज्ञा की।

कुछ समयके पश्चात् जो चिल्ला उठा—"बापरे बाप! १२० डिग्री गरमी! मेरा दम घुटा जा रहा है—सारे शरीरमें आग सी लग रही है।"

केनेडीने कहा—"बालू अग्निकी भट्टीके समान लाल हो रही है। ऊपर आकाशमें मेघका नाम-निशान नहीं है। ऐसी दशामें मनुष्य क्षण भरमें पागल हो सकता है।"

फर्गुसनने साथियोंको साहस देनेके लिए कहा—"हताश मत होओ। मरुभूमिमें अधिक गरमी पड़नेके पश्चात् वृष्टि होती है।"

"लक्षण तो कुछ नहीं दिखते।"

"हाँ, इस समय तो कुछ लक्षण नहीं दिखते हैं, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वायुमान यन्त्रका पारा निम्नगामी हुआ चाहता है।"

"भाई, यह तुम्हारा भ्रम है।"

"नहीं डिक्, अब भी आशा है—धैर्य रक्खो।"

केनेडी ज्यों ज्यों मेघशून्य निर्मल आकाश और दिग-दिगन्त-विस्तृत बालुराशि पर दृष्टि डालते थे, त्यों-त्यों उनकी आशा निराशामें परिणत होती जाती थी। वे क्रमशः विकार-ग्रस्त हो चले।

रात्रि आई। फर्गुसनने सोचा,—यहाँ-वहाँ टहल-फिर लेनेसे कष्ट बहुत कुछ घट जायगा। उन्होंने साथियोंको पुकारा—

केनेडीने कहा—"मैं एक पैर भी नहीं रख सकता हूँ—मुझमें शक्ति नहीं है।"

जोने उत्तर दिया—"मुझे निद्रा आ रही है।"

फर्गुसनने फिर कहा—"ज़रा चल फिर लेनेसे सारी क्लान्ति मिट जायगी। इस समय सोना अच्छा नहीं है। चलो, कुछ टहल आवें।"

कोई जानेको राज़ी नहीं हुआ। फर्गुसन अकेले ही चल पड़े। ऊपर नक्षत्र-जड़ित आकाश और नीचे सुदूर विस्तृत मरुभूमि! पशु-पक्षी आदिका नाम नहीं था, चारों ओर भयङ्कर सन्नाटा छाया हुआ था। फर्गुसन अकेले जा रहे थे।

पहले तो उनके पैर नहीं उठते थे—एक-एक क़दम बढ़ाना कठिन दिखता था; पर कुछ दूर चलनेपर उनकी लुप्त शक्ति फिर जागरित हो उठी। वे अधिक दूर नहीं गये थे, परन्तु कितनी दूर निकल आये हैं, इसकी उन्हें कुछ ख़बर नहीं थी। चलते-चलते अकस्मात् उनका माथा घूमने लगा—आँखोंके सामने अँधेरा छा गया—शरीर अवसन्न हो गया!—दोनों पैर काँपने लगे। उस भीषण नीरवताने मानो उनको बिल्कुल भयभीत कर डाला था। पीछे फिरकर देखा, विक्टोरियाका चिह्न भी दिखाई नहीं दिया। फर्गुसन लौटनेकी चेष्टा करने लगे, परन्तु वे लौट नहीं सके। साथियोंको ज़ोर-ज़ोरसे पुकारा, पर कहीं किसी ओरसे कुछ उत्तर नहीं मिला—प्रतिध्वनि भी नहीं हुई! फर्गुसन उस गरम बालू पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े!

जिस समय उनकी मूर्च्छा भंग हुई, उस समय आधी रात हो चुकी थी। फर्गुसनने नेत्र खोलकर देखा, तो अपनेको उसी बालूपर पड़ा पाया। जो व्याकुल दृष्टिसे उनकी ओर देख रहा था।

जो कहने लगा—"आपको क्या हो गया था?"

फर्गुसन—"कुछ नहीं जो, अकस्मात् बलशून्य होकर गिर पड़ा था?"

"जो—अच्छा, आप मेरे कन्धेपर चढ़ जाइये, मैं आपको विक्टोरियाके पास ले चलूँ।"

फर्गुसन चुपचाप जोके कन्धेपर चढ़ गये। जो चलने लगा। उसने जाते-जाते कहा—"इस प्रकार कितने दिन कटेंगे? यदि हवा न चली, तो हम सबको इसी जगह मरना होगा।"

फर्गुसनने कुछ उत्तर नहीं दिया। जो कहने लगा—"आपके कल्याणके लिए मैं अपने जीवनको उत्सर्ग करूँगा। दो बन्धुओंके लिए एक का प्राण विसर्जन करना उचित ही है। मैं यही करूँगा।"

"इससे क्या होगा? प्राण देनेसे क्या हवा चलने लगेगी?"

"कुछ खानेकी सामग्री साथ लेकर पैदल यात्रा करूँगा। संभव है, खोजनेसे कहीं समीपहीमें कोई गाँव मिल जाय। गाँव मिल जायगा, तो मैं ग्रामवासियोंसे किसी प्रकार अपने मनका भाव व्यक्त करके आपके लिए जल ले आऊँगा। यदि इतनेमें वायुप्रवाह मिल जाय, तो आप मेरी राह न देखकर बेलून छोड़ देना।"

"यह असंभव है जो, तुम हम लोगोंको छोड़कर मत जाओ।"

"कुछ उपाय तो करना ही होगा। मेरे जानेसे क्या हानि है?"

"नहीं जो,—ऐसा न होगा। इस विपत्तिके समय हम लोगोंको एक साथ रहनाही उचित है। यदि मरेंगे, तो

एक साथही मरेंगे। धैर्य धरो, धैर्यके सिवा और उपाय ही क्या है?"

"अच्छा, आपके कहनेसे मैं एक दिनके लिए और ठहरा जाता हूँ। कल मङ्गलवार है। यदि मङ्गलवारको भी हवा न चली, तो परसों बुधवारके दिन सवेरे मैं अवश्यही चला जाऊँगा। किसी बाधा-विघ्नको न मानूँगा।"

इस प्रकार बातें करते-करते दोनों बेलूनके पास आगये। रात भी इसी प्रकार बीत गई।

सवेरा होतेही फर्गुसन वायुमान यन्त्रकी परीक्षा करने लगे। कुछ भी परिवर्त्तनके लक्षण दिखाई नहीं दिये! फिर वे नीचे उतरकर आकाशकी अवस्था जाँचने लगे। देखा, सूर्य्य वैसाही प्रखर है—बालुराशि वैसीही उत्तप्त है—आकाश वैसाही स्वच्छ है! वे मन-ही-मन सोचने लगे—'क्या सचमुचही हम लोगोंका अन्त समय आगया है!'

जो चुपचाप बैठा था। वह मन-ही-मन यात्रा-सम्बन्धी पूर्व बातें सोच रहा था। केनेडीकी बुरी दशा थी। प्याससे उसका गला सूख गया था। हृदय फटा जाता था,—मुँहसे बात करनेकी शक्ति नहीं थी। बेलूनमें कुछ जल रक्खा है, यह बात सबको विदित थी। उस चुल्लू-चुल्लू जलको पीकर अन्तत: कुछ समयके लिए कष्ट कम करनेकी इच्छा सबके मनमें उत्पन्न हो रही थी। वे एक दूसरे की ओर तीव्र

दृष्टिसे देखने लगे। बीच-बीचमें उनके मनमें पाशविक भाव जागरित होने लगा।

केनेडी आहत सिंहकी नाईं होगया था। वह प्राय: दिन भर प्रलाप किया करता था। जल—जल—कुछ जल दो। कण्ठ सूख गया है—हृदय फटा जाता है—एक विन्दु जल दो! एक जगह बैठे उसे चैन नहीं पड़ता था। कभी वह उस अग्नितुल्य बालूपर लेटता और कभी बेलूनपर चढ़ जाता था। कभी यन्त्रणासे अस्थिर होकर अपनी उँगलियाँ चबाने लगता था। यदि उसके हाथमें छुरी होती, तो वह नाड़ियों को चीरकर अपना रुधिर पिये बिना न रहता!

केनेडी शीघ्र ही दुर्बल होकर शय्याग्रस्त होगया। दो-पहरके बाद उसकी निर्बलता और बढ़ गई। इधर जौका भी बुरा हाल था। उसकी बुद्धि भ्रमित होगई थी। वह बुद्धि-भ्रमसे देखने लगा कि, सामने दिग-दिगन्त-विस्तृत शीतल जल भरा हुआ है! वह क्षण भर भी विलम्ब न करके, झट उस जलको पीनेके लिए बेलूनसे नीचे कूद पड़ा। नीचे आते ही उत्तप्त बालूसे उसका शरीर झुलस गया। वह भागकर फिर बेलूनपर जा चढ़ा। फिर वही भ्रम हुआ! वह विरक्त होकर कहने लगा—"बहुत खारा है—इसे कौन पियेगा?"

फर्गुसन और केनेडी मृतवत् पड़े थे। जौ अपनी शक्ति-हीन देहको धीरे-धीरे फिर बेलूनपर चढ़ा लेगया और बहुत फुरतीके साथ जलकी बोतलको लेकर जल पीने लगा! केनेडी

ने उसे जल पीते देख लिया। वह भी किसी प्रकार ज़ोर करके उसके पास पहुँचा और ज़ोरसे कहने लगा—

"दो—दो—मुझे भी दो !"

जो उस समय विश्व—संसारको भूलकर जलपान कर रहा था।

केनेडीने फिर कहा—

"जो, तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ—विन्ती करता हूँ—कुछ दो। अधिक नहीं जरा-सा। प्राण जाते हैं—रक्षा करो—थोड़ा जल दो—"

जोने रोते-रोते जलकी बोतल—अपनी शेष आशा—केनेडी के हाथमें दे दी।

अठारहवाँ परिच्छेद ।

तूफान ।
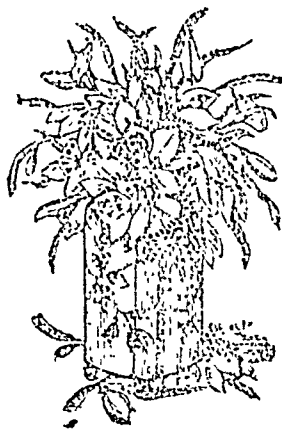
रात किस प्रकार व्यतीत हो गई, यह किसीको विदित नहीं हुआ। सवेरे सूर्यकी गरमीसे जब समस्त मरुप्रदेश फिर उत्तप्त होगया, तब जो और केनेडीकी मूर्च्छा भंग हुई। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा, मानो पैरकी उँगलीसे लेकर क्रमशः सारा शरीर शुष्क हो रहा है। जोने उठनेकी चेष्टा की, परन्तु वह उठ नहीं सका। लौटकर देखा, फर्गुसन बेलूनमें बैठे हुए एकटक दृष्टिसे आकाशकी ओर देख रहे थे—उनके दोनों नेत्र पलक-हीन और निश्चल थे।

केनेडीकी स्थिति करुणाजनक थी। वह पिञ्जर-बद्ध सिंहकी नाईं इधर-उधर सिर हिला रहा था। अकस्मात् उसकी दृष्टि पास रक्खी हुई बन्दूकपर पड़ गई। वह उन्मत्तकी नाईं उस बन्दूकको उठाकर आत्महत्या करनेकी चेष्टा करने लगा। जो पास ही बैठा था। उसने झपटकर बन्दूक पकड़ ली।

और डाँटकर कहा—"क्यों मिष्टर केनेडी, यह क्या करते हो ?"

"छोड़दो—छोड़ दो—दूर हट जाओ !"

केनेडीने जोको ज़ोरसे धक्का दिया। पर जोने किसी प्रकार उसे नहीं छोड़ा।

उस समय दोनोंमें मल्लयुद्ध प्रारंभ होगया। केनेडीने आत्महत्या करनेकी प्रतिज्ञा कर ली थी, पर जो भी उसे विफल करनेके लिये प्राणपनसे चेष्टा कर रहा था। अभीतक फर्गुसनकी दृष्टि इस ओर नहीं थी, वे पूर्ववत् स्थिर दृष्टिसे आकाशकी स्थिति देख रहे थे।

मल्लयुद्ध करते-करते सहसा केनेडीके हाथसे बन्दूक छूटकर नीचे गिर पड़ी और शीघ्रही एक ज़ोरकी आवाज़ होगई !

बन्दूकका शब्द सुनकर फर्गुसन चौंक पड़े। उन्होंने आकाशकी ओर हाथ फैलाकर बज्रकण्ठसे कहा—

"देखो—देखो—वह दूर आकाशमें क्या दिख रहा है ?"

फर्गुसनके उपरि-लिखित उत्तेजना-पूर्ण वाक्य सुनकर केनेडी और जो एक दूसरेको छोड़कर उसी ओर देखने लगे। देखा, मरुभूमि मानों सहसा सजीव हो उठी है ! भयंकर तूफानके समय जिस प्रकार समुद्रमें पर्वताकार लहरें उठा करती हैं, उसी प्रकार मरुसागरमें भी बड़े-बड़े पर्वतोंके समान बालुराशि उमड़ती आ रही है ! वायु-ताड़ित बालुराशि भीषण तरङ्गोंके समान अग्रसर हो रही थी। देखते-देखते समस्त आकाश धूलपटसे आच्छादित होगया—सूर्य्य ढँक गया।

उस समय फर्गुसनके दोनों नेत्र अग्निके समान चमक रहे थे! उन्होंने उच्चकण्ठसे कहा—"बालूका तूफान आ रहा है!"

जो चिल्ला उठा—"अरे यह तूफान है!"

केनेडीने कहा—"अच्छा हुआ! अच्छा हुआ! हमारा काल आ रहा है!"

फर्गुसनने बेलून परका वज़न फेंकते-फेंकते कहा—"काल नहीं केनेडी, परमबन्धु! मालूम होता है, यह तूफान अपनी रक्षाके लिए ही आ रहा है। आओ, जल्दी आओ। वज़न फेंको।"

फर्गुसनने कहा—"जो, पचीस सेर।"

इस वार जोने बिना वाक्य-व्ययके २५ सेर सोना उठाकर नीचे फेंक दिया। देखते-देखते वह प्रवल तूफान पास आगया, एक प्रवल धक्का लगा, बेलून काँप उठा और शीघ्रही तूफान के साथ-साथ उल्काके समान उड़ने लगा!

"जो—फेंको—फेंको—और फेंको!"

फर्गुसनका आदेश पातेही जोने औरभी बहुतसा वज़न फेंक दिया। बेलून क्षण भरमें उस उत्तप्त वायुस्तरके ऊपर चढ़ गया और वायु-ताड़ित बालू-राशिके ऊपर भीमवेग से चलने लगा!

फर्गुसन केनेडी और जो निर्वाक होकर विस्मयसे एक दूसरेका मुँह ताकने लगे। आशा और उत्साहसे तीनों उड़ाकोंका मुखमण्डल प्रसन्न हो उठा।

तीन बजेके समय तूफान थम गया। आकाशने शान्त-मूर्त्ति धारण की। विक्टोरिया उस समय अचल होकर एक उर्वरा भूमि पर १०० हाथके ऊपर मँडरा रहा था। उन्होंने देखा. वायु-ताड़ित बालुराशि नाना स्थानोंपर एकत्रित होकर बेलूनके दाहिने-बायें तथा सामने सैकड़ों हज़ारों छोटे-छोटे पर्वतोंके रूपमें परिणत होगई है। समीपवर्त्ती पत्र-पुष्प-सुशोभित वृचलतादि-परिपूर्ण उपजाऊ खेत समुद्रके बीच द्वीपके समान दिखाई देते हैं।

फर्गुसनने कहा—"यहाँ निश्चय जल है।"

उन्हों ने कुछ गैस छोड़कर बेलूनको नीचे उतारा। जो और केनेडी नीचे कूद पड़े। फर्गुसनने कहा—"तूफान का कैसा दारुण वेग है। ४ घण्टेमें हम २४० मील मार्ग आये हैं।"

केनेडी और जोको जल की खोजमें जाते देखकर फर्गुसन्-ने कहा—"बन्दूक लेते जाओ। देखो, खूब सावधानीके साथ जाना,—चारों ओर दृष्टि रखना।"

वे दोनों शीघ्रही जलकी खोजमें निकल पड़े। जल—जल—कुछ जल! इस समय केवल एक जल ही उनका ध्येय हो रहा था। सामने वृच-लता-परिवेष्टित स्थानको देखकर वे समझ गये कि यहाँ निस्सन्देह जल है। प्यासकी आँचसे उनके गलेकी नली तक सूख गई थी—जीभमें चत पड़गये थे—शरीर जल रहा था। यह समय धैर्य्य तथा विवेचना

का नहीं था। केनेडी और जो उस हरेभरे स्थानकी ओर अग्रसर हुए। यदि वे धीरे-धीरे जाते तो देखते कि, उस सिक्त भूमिपर बड़े-बड़े पद-चिन्ह अङ्कित हैं।

अरे! यह किसकी गर्जना है? दोनों ठिठुरकर खड़े हो गये। उस भीषण गर्जनासे वृक्ष-लतादि सब काँप उठे। फिर—फिर—लगातार कई बार फिर उसी प्रकार भीषण गर्जना हुई।

जो कहने लगा—"पासही कहीं सिँह गर्ज रहा है!"

केनेडीपर मानो सहसा वज्राघात हुआ। वह सोचने लगा कि कुछ दूर और जातेही मनभाया शीतल जल पीने को मिलता, पर बीच हीमें यह विघ्न कहाँसे आगया। उन्होंने उत्तेजित होकर कहा—

"कुछ भय नहीं है—आगे चलो।"

दो चार पैर आगे रखते ही उन्होंने देखा कि, सामने ताल-वृक्षके नीचे एक भयंकर शेर खड़ा है! पूँछका झब्बा उसके सिरपर लटक रहा है। दोनों नेत्र दो अङ्गारोंके समान चमकते हैं और लम्बी विकराल जिह्वा लपलपा रही है! पलक गिरते ही वह इन पर लक्ष्य करके कूद पड़ा!

गुड़म्......बीचहीमें केनेडीकी बन्दूककी ध्वनिसे आकाश प्रतिध्वनित हो उठा।

गोलीके आघातसे पशुराज एक विकट चीत्कार करके धराशायी होगया और शीघ्रही प्राणहीन होगया।

केनेडीने इस ओर भ्रूक्षेप भी न किया। वह एक दौड़में कुएके पास जा पहुँचा और सीढ़ियोंको जल्दी-जल्दी पार करके जी भर शीतल जल पीने लगा। जोने भी यही किया।

जल पीते-पीते श्वास लेनेके लिए मुँह उठाकर जो कहने लगा—"सावधान! एकदम अधिक जल मत पी जाना; नहीं तो इसी समय नुक़सान दिखलावेगा।"

केनेडीने कुछ नहीं सुना। वह अञ्जली भर-भर कर जल पीनेमें लगा था। जब दोनों मित्र जल पीकर सन्तुष्ट होगये, तब उन्होंने अपना-अपना हाथ-मुँह धोया—सिर पर से खूब जल डाला और सारे शरीर पर भी छींटे डाले।

जो कहने लगा—"डाक्टर फर्गुसन जलकी आशामें बैठे होंगे—चलो, जल्दी जल ले चलें।"

केनेडीने झट बोतलमें जल भर लिया और फिर दोनों आदमी सीढ़ियाँ लाँघते हुए ऊपरको चढ़ने लगे।

केनेडी बीचहीमें रुककर खड़ा होगया—"यह कौन?"

देखा, एक और प्रकाण्ड सिंह कुएके द्वार पर खड़ा है!

सिंह एक विकट गर्जन कर उठा!

केनेडीने कहा—"यह सिंहनी है! बहुत बिगड़ी हुई दिख रही है।"

एक क्षण-भरके लिये केनेडीके नेत्र मुँद गये। उसने झट सम्हल कर बन्दूक़में कार्तूस लगाया और गोली छोड़ दी। सिंहनी आहत होकर भाग गई।

केनेडी आगे बढ़ा। ऊपर-जाकर कहा—"जो, चले आओ—वह भाग गई।" "नहीं-नहीं-अभी न आऊँगा। वह मरी नहीं है। यहीं-कहीं पासही छिपी होगी। जो आगे जायगा, वह उसीकी गर्दन पर कूद पड़ेगी।"

"फर्गुसन प्याससे विकल हो रहे होंगे, अब अधिक विलम्ब करना उचित नहीं है। चलो, जल्दी चलो।"

"सिंहनीको मार कर ही चलेंगे।"

ऐसा कहकर उसने अपना कोट उतार कर बन्दूककी नालसे बाँध दिया और फिर केनेडीसे कहा—"आप भी तैयार रहिए—"

क्षण-भरमें कुपिता सिंहनी बन्दूकके ऊपर आपड़ी! केनेडी तैयार ही थे, उन्होंने झट गोली छोड़ी। सिंहनी चीत्कार करते-करते कुएमें जा छिपी। धक्का खाकर जो भी गिर पड़ा। उसे आघात पहुँचानेके लिये सिंहनीने अपना पञ्जा उठाया—जोके नेत्र मुँद गये!

इस समय फिर एक बन्दूककी आवाज़ हुई। सिंहनीका शेष आर्तनाद कुएके भीतर-ही-भीतर गूँजने लगा। जो फलाँग मार कर ऊपर भाग आया और वेलूनके पास आकर जलकी बोतल फर्गुसनके हाथमें देदी।

उन्नीसवाँ-परिच्छेद ।

अज्ञात प्रदेश ।

रात्रि निर्विघ्न व्यतीत होगई। सवेरा होते ही नव-सूर्य्य प्रखर किरण-जाल फैलाकर उदित हुए। फर्गुसन वायु-प्रवाह की राह देख रहे थे। सारा दिन बीत गया। दुर्बल शरीर धीरे-धीरे सुस्थ और सबल होगया। लुप्त शक्ति फिर आगई। शक्तिके साथ-साथ भरोसा और भरोसेके साथ-साथ साहसने आकर दर्शन दिये। मनुष्य अल्प-कालहीमें अतीत बातें भूल जाता है। क्रमशः सन्ध्या हुई। उज्ज्वल नक्षत्र-जड़ित आकाशके नीचे बैठकर तीनों उड़ाके नाना तरहकी बातें करने लगे। रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत होगई।

दूसरे दिन सवेरे भी आकाशमें किसी प्रकारके परिवर्त्तनके लक्षण दिखाई नहीं दिये। हवा बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। फर्गुसन कुछ उद्विग्न होकर कहने लगे—"जलके अभावमें अभी मरते-मरते बचे हैं, अब क्या भोजनके बिना इस मरुभूमिमें प्राण देने पड़ेंगे।"

दोपहरको समय फार्गुसनने यात्राका प्रबन्ध कर लिया। आवश्यकतानुसार जल भर कर रख लिया। कुछ वज़न फेंक-कर बेलूनको और भी हल्का कर दिया। इस बार सुवर्ण-भार फेंकनेमें जी को बहुत कष्ट हुआ। पर उपाय क्या था? वज़न फेंके बिना बेलूनका ऊपर उठना असंभावित था।

फार्गुसन यात्राका सब प्रबन्ध करके बैठ रहे थे। रात्रिके अन्तिम प्रहरमें वायु-प्रवाह प्रबल वेगसे बहने लगा। बेलून वायुके वेगमें पड़कर शीघ्रगतिसे उड़ रहा था। प्रातःकाल स्थान-स्थानपर वृक्षलतादि दृष्टिगोचर होने लगे। कुछ दूरीपर हरी-हरी शोभा लिए हुए पर्वत-श्रेणियाँ दिखाई देती थीं।

फार्गुसनने कहा—

"हमलोग मरुभूमि पार कर चुके।"

दोनों साथी आनन्दसे तालियाँ बजाने लगे। इस समय विक्टोरिया एक छोटी झीलके ऊपरसे जारहा था। झीलके किनारे सघन घासमें दीर्घकाय जलचर जीव आनन्दसे विचरण कर रहे थे। काले और धूसर रंगके बड़े-बड़े हाथियोंका समूह वृक्षोंको चूरमूर करता हुआ यहाँ-वहाँ विचरण कर रहा था।

केनेडी आनन्दसे अधीर होकर कहने लगा—"देखो—देखो—कैसे सुन्दर हाथी हैं! यदि नीचे उतर सकता—कैसी शिकार चली जारही है!"

बेलून चलने लगा। पर्वतके वृक्षाच्छादित भागसे छोटी-बड़ी अनेक जलधारायें प्रवाहित होकर झीलमें गिरती थीं।

लाल, हरे, पीले, नीले आदि कई रङ्गके सुन्दर पक्षी कलरव करते हुए एक वृक्षसे दूसरे वृक्ष पर और एक शैलसे दूसरे शैल पर जाते हुए दिखाई देते थे।

बारह घण्टा व्यतीत होगये। इस समय विक्टोरिया एक नदी वाले प्रदेशमें आ पहुँचा। यहाँसे बहुत दूरी पर अल-थिटका पर्वतकी शिखर दिखाई देती थी। फर्गुसनने कहा—

"कोई यूरोपीय पर्य्यटक अभी तक इस पर्वतके ऊपर नहीं जासका है। सुना जाता है कि, अफ्रिकाके पश्चिमांशकी समस्त नदियां इसी पर्वतसे निकलती हैं।"

वेलून क्रमशः अग्रसर होने लगा। सन्ध्याके कुछ समय पहले सिनिक् पर्वतकी दो चोटियाँ दिखाई देने लगीं। फर्गुसनने एक ऊँचे वृक्षकी शाखासे वेलून बाँध दिया। इस समय हवाका बहुत ज़ोर था। वायुके प्रबल झकोरोंसे वेलून ऐसा कम्पित होने लगा कि, उससे क्षण-क्षण पर गिरनेकी आशङ्का होती थी। वेलूनका ठहराना उस समय अत्यन्त विपद्‌जनक और कष्टकर प्रतीत होरहा था।

दूसरे दिन सवेरे वायुका वेग कुछ कम हुआ। वेलून तेज़ीसे चलने लगा। वायु-प्रवाह वेलूनको सिनिक् पर्वतकी ओर लिये जाता था। फर्गुसनने वेलूनकी गति परिवर्त्तित करनेके लिये बहुत चेष्टा की, परन्तु वे सफल-मनोरथ नहीं हुए। सिनिक् पर्वत चाड ह्रद (झील) और नाइगर नदीके

मध्यभागमें एक दुर्गम दीवारके समान खड़ा था। विक्टोरिया अल्पकालहीमें मिलिक् पर्वतके समीप जा पहुँचा। फर्गुसन गैसको ताप देने लगे। बेलून ८००० फुट ऊपर उठ गया। शीघ्रही दारुण शीत मालूम पड़ने लगी। सबने अपने-अपने कम्बल ओढ़ लिये। फर्गुसन पर्वत लाँघ कर सन्ध्याके पहले एक खुले मैदानमें जा पहुँचे और वहीं लङ्गर बाँध दिया।

दूसरे दिन जब ये लोग मोसिइया नगर पहुँचे, उस समय सवेरा हो चुका था। देखा, दो उच्च पर्वतोंके मध्य मोसिइया नगर अवस्थित है। एक ओर सघन वन और दूसरी ओर कीचड़मय विस्तृत मैदान था। इस नगरमें प्रवेश करनेका केवल एकही मार्ग था। इस समय मोसिइयाके प्रधान शेख़ दल-बल सहित उसी मार्गसे नगर-प्रवेश कर रहे थे। उनके शरीर-रक्षक घुड़-सवार सुन्दर एक रङ्गकी पोशाक पहने हुए आगे-आगे जारहे थे। उनके पीछे एक बाजेवालोंका समूह बंशी बजाता था। और सबसे आगे कुछ सशस्त्र लोग रास्तेके दोनों बाजुओंके वृक्षोंकी शाखा-प्रशाखाओंको काट कर रास्ता साफ़ कर रहे थे।

यह जुलूस देखनेके लिये फर्गुसन बेलूनको बहुत नीचे ले आये। जब नीग्रो लोगोंने देखा कि बेलून क्रमशः वृहदाकार होता जाता है, तब वे भयभीत होकर भागने लगे। शेख़ वहीं खड़े होगये और उन्होंने अपनी बन्दूक़में गोली भरली।

फर्गुसनने १५०' फुटकी उँचाईसे अपनी भाषामें शेख़का

अभिनन्दन किया। स्वर्गसे मङ्गलध्वनि होते देखकर शख घोड़े परसे उतर पड़ा और उसने ज़मीन पर पड़कर साष्टाङ्ग प्रणाम किया।

केनेडीने पूछा—"क्या यहाँ किसी दिन कोई अँगरेज़ आया था?"

फर्गुसन—"हाँ, मेजर डेनहम आये थे। वे इसी जगह अत्यन्त विपद्ग्रस्त हुए थे। उनके पास जो कुछ माल-असबाब था वह सब लुट गया था और वे एक घोड़ेके पेटके नीचे छिपकर बचे थे।"

"अब हम किस ओर जारहे हैं?"

"हम वार्घिम राज्यकी ओर जारहे हैं। ओगेल वहाँ गया था। कोई-कोई कहते हैं कि, वह वहाँ मारा गया था और कोई-कोई कहते हैं कि बन्दी हुआ था!"

"सामने जो उपजाऊ प्रदेश दिखाई देरहा है, यह कौन प्रदेश है? वाह! कैसे सुन्दर फूल फूले हैं! यहाँ कपास खूब पैदा होती है। नील भी खूब दिख रही है।"

इसका नाम माण्डारा है। डाक्टर बार्थने इस प्रदेशका जो वर्णन लिखा है वह अक्षरशः सत्य निकला। देखो, इस नदीका नाम जिसमें कुछ डोंगी बहती हुई दिख रही हैं—सेरी है।"

अल्पकालहीमें वायु-प्रवाहको मन्द होते देखकर फर्गुसनने कहा—"हमलोग क्या यहीं अटक जायँगे?"

"जलकी कमी तो है हो नहीं, यदि अटक भी जायँ तो डर किस बातका ?"

"जलका नहीं डिक्, मनुष्योंका भय है!"

पासही एक नगर देखकर जौ कहने लगा—"यह कौनसा नगर है ?"

"यह कर्नाक है। इसी जगह हतभाग्य पर्य्यटक टूलीकी बलि हुई थी। यदि इस प्रदेशको यूरोप का समाधि-क्षेत्र कहें तो कह सकते हैं।"

बेलून कर्नाक पर आपहुँचा। उड़ाकोंने देखा, नीग्रो कोष्टी वृक्षतन्तु-निर्म्मित वस्त्रोंको कूट-कूटकर नरम कर रहे हैं। नगरके विस्तृत राजपथ और पथके दोनों बाज़ू नागरिकोंके श्रेणी-बद्ध गृह स्पष्टरूपसे दिख रहे थे। एक जगह दास-विक्रय होरहा था। बेलून देखकर नीग्रोगण विकट चीत्कार करने तथा भागने लगे।

फर्गुसनने बेलूनको और नीचे उतारा। देखा, नगर-कोतवाल एक नीले झण्डेको हाथमें लिये हुए घरसे बाहर निकल रहा है। शीघ्रही भयसूचक बाजे बजने लगे। शिङ्गेकी आवाज़ से दिगमण्डल व्याप्त होगया। कुछ नीग्रो कोतवालको घेरकर खड़े होगये। नागरिकोंका ललाट ऊँचा, बाल घुँघराले और नासिका ऊँची थी। देखनेसे वे बुद्धिमान् और गर्वित मालूम होते थे। धीरे-धीरे नागरिकोंकी सेना इकट्ठी होने लगी। बेलूनके साथ युद्ध करनाही उनका उद्देश्य जान पड़ता था।

जोंने कई रङ्गके रूमाल हाथमें लेकर हिलाना प्रारम्भ किया। उसका संकेत सन्धिके लिये प्रस्ताव करना था। पर वे लोग इस संकेत को नहीं समझ सके। कोतवालने समवेत जन-मण्डलीसे कुछ बातें कहीं। उनमेंसे फर्गुसन केवल एक को समझ सके। कोतवाल नीग्रो लोगोंको स्थान-त्याग करनेका आदेश दे रहा था।

दुर्जनोंका सङ्ग त्यागनेके लिये फर्गुसन सदैव तैयार रहते थे; पर बेलूनके चलने योग्य हवा नहीं चलती थी। चेष्टा करने पर भी बेलून नहीं उड़ा!

काफिर लोग अत्यन्त कुपित हो उठे। कोतवालके परिषदोंने क्रोधसे गर्जन करना प्रारंभ कर दिया।

पारिषदोंके कपड़े एक भिन्न प्रकारके और नवीन थे। वे प्रत्येक पाँच-पाँच, छह-छह जामा पहिने थे। फर्गुसनने कहा—

"बड़ा पेट और पहने हुए जामोंकी संख्या ही परिषदोंके भिन्न-भिन्न पदों-उपाधियोंको सूचित करती है। जिनका उदर बड़ा नहीं होता है, वे नाना उपायोंसे वृकोदार रूप धारण करके सर्व साधारणके सामने उपस्थित होते हैं।"

जब उन्होंने देखा कि, हमारे भय-प्रदर्शनसे भी दैत्य नहीं हटा, तब उन्होंने तीरन्दाज़ोंको बुलाकर खड़ा किया। उस समय बेलून धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। कोतवाल

स्वयं एक बन्दूक लेकर बेलूनसे निशाना मिलाने लगा। यह देख, केनेडीने अपनी एकही गोलीसे उसकी बन्दूक तोड़ दी। इस आकस्मिक विपद्को देखकर युद्धार्थी काफिरगण अपना-अपना प्राण लेकर भाग गये।

रात्रि आई। उस समय भी वायुका वेग नहीं बढ़ा था। बेलून नगरसे ३०० फुट ऊपर उड़ रहा था। नगरमें प्रकाश नहीं हुआ—किसी प्रकारका शब्द भी नहीं सुन पड़ा।

आधी रात होगई। सहसा उन्होंने देखा कि समग्र कर्नाक नगरमें अग्निकाण्ड उपस्थित होगया है! चारों ओर से असंख्य अग्निमुख बाण धीरे-धीरे ऊपरको उठ रहे हैं! भीषण चीत्कार और सघन बन्दूकोंकी ध्वनिके मध्य वे असंख्य बाण मानो बेलूनकी ओर लक्ष्य करके ही आरहे थे!

थोड़ी देरके बाद फर्गुसन समझ गये कि, ये बाण नहीं कबूतर हैं। सैकड़ों—हज़ारों कबूतरोंकी पूँछमें दाह्य पदार्थ बाँधकर काफिरोंने बेलूनपर आक्रमण करनेके लिए उन्हें उड़ाया है। कबूतरोंका समूह बेलून देखकर भयसे दूर दूर उड़ने लगा। उस समय ऐसा मालूम होता था कि, अन्धकारयुक्त आकाशमें मानों सैकड़ों-हज़ारों अग्निरेखायें तिर्यग्भावसे नृत्य कर रही हैं। क्रमशः कबूतरोंने आकर बेलूनको चारों ओरसे घेर लिया। बेलून उस अनल-समुद्रमें बहने लगा।

फर्गुसन कुछ वज़न फेंककर क्षण भरके भीतर बहुत ऊपर चले गये। कबूतरगण प्रायः दो घण्टा तक शून्य आकाशमें भ्रमण करके अन्तमें नीचे उतर गये।

फर्गुसनने कहा—"अब चिन्ता नहीं है। चलो सोवें। इनमें कौशल बहुत है। युद्धके समय ये लोग इसी प्रकार शत्रुके घरोंमें आग लगा देते हैं।"

रात अच्छी तरह व्यतीत होगई। सवेरे फर्गुसनने कहा—

"डिक्, अपना भाग्य फिर गया। मालूम होता है, हम लोग आज ही प्याडङ्गद देख सकेंगे।"

"इतने दिन पहाड़, जङ्गल, मैदान और मरुभूमि परसे चले, अब जलके ऊपरसे जाना विशेष कौतूहलजनक प्रतीत होगा।"

"हम लोगोंने १८ अप्रेलको जंज़ीबार छोड़ा था। आज १२ वीं मई है। बेलूनके ऊपर कितने दिन बीत गये! अब १० दिनके भीतर ही हम लोग पहुँच जायँगे।"

"कहाँ?"

"यह नहीं कह सकते।"

इस समय विक्टोरिया सेरी नदीपरसे जा रहा था। नदीके दोनों किनारे बड़े-बड़े वृक्षोंसे ढके थे। नाना रंग और नाना प्रकारकी लतायें इन वृक्षोंपर चढ़कर नदीके तीरको अत्यन्त मनोरम बना रही थीं। जिस ओर दृष्टि जाती थी—उसी ओर

वन—उसी ओर सुगन्ध और उसी ओर शोभा दिखाई देती थी। स्थान-स्थान पर दो एक बड़े-बड़े मगर किनारों पर आकर धूप लेते दिखाई पड़ते थे—कहीं-कहीं श्वास लेकर जल में डुबकी लेते हुए दृष्टिगोचर होते थे।

८ बजेके समय वेल्न घाड ह्रद (झील) के दाहिने किनारे पर जा पहुँचा।

जो कहने लगा—"पक्षी कैसा चीत्कार कर रहे हैं। मालूम होता है, उनके राज्यमें प्रवेश करनेसे ही ये ऐसे कुपित हुए हैं।"

केनेडीने कहा—"इनका चेहरा बहुत भयङ्कर दिखाई देता है। देखनेसे भय लगता है। यही सौभाग्य है कि, इनके पास बन्दूक नहीं है।"

केनेडीने और भी चिन्तित होकर कहा—"उनको बन्दूक की ज़रूरत नहीं है—चोंच ही उनकी बन्दूक है।"

सब पक्षी शून्य आकाशमें वेलूनके चारों ओर वृत्ताकार घूमने लगे। वृत्त क्रमशः घटने लगा।

फर्गुसन कुछ ऊपर चले गये।

पक्षी भी ऊपर चढ़ने लगे!

केनेडीने कहा—"मारूँ?"

"नहीं केनेडी, अभी मत मारो। ऐसा करनेसे वे एकदम वेलूनपर टूट पड़ेंगे।"

"डर क्या है? मेरे पास गोलियोंकी कमी नहीं है। सब पक्षियोंको मार डालता हूँ। कुछ समयके लिए ठहर जाओ।"

"धैर्य धरो डिक्, गोली छोड़नेके लिए तैयार रहो। परन्तु मेरे कहे बिना गोली मत छोड़ना।"

पक्षी वेलूनके और पास आ गये। उनकी सुन्दर शिखा और श्वेत पङ्ख सूर्य्य-किरणोंसे खूब चमकते थे। फर्गुसनने कहा—

बेलून-विहार
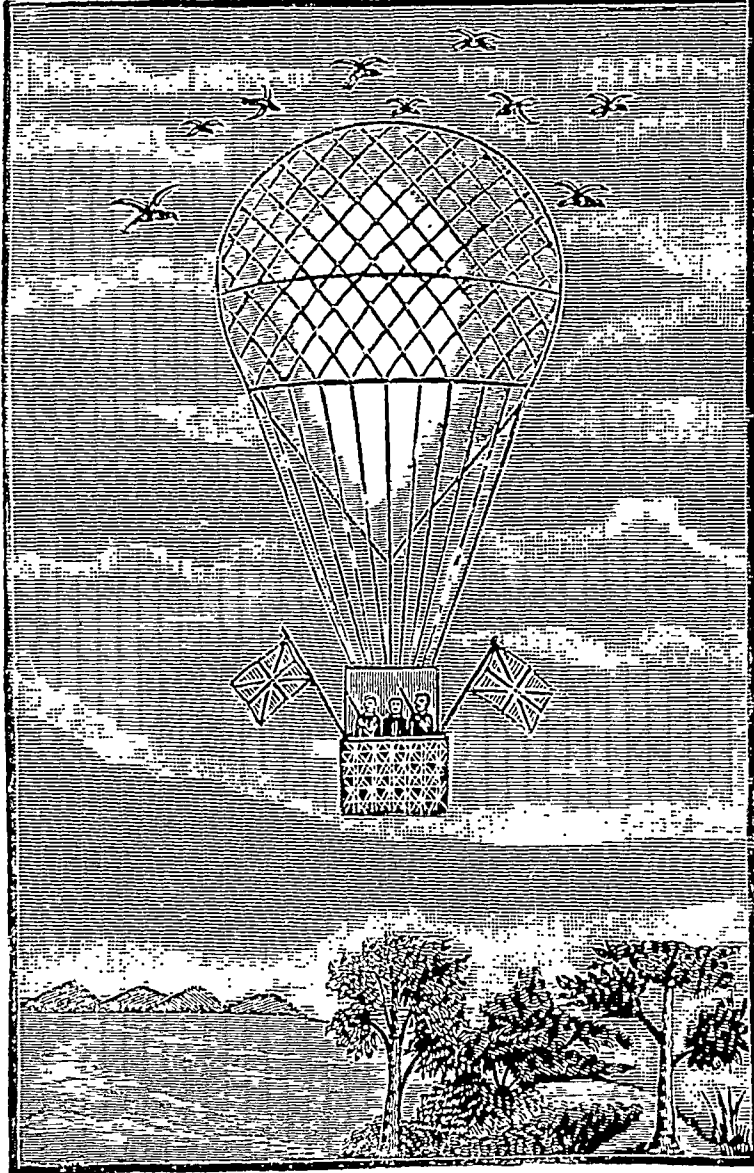
पक्षियों का बेलून के ऊपरी हिस्से पर धावा। पृ० १७१

Narsingh Press Calcutta.

"देखो, वे आक्रमण करना ही चाहते हैं।"

केनेडीने हँसकर कहा—"आप डरते क्यों हैं? कुल १४ पक्षी तो हैं ही। इनको न मार सका, तो मेरा नाम शिकारी ही वृथा है।"

"तुम्हारा निशाना अचूक है—यह मैं जानता हूँ। पर यदि वे बेलूनके ऊपरी हिस्सेपर आक्रमण करें, तो तुम उन्हें देख भी न सकोगे। फिर मारोगे कैसे? वे अपनी तीक्ष्ण चोंचोंके प्रहारसे बेलूनके ऊपरका रेशमी आवरण क्षण भरमें छिन्न-भिन्न कर डालेंगे। अपने मनमें सोच देखो—हम लोग ८००० फुट ऊपर हैं!"

ठीक इसी समय एक बाज़ आगे मुँह बढ़ाकर बेलूनकी ओर झपटा।

फर्गुसनने कहा—"मारो।"

गुड़ुम्...केनेडीकी बन्दूक़ चल पड़ी। एक पक्षी मरकर घुमते-घूमते नीचे गिरने लगा।

पक्षी कुछ समयके लिये डरकर स्थिर हो गये—क्षण भर उपरान्त दो पक्षी फिर टूट पड़े।

फिर केनेडीने एक पक्षी मार गिराया। जोकी गोलीसे एकका एक पंख टूट गया।

इस बार उन्होंने आक्रमण करनेकी प्रणाली बदल दी और सब पक्षियोंने मिलकर एक साथ विक्टोरियाके ऊपरी हिस्से पर धावा किया।

केनेडी फर्गुसनके मुँहकी ओर ताकने लगे। उनका मुँह पीला पड़ गया !

फर—फर—फर ! क्षण भरके पश्चात् फिर शब्द हुआ फर—फर—फर ! केनेडीके मुँहकी बात मुँह ही में रहगई। ऐसा मालूम होने लगा कि, मानो बेलून नीचे पैरोंकी ओर जा रहा है !

फर्गुसन चिल्ला उठे—

"सर्वनाश हुआ ! रेशम फट गया ! वज़न फेंको—वज़न फेंको।" क्षण भरके भीतर बेलूनका सारा वज़न—जोका परिश्रमसे सञ्चित किया हुआ स्वर्ण च्याड ह्रदमें फेंक दिया गया।

बेलून नीचे चला जाता था।

जोने जलका बक्स नीचे फेंक दिया। बेलून नहीं थमा। फर्गुसन उस विपुलकाय ह्रदकी ओर देखने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा कि, उन लोगोंको ग्रास करनेके लिए च्याडह्रदकी जलराशि प्रति क्षण ऊपर उठती आती है। उन्होंने व्याकुल होकर कहा—

"भोजनका सन्दूक़ फेंक दो—जल्दी—जल्दी !"

जोने जिस बॉक्समें खानेकी सामग्री रक्खी थी, वह भी फेंक दिया। बेलूनका पतन-वेग घट गया, परन्तु रुका नहीं।

फर्गुसनने कहा—"जो कुछ हो सब फेंक दो।"

केनेडीने व्याकुल होकर कहा—"अब कुछ नहीं है, खाना पानी आदि अत्यावश्यक चीज़ें भी फेंक दी गईं।"

बेलून-विहार
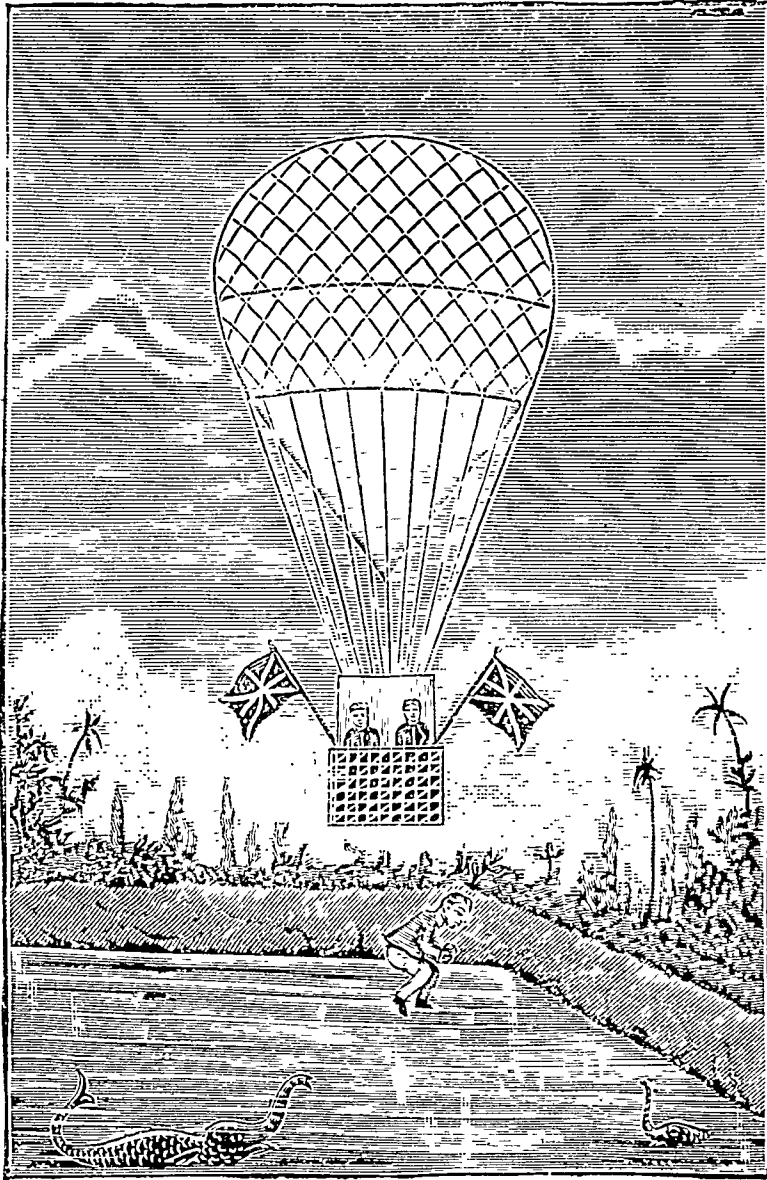
जौ वेलून से झील में कूद रहा है। [पृ० १७३]

Narsingh Press Calcutta.

जो गम्भीर स्वरसे कह उठा—"नहीं क्यों' ? इस समय भी कुछ है। इतना कहकर वह उसी समय फलाँग मार कर नीचे कूद पड़ा।

फार्गुसनने भीत स्वरसे कहा—"जो—जो—"

जो उस समय शीघ्र गतिसे झ्रदमें गिर रहा था। बेलून पल भरमें हज़ार फुट ऊँचा उठ गया। बेलूनके प्रथम फटे आवरणमेंसे वायुराशि प्रवेश करके उसको झ्रदके उत्तरीय तटकी ओर ले जाने लगी।

नितान्त हताश होकर रुद्धकण्ठसे केनेडीने कहा—

"उह:—सब गया—!"

"हमें बचानेहीके लिए गया।"

दोनोंके नेत्रोंसे अश्रुविन्दु झरने लगे। जोको एकबार देखने के लिए वे बारम्बार नीचे देखने लगे। पर उनको वह दिखाई नहीं दिया।

इक्कीसवाँ परिच्छेद ।
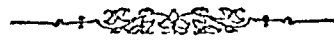
अनुसन्धान ।

केनेडीने कहा—"अब क्या करना चाहिये फर्गुसन् ?"

चलो कहीं उतरें, नीचे ठहरकर जौकी राह देखें ।"

बेलून वायुताड़ित होकर च्याड झीलके उत्तरीय किनारेकी ओर जारहा था । प्रायः ६० मील दूर जानेपर अनेक प्रयत्नके पश्चात् एक जनहीन स्थानमें लङ्गर बाँधा गया ।

थोड़ेही समयके उपरान्त रात आगई । जल-स्थल सब अन्धकारसे ढँक गया । झीलके ऊपरसे मुक्त पवन बह रही थी । जल-कल्लोलोंके बीच फर्गुसनके कातर कण्ठकी—"जौ—जौ—" ध्वनि मिल गई !

सवेरा होतेही उन्होंने देखा कि, हमलोग एक कर्दममय विशाल भूमिके बीच कुछ दृढ़ भूमिपर ठहरे हुए हैं । चारों ओर अगणित विशाल वृक्ष खड़े हुए थे ।

फर्गुसनने सोचा कर्दममय भूमिको लाँघकर बेलूनके पास

आनेकी क्षमता किसीमें नहीं है। फिर उन्होंने झीलकी ओर दृष्टि डाली। देखा,—जहाँतक दृष्टि जाती है केवल जल-ही-जल भरा हुआ है। चञ्चल-जलराशि सुदूर दिग्वलयका चुम्बन तथा सूर्य्य-किरणोंके साथ क्रीड़ा करती हुई झिल-मिला रही थी!

अभी तक जोका नाम लेनेका साहस उनको नहीं हुआ था—कौन जाने पीछे सुननेमें आवे कि जो नहीं है—जो मर गया! अन्तमें केनेडीने कहा—"मैं समझता हूँ, जो जलमें डूब कर नहीं मरा है। क्योंकि वह तैरनेमें बहुत कुशल है। मेरा मन कह रहा है कि, वह फिर मिलेगा।"

भगवान् करे ऐसाही हो। जोको भरसक ढूँढ़ने का प्रयत्न करना चाहिये! अब बेलूनके छिन्न आवरणको निकाल कर फेंक देना ही उचित है। ऐसा करनेसे साढ़े आठ मन वज़न घट जायगा।"

दोनोंने प्राय: ४ घण्टा मिहनत करके बेलूनके ऊपरी आव-रण को निकालकर फेंक दिया। देखा, भीतरका आवरण अक्षत है—उसे तनिक भी चोट नहीं पहुँची है।

बेलूनकी मरम्मत करके विश्राम करते-करते फर्गुसनने कहा—"जो जिस समय बेलूनसे कूदा था, उस समय हम एक द्वीप के समीप थे।"

"बहुत सम्भव है, जो तैर कर उसी द्वीपमें पहुँच गया हो।"

"ऐसा होना सम्भव तो अवश्य है, परन्तु वह द्वीप जलदस्युओंका निवास-स्थल है। उनके हाथ पड़ कर वह अपनी आत्मरक्षा कर सकता है?"

"जो जैसा चतुर है, उससे तो यही विश्वास होता है कि, वह अवश्य कर लेगा।"

केनेडी बन्दूक लेकर शिकारके लिये चला गया। इधर फर्गुसन बेलूनकी परीक्षा करने लगे। उन्होंने एक-एक करके उसके सब कल-पुर्ज़े देखे—जिनमें कुछ दोष पाया उन्हें दुरुस्त कर दिया।

वह रात्रि वहीं व्यतीत हुई।

सवेरे फर्गुसनने कहा—"जोका पता किस प्रकार लगाना चाहिये, यह मैंने स्थिर कर लिया है।"

"क्या करना चाहते हो?"

"पहले उसे यह ज़ाहिर कर देना चाहिये कि, हम कहाँ हैं।"

"हाँ, ऐसा करना ही ठीक है। यदि हमलोग अपना पता न देंगे, तो वह यह सोचकर निराश हो जायगा कि, वे लोग मुझे मरा समझ कर चले गये हैं।"

"नहीं डिक्, वह ऐसा कभी न सोचेगा। वह मेरे स्वभावको ख़ूब पहचानता है।"

"अच्छा, उसे किस प्रकार अपना पता देओगे?"

"बेलून लेकर झीलके ऊपर उड़ेंगे।"

"यदि हवा ठेलकर अन्य ओर ले जाय ?"

"अन्य ओर नहीं ले जा सकती है। देखते नहीं हो, हवा झीलकी ओर ही बह रही है। हमलोग सारे दिन झीलपर ही रहेंगे। ऐसा करनेसे जो हमको अवश्य ही देख लेगा। फिर वह अपना पता भी हमको दे सकेगा।"

"यदि वह बन्दी होगया हो ?"

"तोभी दे सकेगा। इस देशमें बन्दी कैद करके नहीं रक्खे जाते हैं। कुछ भी हो, जोका अनुसन्धान किये बिना यहाँसे न जांयगे।"

वे लोग लङ्गर खोलकर जोके अनुसन्धानके लिये निकले। बेलून ज़मीनके पास-पास बहुत नीचे होकर जाने लगा। केनेडी बीच-बीचमें बन्दूक़ की आवाज़ करते जाते थे। जिस समय बेलून उस द्वीपके पास पहुँचा, उस समय वह इतना नीचा जारहा था कि, उस द्वीपके छोटे वृक्ष भी उससे छूते जाते थे। इस प्रकार अनेक वन, पर्वत, मैदान, गुफाएँ ढूँढ़ डालीं पर कहीं भी जो का पता न चला। दो घण्टे बीत गये। केनेडीने कहा,—

"इस ओर खोजनेसे लाभ न होगा।"

"अधीर मत होओ डिक्, जिस जगह जो गिरा था वह जगह यहाँसे अधिक दूर नहीं है।"

११ बजे तक बेलूनने प्राय: ८० मील मार्ग तय किया। उस समय हवा कुछ वेगसे बह रही थी। बेलून इस वायु-प्रवाहमें

पड़कर फारस नामक द्वीपपुञ्जके समीप जा पहुँचा । उनको भरोसा था कि, जो किसी वृक्षकुञ्जकी ओटमें छिपा होगा— बेलून देखतेही दौड़कर आ जायगा ।

हा दुराशा !

२ बज गये । इस समय भी वायुकी गति नहीं बदली थी। फर्गुसन की चिन्ता बढ़ने लगी । वे सोचने लगे, बेलून क्या फिर उसी भीषण मरुक्षेत्रमें चला जायगा ! यदि ऐसा हुआ, तो सर्वनाश ही समझो !

फर्गुसनने कहा—

"केनेडी, अब हमको आगे बढ़ना उचित नहीं है । किसी जगह उतर कर विपरीत वायुकी प्रतीक्षा करनी चाहिये । जिस तरह हो सके, हमको उसी झील पर फिर लौट जाना उचित है ।

विक्टोरिया क्रमशः ऊपर उठने लगा । जब वह भूमिसे एक हज़ार फुट ऊँचे पहुँचा, तब उसे उत्तर-पश्चिमगामी एक प्रबल वायुस्रोत मिल गया । बेलून उसी स्रोतमें बहने लगा ।

जोका कुछ पता नहीं चला ।

रात्रिको एक जगह लङ्गर बाँधकर वे दोनों सवेरा होनेकी राह देखने लगे । निराशासे हृदय फट गया । नेत्रोंसे अविराम अश्रुधारा निकलने लगी ! सारी रात्रि दोनोंने जागते-जागते बिताई ।

३ बजे रातके समय वायुका वेग अत्यन्त प्रबल हो उठा। उस समय बेलून एक बाँसके जङ्गलमें ठहरा था। प्रति क्षण बाँसोंका आघात होने लगा! बेलूनके ऊपर केवल एकही आवरण रह गया था। यदि किसी प्रकार वह भी नष्ट होगया, तो फिर सर्वनाश ही समझो! फर्गुसनने कहा—

"डिक्, अब इस जगह नहीं ठहर सकते हैं—बेलून छोड़ता हूँ।"

"क्या जोको इसी जगह छोड़ जाओगे?"

"उसे किसी प्रकार नहीं छोड़ सकेंगे। इस प्रवाहमें हम कितनोही दूर क्यों न निकल जायँ, पर फिर लौटकर इसी जगह आवेंगे। इस समय यहाँ ठहरनेसे तो बेलून भी हाथसे जाता दिखता है।"

केनेडी बेलून का लङ्गर खींचने लगे, पर वह खिंचा नहीं। वायुके झकोरों तथा बेलूनके धमकों से उसका बन्धन दृढ़ होगया था। फर्गुसनने रस्सी काट दी। बेलून एक फलाँगमें ३०० फुट ऊपर उठकर उत्तरकी ओर उड़ने लगा। वायु-प्रवाह बदलनेकी शक्ति फर्गुसनमें नहीं थी। वे चुपचाप बैठ रहे।

केनेडीने कहा—

"फर्गुसन अब फिर लौटोगे?"

"अवश्य। बेलून छोड़कर पैदल भी चलना पड़े, तोभी स्वीकार है। जोका पता लगाना अत्यावश्यक है।"

"मैं छायाके समान तुम्हारे पीछे-पीछे चलूँगा। जीने हमारे लिये आत्मबलि दी है—हम भी उसके लिये यही करेंगे।"

वायुप्रवाह ऐसा तेज़ था कि बेलून गुणमुक्त वाण की नाईं वोनाद्-उल-जेरिद नामक मरुभूमि परसे जारहा था। इस देशमें निरन्तर आँधी चला करती है—इस समय भी चलती थी। देखते-देखते वृक्षादिके चिह्न लुप्त होगये!

फर्गुसनने कहा—"डिक्, प्रकृतिकी दिल्लगी तो देखो, अब हम न लौट सकते हैं न ठहर सकते हैं—कुछ उपाय नहीं है—जानाही पड़ेगा। जहाँतक दृष्टि जाती है, केवल बालूही बालू दिखाई देरही है। कैसी उत्तप्त, नीरस और ज्वालामय है! हम सहारा मरुस्थलके उपर से जारहे हैं।"

जिस समय फर्गुसन केनेडीसे इस प्रकार बातचीत कर रहे थे, उस समय उत्तरकी ओरसे प्रबल बालू-पुञ्ज आकाशमें उड़ता-घूमता हुआ इसी ओर आरहा था। बालूराशि उड़ते-उड़ते घूमती और घूमते-घूमते उड़ रही थी। उसी घूर्ण्यमाण उत्क्षिप्त बालू-तरङ्गोंके मध्य एकदल यात्रियोंकी जीवित समाधि बन रही थी! ऊँटगण यन्त्रणासे चीत्कार करने लगे।

क्षणभरमें सब शेष होगया! ऊँट, आरोही, वणिकगण सभी बालूगर्भमें समा गये! उस समय उन्मत्त पवन सहारा

की बालू लेकर क्रीड़ा करती—वृत्ताकार घूमती और इधर-उधर नृत्य कर रही थी। जो स्थान क्षणभर पहले समतल था, वहाँ अब बालूका एक ऊँचा पहाड़ बन गया! इस पहाड़के चरण-तलमें जीवित मनुष्य, जीवित पशु चिरदिनके लिये समाहित होगये!

इस लोमहर्षण दृश्यको देखकर फर्गुसन और केनेडीका हृदय स्तब्ध हो गया। बेलून इस समय स्वेच्छाचारी हो गया था। वह विपरीतगामी वायुमें पड़कर कभी घूमने, कभी उड़ने और कभी प्रबल वेगसे छूटने लगा।

बेलून इतना हिलता डुलता था कि, उसके भीतर बैठना कठिन होगया। जलबाक्स छुटकर गिर पड़ा, गेसका नल टेढ़ा होगया! कहीं दोला (झूला) टूटकर न गिर पड़े, यह चिन्ता उनको क्षण-क्षणपर व्याकुल करने लगी।

अकस्मात् बेलून रुक गया! वायुकी गति बदल गई। फिर प्रबल वेगसे विपरीतगामी वायु बहने लगी। बेलून तीरके समान छुटने लगा।

केनेडीने पूछा—

"अब हम किस दिशाको जारहे हैं?"

"जिस प्रदेशको लौट जानेमें सन्देह था, उसी ओर जारहे हैं।"

८ बज गये। बेलून अब भी च्याड झीलके समीप नहीं

पहुँचा था। केनेडीने उँगलीसे इशारा करके कहा—"देखो, दूर मरुभूमि धू धू कर रही है। फर्गुसनने कहा—

"जो हो, हमारा उद्देश्य दक्षिण जानेका है—सो जारहे हैं। हम वोगेडि, कोफा आदि नगर अवश्य देखेंगे। तुम दूरवीक्षण लेकर बैठ जाओ—कोई स्थल दृष्टिसे बचने न पावे।"

केनेडी सावधान होकर चारों ओर देखने लगा।
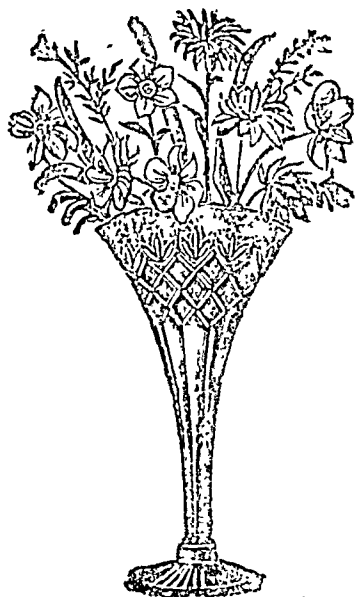
बाईसवाँ परिच्छेद ।

विपद पर विपद ।

जो बेलूनसे कूदकर पहले च्याङ झीलकी अतल जलमें डूब गया। पर कुछ क्षणके उपरान्त फिर ऊपर आकर बेलूनकी खोजमें आकाशकी ओर देखकर कहने लगा—"आ! बच गया। बेलून क्रमशः ऊपर चला जाता है।"

बेलून क्रमशः छोटेसे छोटा दिखाई देने लगा और अन्तमें बिल्कुल अदृश्य होगया।

अपने साथियोंको पूर्ण निरापद देखकर जोका मन शान्त हुआ। अब वह आत्मरक्षाका उपाय सोचने लगा। जितनी दूर दृष्टि जाती थी, असीम विस्तृत जलराशि सूर्य्य-किरणोंसे चमकती हुई दिखाई देती थी।

जोने साहस बाँधा। बेलूनपरसे उसने झीलमें एक द्वीप देखा था। वह उसकी खोजमें चारों ओर दृष्टि डालने लगा। वही न एक छोटा बिन्दुसा दिखाई देता है। जोने सोचा,

निश्चयही वह द्वीप है। धीरे-धीरे उसने यथासम्भव अपने कपड़े आदि फेंककर उस विन्दुकी ओर तैरना प्रारम्भ कर दिया।

जो प्राय: डेढ़ घण्टा तैरनेके पश्चात् जब उस द्वीपके समीप पहुँचा, तब उसका हृदय काँप उठा। बेलूनपरसे उसने देखा था कि, शालवृक्षके समान बड़े-बड़े कुम्भीर द्वीपके चारों ओर तैरते और कहीं-कहीं किनारे पर शयन करके धूप ले रहे हैं। जलमें कुम्भीर और स्थलमें नरखादक राक्षस! किन्तु उस समय अधिक सोचनेके लिये अवकाश नहीं था। जो अत्यन्त सावधानीके साथ आगे बढ़ने लगा।

अकस्मात् पवनके झकोरेके साथ कस्तूरीकी सुगन्ध आई!

जो मनमें कहने लगा—"सावधान, पासहीमें कुम्भीर है!"

जो पानीमें डूब गया। सोचा, बहुत दूर जाकर निकलूँगा। इसी समय ऐसा मालूम हुआ कि, एक बहुत भारी कुम्भीर तीव्रगतिसे पाससे निकल गया! जोने समझा, वह लक्ष्यभ्रष्ट होगया है। जो फिर जलके ऊपर आगया और फुरतीके साथ दूसरी ओरको तैरने लगा। तैरते-तैरते उसे ऐसा भान होने लगा, मानो पीछेसे उसे किसीने पकड़ लिया है! जोके नेत्र मुँद गये!

यह क्या! कुम्भीर पकड़ता तो अभीतक जलके नीचे खेंच ले जाता! जो इस समय भी जलके ऊपर तैर रहा था! तो क्या उसे कुम्भीरने नहीं पकड़ा? जोने नेत्र

खोले! देखा, दो काले रङ्गके काफिर उसे वज्रमुष्टिसे पकड़े हुए चीत्कार कर रहे हैं! जो कुछ शान्त हुआ। वह मनमें कहने लगा—"ये कुम्भीर नहीं—नरभक्षक राक्षस हैं!"

उनके हाथसे बचनेके लिये जोने कुछ भी प्रयत्न नहीं किया। वे उसे किनारेकी ओर खींच ले चले। जो मन-ही-मन सोचने लगा—"जब मैं बेलूनसे गिरा था, उस समय इन्होंने मुझे अवश्य देख लिया होगा। इनलोगोंके समीप मैं स्वर्गका मनुष्य हूँ—आकाशसे उतर कर आया हूँ। तब तो ये मुझसे अवश्य डरेंगे।"

किनारे के पास आतेही जो ने देखा कि, बालक, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब इकट्ठे होकर उच्च स्वरसे चीत्कार कर रहे हैं! ज्योंही जो पानीसे निकलकर ऊपर पहुँचा, त्योंही सब लोगोंने उठकर उसे भक्ति-भावसे प्रणाम किया और पूजाके अनन्तर मधु-मिश्रित दूध और चाँवलोंके चूर्णका भोग दिया।

जोने शीघ्र दूध पी लिया, यह देखकर भक्तगण आनन्दसे नृत्य करने लगे। सन्ध्या होते ही गाँवका जादूगर उसे आदरके साथ एक कुटीरमें लेगया। उस कुटीरमें कई प्रकार के कवच और हथियार टँगे थे। पासहीमें नरकङ्कालोंका ढेर उन काफिरोंकी नर-माँस-लोलुपताका परिचय दे रहा था। जो उसी कुटीरमें बन्दी हुआ। कुछ क्षणके उपरान्त वह स्थान काफिरोंके ताण्डव नृत्य और संगीतसे चञ्चल हो

उठा । उस घरमें दीवारोंकी जगह शीशे लगे थे, इस कारण जो भीतरसे ही सब देखने लगा । सोचा, इस देशके भक्त पूजाके अन्तमें देवताकोही प्रसाद-ज्ञानसे भक्षण करते हैं !

जो बहुत थक गया था । कुछ समयके पश्चात् उसे नींद आगई । अकस्मात् शीतल जलके स्पर्शसे उसकी नींद खुल पड़ी । उसने उठकर देखा, काफिरोंका वहाँ नाम-निशान तक नहीं है—सारा शरीर जलसे भीग रहा है—और जल-राशि हु-हु करके घरमें घुस रही है ।

वह इस आकस्मिक परिवर्त्तनका कारण सोचने भी न पाया था कि, सारा घर जलपूर्ण हो गया । वह तत्काल पैरोंके आघातसे शीशोंको तोड़कर बाहर निकला । देखा, सारा द्वीप जलमग्न होगया है ! कुछही मिनिटके पश्चात् वहाँ इतना अधिक जल भर गया कि, जो तैरनेपर बाध्य हुआ । प्रबल जलस्रोत जिस ओरको बह रहा था, जो भी उसी ओरको बहने लगा ।

वह क्या दिखाई देता है ? कुम्भीर तो नहीं है ? जो उस समय हिताहितज्ञानशून्य हो गया था । कुछ समयके बाद नज़दीक आनेपर जोने देखा—काफिरोंकी एक बड़ी डोंगी बहती चली आती है । दो चार लम्बे-चौड़े हाथ फेंककर जो शीघ्र उस पर चढ़ गया । डोंगी उसी प्रकार प्रबल वेगसे बहने लगी । बहुत समय व्यतीत हो गया ।

ध्रुव नक्षत्र देखकर जौ समझ गया कि, हम झीलके उत्तर किनारेकी ओर जा रहे हैं।

आकाश स्वच्छ था। चारों ओर अन्धकार फैल रहा था। ऊपर असंख्य तारागण चमकते हुए दिखाई देते थे। कभी-कभी दो एक उल्का पतित होकर जौके मार्गको प्रकाशित कर देते थे। विपुल जल-तरङ्गें चारों ओरकी भीषण निस्तब्धताको भंग कर रही थीं। जौ पाषाणमूर्तिके समान डोंगीपर बैठ था। रात्रि गम्भीर हो गई। कुछ समयके पश्चात् डोंगी किनारेके पास आकर रुक गई। जौ चारों ओर देख-भाल कर नीचे कूद पड़ा। समीपमें एक विशाल वृक्ष अपनी अनेक शाखा-प्रशाखायें फैलाये हुए दैत्यके समान खड़ा था। जौ उसी वृक्षपर चढ़ गया।

सवेरे उसने जो देखा, उससे उसका सारा रक्त पानी हो गया—हाथ पैर फूठे पड़ गये—सिरसे पसीना बहने लगा और सारे शरीरमें काँटे उठ आये। देखा, वृक्षकी शाखा-प्रशाखाओंमें सैकड़ों सर्प झूल रहे हैं! पत्तों-पत्तोंमें असंख्य जौंकें और अन्य कई प्रकारके कीड़े चिपके हुए हैं। जौ को देखते ही वे सर्प फुसकारने और फन उठाकर यहाँ-वहाँ देखने लगे! जौ तत्काल नीचे कूद पड़ा। नीचेकी भूमि भी निरापद नहीं थी। सैकड़ों बिच्छू, सर्प आदि ज़हरीले कीड़े जहाँ-तहाँ दिखाई देने लगे।

जौ अज्ञात, अपरिचित और ज़हरीले जीवोंसे परिपूर्ण

इस बीहड़ प्रान्तमें खूब सावधानीके साथ आगे बढ़ने लगा। क्रमशः दोपहर होगये। धीरे-धीरे। सूर्य्य ढल चला। भूख-प्याससे जोके प्राण घबरा रहे थे। उसने कुछ अज्ञात फल-मूल खाकर अपनी भूख बुझाई। वह फिर आगे बढ़ने लगा। उसके मनमें दृढ़ विश्वास था कि, बन्धुगण मुझे छोड़कर न जायँगे। वह विक्टोरिया देखनेकी आशासे बारम्बार आकाशकी ओर कातरदृष्टिसे देखने लगा।

कण्टक और लता-गुल्मादिके स्पर्शसे उसका शरीर कई जगह छिन्न-भिन्न हो गया था। दोनों पैर रक्तसे रङ्ग गये थे। वह इस समय भी जा रहा था। घण्टों पर घण्टे बीतने लगे, पर उस अज्ञात वनका—उस अज्ञात मार्गका अन्त नहीं मिला। समस्त दिन इसी प्रकार चलनेके पश्चात् वह सन्ध्याके कुछ पहले फिर उसी झीलके एक किनारे पर जा खड़ा हुआ। तत्काल हज़ारों-मच्छरों और कीड़ोंने उस पर आक्रमण प्रारंभ किया। एक आध इञ्च लम्बे कीड़ेने उसे इतने ज़ोरसे काटा कि,उसके पैरसे रक्तकी धारा निकलने लगी—यन्त्रणासे जो छटपटाने लगा। दो घण्टेके बाद देखा, जोकी पतलून और कोटमें छिद्र-ही-छिद्र हो गये हैं। वह व्याकुल होकर इधर-उधर फिरने लगा। रात्रि ज्यों-ज्यों गंभीर होने लगी, त्यों-त्यों हिंस्र जन्तुओंकी भयंकर गर्जनध्वनि सुनाई देने लगी। बेचारा सहायहीन, अस्त्रहीन, भूखा-प्यासा जो

पहली रातकी समान एक वृक्षपर चढ़कर रात्रि व्यतीत करने लगा।

प्रातःकाल झरनेमें स्नान और कुछ वृक्ष-पत्तोंका भोजन करके जो फिर निकल पड़ा। क्रमशः अब चलना भी असंभव हो चला। वह थककर एक वृक्षके नीचे जा बैठा। उसे वहाँ बैठे अधिक देर नहीं हुई थी कि, सहसा उसकी नज़र कुछ काफिरोंपर पड़ी। वे पास ही एक वृक्षके नीचे बैठे विषबाण बना रहे थे। जोके प्राण सूख गये। वह चुपचाप उठा और एक समीपवर्त्ती दरेंमें जा छिपा। कुछ ही समयके उपरान्त उसने देखा कि झीलके अथाह जलके ५०—६० हाथकी ऊँचाई पर विक्टोरिया उड़ रहा है। उसके दोनों नेत्रोंसे टपटप आँसू टपकने लगे। ये अश्रु निराशाके नहीं—कृतज्ञताके थे।

कुछ समयके पश्चात् काफिर चले गये। जो दरेंसे बाहर निकल झीलके किनारे पर आया। देखा, विक्टोरिया बहुत दूर निकल गया है। जो की आशा अब भी निःशेष नहीं हुई थी। उसे भरोसा था कि, फर्गुसन मेरी पूर्ण खोज किये बिना यहाँसे कभी न जायँगे। देखते-ही-देखते एक प्रबल वायुस्रोत आया और वह बेलूनको पूर्व दिशाकी ओर उड़ा ले गया। विक्टोरिया देखते-देखते अदृश्य हो गया।

जो चञ्चल मनसे विक्टोरियाके प्रत्यागमनकी प्रतीक्षा करने

लगा। कुछ घण्टोंके पश्चात् वह फिर दिखाई दिया। जो उसी ओर दौड़ा—ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाया, पर उसकी आवाज़ विक्टोरिया तक नहीं पहुँची! अभागा जो दोनों हाथोंसे अपने हृदयको थाम कर बैठ गया, पर उसे चैन नहीं पड़ा। जिस ओर बेलून जा रहा था, उसी ओर वह दौड़ने लगा। इस समय प्रायः रात हो चुकी थी। जो उसी प्रकार जा रहा था। दौड़ते-दौड़ते वह कीचड़मय क्षेत्रमें जा फँसा!

जो अनेक प्रयत्न करने पर भी उस कीचड़से मुक्त नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों वह उससे निकलनेकी चेष्टा करता था, त्यों-त्यों उसमें फँसता जाता था। देखते-देखते वह कमर तक डूब गया। जोको भरोसा हो गया कि, अब मैं नहीं बचूँगा—मेरी मृत्यु निकट आ गई है। वह आर्तनाद करके कहने लगा,—"हे भगवान्! रक्षा करो—रक्षा करो, मैं जीवित दशाहीमें इस दुष्ट कीचड़में गड़ा जाता हूँ।"

जोकी आर्तध्वनि शून्य आकाशमें मिल गई। वह उस अथाह कीचड़में धीरे-धीरे समारहा था। क्रमशः काली रात्रिने आकर जल-थल-मयी समस्त प्रकृतिको ढँक दिया।

तेईसवाँ परिच्छेद।

मनुष्यकी शिकार।

केनेडी खूब सावधानीके साथ चारों ओर देख रहा था। उसने कहा—"कुछ सैनिक दौड़ते हुए आ रहे हैं—बहुत दूर मालूम पड़ते हैं। जिस प्रकार धूल उड़ रही है, उससे ज्ञात होता है कि वे बहुत शीघ्रता से आ रहे हैं।"

"हवाका बवण्डर भी हो सकता है।"

"बवण्डर? बवण्डर नहीं है।"

"कितनी दूर हैं?"

"अभी प्राय: ८—९ मील दूर होंगे। सैनिक घुड़सवार हैं—निस्सन्देह घुड़सवार ही हैं।"

फर्गुसनने दूरबीनसे देखकर कहा—

"मालूम होता है, अरबी हैं। टिब्बूस भी हो सकते हैं। वे इसी ओर आ रहे हैं। हम लोग अभी कुछ मिनिटों ही में उनके पास पहुँचे जाते हैं।"

केनेडीने दूरबीन ले ली। बेलून चलने लगा, उसने देखते-देखते कहा—

"घुड़सवारोंके दो दल हो गये। मालूम होता है, वे किसीका पीछा कर रहे हैं। क्या मामला है? किसका पीछा करते होंगे?"

"डरनेकी ज़रूरत नहीं है डिक्! बेलून घण्टेमें २० मीलके वेगसे जा रहा है। कैसाही तेज़ घोड़ा क्यों न हो, कोई हमारा पीछा नहीं कर सकता है।"

"देखो—देखो—वे कितनी शीघ्रतासे आ रहे हैं। प्रायः पचास जवान होंगे। उनके शरीरके कपड़े हवासे कैसे फहरा रहे हैं!"

"डिक्, हम लोगोंको कुछ भय नहीं है। हम चणभरमें बहुत ऊपर जा सकते हैं।"

"फर्गुसन—फर्गुसन—यह बड़ी विचित्र बात है! ऐसा दिखाई दे रहा है, मानो वे शिकार खेल रहे हैं।"

"मरुभूमिमें शिकार?"

"हाँ—हाँ—शिकार! देखो—देखो, वे एक मनुष्यको शिकार रहे हैं। वह मनुष्य प्राण-भयसे कितनी तेज़ीसे घोड़ा दौड़ाता हुआ भागा जा रहा है!"

"क्या कहते हो डिक्! मनुष्यको शिकार! उसके ऊपर नज़र रखना।"

केनेडी और फर्गुसनके आश्चर्यकी सीमा न रही। उन्होंने

सोचा, बेलूनके पास आनेपर यदि संभव हुआ तो उसकी रक्षा करेंगे।

केनेडी ध्यानपूर्वक दूरबीन देख रहा था। सहसा वह कम्पित कण्ठसे चिल्ला उठा—"फर्गुसन—फर्गुसन—"

"क्या हुआ—क्या हुआ?"

"नहीं—नहीं—यह कभी सम्भव नहीं है। यह कभी—"

"बात क्या है?"

"यह व—ही—"

"व—ही?"

"निश्चय व—ही है! देखो देखो, एकबार तुम देखो। वह जो ही है! कैसी तेज़ीसे घोड़ा दौड़ाता आ रहा है। घोड़ा तीरके समान छूट रहा है! शत्रुगण उससे ८०—९० हाथ पीछे हैं! फर्गुसन—फर्गुसन—"

फर्गुसनका मुँह फीका पड़ गया। उन्होंने रुद्ध कण्ठसे कहा—"जो—"

इससे आगे उनके मुँहसे एक शब्द भी न निकला।

केनेडीने कहा—"अभीतक जो हम लोगोंको देख नहीं सका है। देखो, घोड़ा उसी प्रकार जो छोड़कर भाग रहा है।"

गैसकी गरमीको कम करते-करते फर्गुसनने कहा—

"जो अभी हमको देख लेगा। हम पन्द्रह मिनिटके भीतर उसके सिरपर पहुँच जायँगे—"

"बन्दूककी आवाज़ करूँ ?"

"नहीं—ऐसा करनेसे अनिष्ट हो सकता है। शत्रु सावधान हो जायँगे! तुम खूब बारीकीके साथ शत्रुकी गति-विधिपर लक्ष्य रक्खो।"

अल्पकालके उपरान्त केनेडी आर्त्तनाद करके चिल्ला उठा—"फर्गुसन—फर्गुसन सर्वनाश होगया!"

"क्यों—क्या दिखाई दिया ?"

"व-ही—व-ही—जो घोड़े परसे गिर पड़ा। घोड़ा भी मर गया। बहुत बुरा हुआ!

"अब क्या होगा फर्गुसन ?"

फर्गुसनने दूरबीनसे देखकर कहा—"यह देखो, जो उठ खड़ा हुआ। उसने हमलोगोंको देख लिया है। वह हाथ हिला-हिलाकर संकेत कर रहा है।"

"हाँ—हाँ ठीक। मुझे भी दिखाई दिया।"

"जो चुपचाप खड़ा क्यों है ? अभी शत्रु आकर पकड़ लेंगे!"

केनेडी आनन्दसे चीत्कार करके कहने लगा—"शावास जो! शाबास! खूब बहादुरीका काम किया!"

जो आक्रमणकारी शत्रुओंकी प्रतीक्षामें कुपित सिंह की नाईं खड़ा था। एक शत्रु ज्योंही समीप आया, त्योंही जो एक लम्बी छलाँग मार कर पीछेसे उसके घोड़े पर सवार हो गया और उसका गला दबाकर उसे नीचे गिरा दिया। शत्रु

प्राणहीन होकर भूमिपर गिर पड़ा। जो फिर वायुवेगसे चलने लगा। शत्रुगण क्रोधसे गर्जना करने लगे।

विक्टोरिया उस समय भूमिसे २०—२५ हाथकी ऊँचाई पर उड़ रहा था। एक दस्यु बहुत प्रयत्न करके जोके समीप आया और अपना तीक्ष्ण भाला लेकर जो पर टूट पड़ा। भाले की नोंक पीछेसे जो की पीठ विदीर्ण किया ही चाहती थी कि, सहसा किसी एक अश्रुतपूर्व शब्दने शत्रुओंको चमकित कर दिया। आक्रमणकारी शत्रु केनेडीकी गोलीसे आहत होकर नीचे गिर पड़ा! जो वायुवेगसे भागने लगा।

दस्युगण कुछ समयके लिये ठहर गये। उन्होंने देखा, सिर पर एक विपुलकाय बेलून उड़ रहा है! वे चकित होकर रह गये। फिर शीघ्रही उनलोगोंने घोड़ोंसे उतरकर बेलून को साष्टाङ्ग प्रणाम किया! इसके पहले एक दस्युदल आगे बढ़ गया था। यह आश्चर्य उसने नहीं देखा था। वह प्राणपनसे जोका पीछा कर रहा था।

केनेडीने कहा—"जो भागता ही जाता है। अब ठहर क्यों नहीं जाता?"

"जो ठीक कर रहा है। जिस ओर हम जारहे हैं, उसी ओर वह भी जारहा है। हम अभी उसके पास पहुँचे जाते हैं। तुम तैयार रहो।"

"क्या करना होगा?"

"बन्दूक रख दो। मेरा आदेश पातेही डेढ़ मन वज़न नीचे

फेंक देना। देखो, जोके प्राण तुम्हारे ही हाथ हैं। यदि वज़न फेंकनेमें कुछ भी विलम्ब हुआ, तो जो पर विपत्ति आये बिना न रहेगी। इसके विरुद्ध यदि तुम मेरा आदेश पानेके पहलेही वज़न फेंक दोगे, तोभी उसकी प्राणरचा न हो सकेगी। ठीक मेरा आदेश पाते ही वज़न फेंक देना।"

"बहुत अच्छा, ऐसाही करूँगा।"

इस समय बेलून शत्रुओंके ऊपरसे जारहा था। फर्गुसन रस्सी लेकर तैयार होगये। धीरे-धीरे बेलून जो के सिर पर जा पहुँचा। फर्गुसनने कहा—

"सावधान!"

केनेडीने कहा—"प्रस्तुत हूँ।"

फर्गुसनने रस्सी छोड़ दी। रस्सी जोके सिर पर लटकने लगी। इधर जो भी तैयार था। घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते उसने झट रस्सी पकड़ली। फर्गुसनने कहा—

"डिक्, वज़न फेंको—"

आज्ञा पातेही केनेडीने झट १॥ मन वज़न फेंक दिया! बेलून क्षण भरमें जोको लेकर आकाशमें उड़ गया। शत्रुगण क्रोधसे गर्जन करने लगे। जो रस्सीको खूब दृढ़ताके साथ पकड़े हुए था। बेलून कुछ ऊपर जाकर स्थिर हो गया। जो रस्सीके सहारे ऊपर चढ़ गया। ऊपर पहुँचतेही उसने आवेगपूर्ण कण्ठसे कहा—

"प्रभु! आगया,—मि० केनेडी—"
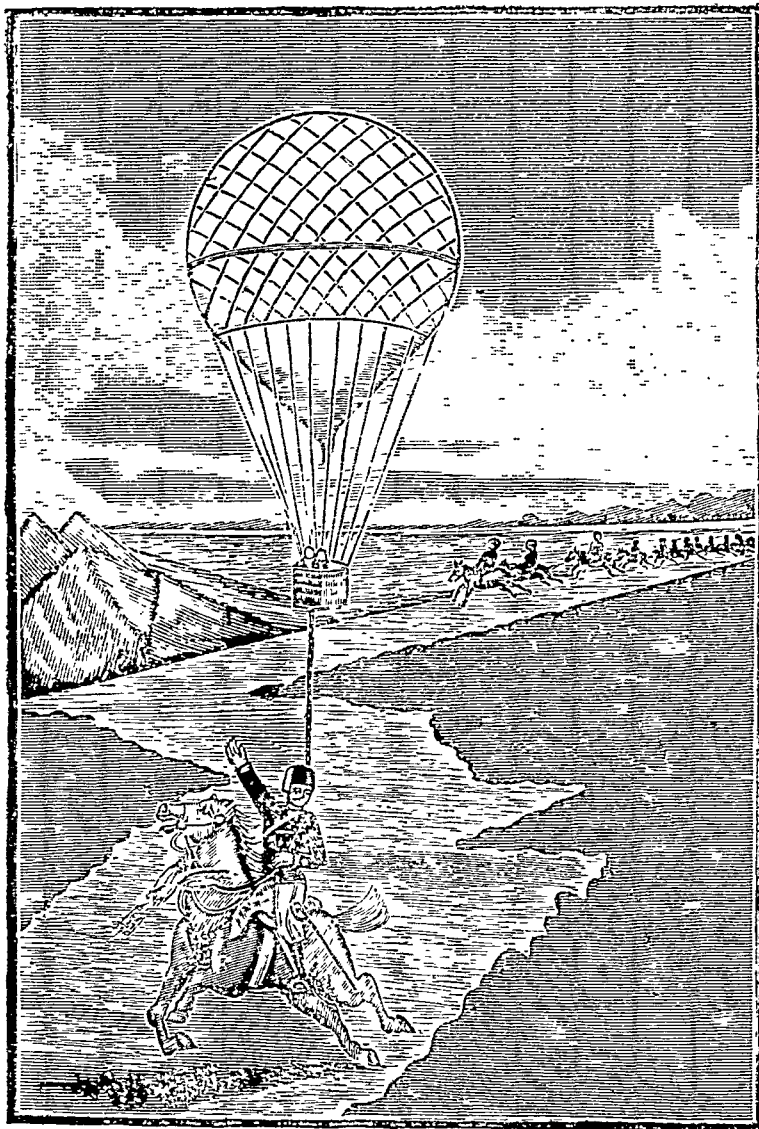
रस्सी जौ के सिर पर लटकने लगी। [पृ० १६६]

वह आगे और कुछ न कह सका और तत्काल मूर्च्छित होकर फर्गुसनकी गोदमें जा गिरा।

इस समय जो प्राय: नग्नावस्थामें था। उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गसे रक्त चू रहा था। फर्गुसन जोकी चिकित्सा करने लगे। सारी रात्रिके विश्राम और शुश्रूषाके पश्चात् जब सवेरे जो स्वस्थ हुआ, तब वह अपनी विपद्-कहानी वर्णन करने लगा। उस कहानी का अधिकांश भाग हमको विदित है। जिस समय जो कीचड़में फँसकर क्रमशः डूब रहा था, उसी समय हमने उसे छोड़ा था। इतना वृत्तान्त सुनकर जो कहने लगा—

"जब मैं क्रमश: उस दुस्तर कीचड़में डूब रहा था, उस समय मेरी समस्त आशायें विलीन होगई थीं। मुझे पूरा भरोसा हो गया था कि, अब मैं नहीं बचूँगा—मेरी मृत्यु निकट आगई है! उ: वह कैसी भयानक मृत्यु थी! अकस्मात् मुझे पासमें पड़ी हुई एक रस्सी दिखाई दी। मैंने झट उसे पकड़ ली। खींचकर देखा, तो उसका दूसरा सिरा एक वृक्षकी डालसे बँधा पाया। यह अवलम्ब पाकर मेरे मनमें फिर आशाका सञ्चार होने लगा। मैं उस रस्सीके सहारे कीचड़से निकलनेकी चेष्टा करने लगा। बहुत परिश्रमके पश्चात् अन्तमें मैं सूखी भूमि पर जा पहुँचा। वहाँ जाकर देखा कि, उस रस्सीके साथ हमारे बेलूनका लङ्गर बँधा हुआ है!"

केनेडीने कहा—"फर्गुसन, वही लङ्गर जिसे हम खींचते-

खींचते थक गये थे और अन्तमें जिसे काट देना पड़ा था। अच्छा इसके पश्चात्?"

"बेलूनके लङ्गरने मेरे हृदयमें साहस भर दिया। गई हुई शक्ति फिर लौट आई। अब मुझे भरोसा होगया कि, मैं इस विपत्तिसे अवश्य छुटकारा पाजाऊँगा। मैं उसी रातको पैदल चल पड़ा। बहुत सघन बन था। अनेक हिंस्र पशु विचरण कर रहे थे। कण्टकोंसे मेरे और पैर चलनी बन गये थे। पहननेके कपड़े फट गये और शरीर छिन्न-भिन्न होगया। बीच-बीचमें कई बार मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि, अब मैं आगे न जा सकूँगा। इसी प्रकार रात्रि व्यतीत होगई। सवेरा होतेही देखा कि, समीपवर्त्ती एक मैदानमें कुछ घोड़े घास चर रहे हैं। मैं बहुत थक गया था। इस-लिये यह सुयोग पाकर मैं झट एक घोड़े की पीठ पर जा बैठा। घोड़ा शीघ्र गतिसे उत्तरकी ओर जाने लगा। घोड़ा कहाँ जारहा है—कौन मार्ग है, यह मुझे कुछ विदित नहीं था। देखते-देखते अनेक गाँव, अनेक जङ्गल, अनेक मैदान निकल गये। इस समय मुझे दिशा-विदिशा का कुछ ज्ञान नहीं था। अन्तमें घोड़ा मुझे मरुभूमिमें ले पहुँचा। मरुभूमि देखतेही मुझे भय प्रतीत होने लगा, कुछ भरोसा भी हुआ। सोचा, इस खुले मैदानमें बेलून आवेगा, तो मैं उसे सहजही देख सकूँगा।"

"मैं प्रातःकाल ६ बजेसे चलकर प्रायः २ घण्टेमें मरुभूमिमें

पहुँचा। घोड़ा इस समय भी जारहा था। सहसा एकदल अरबोंसे मेरी मुठभेड़ होगई। मुझे देखते ही उनलोगोंने सोचा कि, एक अच्छी सस्ता शिकार हाथ लगी है। वे तत्काल मेरा पीछा करने लगे। मैं प्राणपनसे घोड़ा दौड़ाने लगा। अन्तमें घोड़ेकी शक्ति भी चीण होगई—वह अकस्मात् ज़मीन पर गिर पड़ा और उसने प्राणत्याग दिये। मैं निरुपाय होकर खड़ा होगया। कुछ ही मिनिटके उपरान्त एक शत्रु समीप आया। मैं बहुत फुरती और कौशलके साथ पीछेसे उसके घोड़े पर चढ़ गया और उसका गला दबाकर उसे धराशायी कर दिया। इसके पश्चात् जो कुछ हुआ, वह सब आपको विदित ही है।
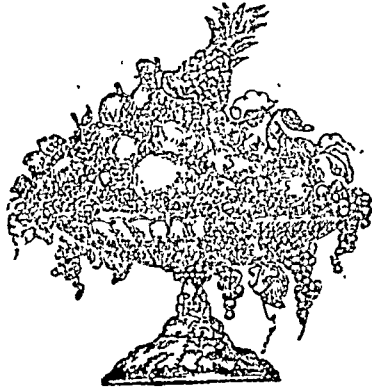
चौबीसवां परिच्छेद।
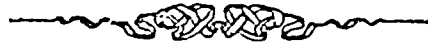
बेलून की दुर्दशा।
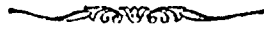
दो तीन दिन और व्यतीत होगये। बेलून अनेक ग्राम और प्रदेशोंपरसे होता हुआ टिम्बक्टू नगरके समीप पहुँचा। पर्य्यटक पार्थने टिम्बक्टू नगरका जो मानचित्र खींचा था, फर्गुसनने उससे मिलान किया। देखा, श्वेत बालूराशिपर त्रिकोणाकृति नगर बसा हुआ है। नगर की समीपवर्त्ती भूमिपर वृक्षलतादि अधिक नहीं थे। राजमार्ग कम चौड़ा था और उसके दोनों ओर कच्ची ईंटोंके इकहरे मकान थे। कहीं-कहीं बाँस और लकड़ीके मकान भी दृष्टि-गोचर होते थे। घरोंकी बनावट पहाड़की चोटियोंके समान थी, कहीं-कहीं गृहपति अपने मकानोंकी छतपर हाथमें बन्दूक तथा भाला लिये हुए टहलते दिखाई देते थे। उनके कपड़े साफ़-सुथरे और कई रङ्गोंसे विभूषित थे।

फर्गु सनने कहा—"इस देशकी रमणियाँ बहुत सुन्दरी होती हैं। देखो, वे तीन रमणियाँ मसजिद पर खड़ी हैं। एक समय इस देशमें बहुत मसजिदें थीं।"

"वह एक भग्न किलेकी प्राचीर-सी क्या दिखाई देती है?"

"हाँ, वह किलेकी प्राचीर ही है। ग्यारहवीं शताब्दीसे आज तक इस नगरको अपने अधीन करनेके लिये अनेक लोग प्रयत्न करते आरहे हैं। सोलहवीं शताब्दीमें यह राज्य सुसभ्य था। उस समय अहमदाबादके पुस्तकालयमें १६०० हस्तलिखित पुस्तकें थीं। इसके कई प्रमाण मिलते हैं। देखो, आज उसी स्थानकी कैसी दशा हो रही है!"

बेलूनके आवरण पर जो वार्निश थी, वह गरमीकी अधिकताके कारण पिघल गयी थी। इससे कई स्थानोंसे गैस निकलने लगा था। केनेडीने कहा—

"इस जगह उतर कर बेलूनकी मरम्मत न कर लो?"

"नहीं डिक, यहाँसे जितनी जल्दी निकल सकें, उतनाही अच्छा है। कई दिनोंसे गैस बहुत घट गया है। बेलून ऊपर नहीं उठता है। हम समुद्रके किनारे तक जा सकेंगे या नहीं, इसमें मुझे सन्देह हो है। कुछ वज़न फेंकदो। बेलून बहुत भारी होगया है।"

सवेरा होते ही बेलून टिम्बक्टू नगरसे ६० मील उत्तरमें नाइगर नदीके किनारे जा पहुँचा। देखा, कई छोटे-छोटे

द्वीप नाइगर को कई शाखा-प्रशाखाओंमें विभक्त कर रहे हैं। बेलून प्रबल वायुके प्रभावसे क्रमशः दक्षिण की ओर झुकने लगा। फर्गुसन बेलूनको ऊपर नीचे लेगये, परन्तु उन्हें कहीं भी अनुकूल प्रवाह नहीं मिला। हाँ, ऐसा करनेमें कुछ गैस अवश्य नष्ट होगया। इस प्रकार और भी दो दिन व्यतीत होगये। जेन्ने, फेगो प्रभृति नगर लाँघकर वे नाइगर और सेनीगालके मध्यवर्त्ती प्रदेशमें जा पहुँचे। इस जगह माङ्गोपार्कके कई साथियोंकी मृत्यु हुई थी। फर्गुसनने निश्चय कर लिया था कि, कुछ भी क्यों न हो, हम इस शत्रुपूर्ण और अस्वास्थ्यकर जगहमें न उतरेंगे—बहुत ऊपरसे निकल जायँगे। पर यह क्या? बेलून तो नीचे उतरने लगा।

फर्गुसनने बेलूनपरसे कई अनावश्यक और कई आवश्यक चीज़ें फेंककर उसे हल्का कर दिया। बेलून ऊपरको उठा सही, पर वह दो चार पर्वत-शृङ्गोंको लाँघकर फिर नीचे उतरने लगा।

केनेडीने व्यस्त होकर कहा—"क्या बेलूनमें छिद्र होगये हैं?"

"छिद्र तो नहीं हुए हैं। गरमीकी अधिकतासे वार्निश पिघल गयी है। इससे रेशमके आवरणमेंसे गैस निकल रहा है। सब वस्तुयें फेंककर बेलूनको हल्का किये बिना, इन पर्वत-शृङ्गोंको लाँघनेका और कोई उपाय नहीं है।"

"बहुत वस्तुयें तो फेंकी जा चुकीं!"

"तम्बू और फेंक दो। तम्बू फेंकनेसे बेलून बहुत हल्का हो जायगा।"

तम्बू फेंकनेकी पश्चात् बेलून कुछ समयके लिये ऊपर चढ़ गया। परन्तु कुछही चणके उपरान्त वह फिर नीचे उतर आया।

केनेडीने कहा—"नीचे उतर कर बेलूनकी मरम्मत कर लेना चाहिए!"

"असम्भव है डिक्!"

"तो क्या करना चाहिए?"

"जिन वस्तुओंके बिना काम नहीं चल सकता है, उनको छोड़कर बाकी सब वस्तुएँ फेंक दो। इस देशके मनुष्यों और हिंस्र पशुओंमें अधिक अन्तर नहीं है। यहाँसे निकल जानेहीमें भलाई है।"

"वह देखो, सामने एक पर्वत आरहा है।"

देखा, एक विशाल पर्वत मेघके भीतर अपना उन्नत मस्तक छिपाये खड़ा है। ऐसी दशामें उसे लाँघ जाना एक प्रकारसे असम्भव ही दिखता था।

केनेडी फर्गुसनके पाससे दूरबीन लेकर पर्वतमाला देखने लगे। पर्वतशृङ्ग क्रमशः समीपवर्त्ती होने लगा। फर्गुसनने कहा—

"एक दिनके लिये जल रखकर बाकी सब फेंक दो।"

जोने जल फेंककर कहा—

"बेलून ऊपर उठा ?"

"हाँ, कुछ उठा। करीब ५०।६० फुट ऊपर उठा होगा। इसको अभी ५०० फुट ऊपर और जाना है। सिफो-नका जल भी फेंक दो।"

वह जल भी फेंक दिया गया—पर कुछ फल नहीं हुआ।

"जलके पात्रादि सब फेंक दो!"

जोने वे भी नीचे फेंक दिये।

फर्गुसनने कहा—"जो, शपथ करो कि कैसाही प्रसङ्ग क्यों न आवे, मैं बेलूनसे न कूदूँगा। तुम्हारे बिना हमलोग और भी निरुपाय हो जायँगे।"

जोने शपथपूर्वक बेलूनसे न कूदनेका वचन दे दिया।

अब भी पर्वतशृङ्ग बहुत ऊँचा था। फर्गुसनने कम्पित कण्ठसे कहा—"सावधान होजाओ, १० मिनिटके भीतर बेलून पर्वतशृङ्गसे टकराया चाहता है। कुछ-कुछ खानेकी सामग्री भी फेंक दो।"

केनेडोने २५ सेर पेमिकान फेंक दिया। बेलून कुछ ऊपर उठा, परन्तु फिर भी पर्वतशृङ्गसे बहुत नीचे रहा। फर्गुसनने देखा, फेंकने योग्य अब कोई वस्तु नहीं है! कहा—

"डिक्, और तो कुछ नहीं है—तुम अपनी बन्दूक फेंक दो।"

"नहीं—नहीं—फर्गुसन, बन्दूक नहीं फेंकी जा सकती है।"

"ऐसा न करोगे तो अभी सबको मारना होगा। बस, केवल पाँच मिनिट और बाकी हैं!"

जो चिल्ला उठा—"देखो-देखो, बेलून टकराया—पर्वत-शिलाओंसे भिड़कर नष्ट हुआ चाहता है।"

केनेडीने जल्दी-जल्दी सब कम्बल फेंक दिये। बेलून नहीं उठा। उन्होंने कुछ कार्तूस भी फेंक दिये। बेलून पर्वतशृङ्गसे ऊपर निकल गया, परन्तु दोला नीचे ही रहा। फर्गुसनने अत्यन्त भयभीत होकर कहा—

"केनेडी, बन्दूक फेंको—फेंको। अन्यथा हम लोगोंकी मृत्यु निश्चित है!"

जोने गम्भीर स्वरसे कहा—"मि० केनेडी कुछ ठहर जाइये।" इतना कहकर वह झट दोलासे नीचे उतर पड़ा। फर्गुसनने आर्तनाद करके कहा—"जो—जो—"

दोला कुछ और ऊपर उठ गया और वह पर्वतशृङ्गसे घर्षण करते-करते जाने लगा। जो तालियाँ बजाकर कहने लगा—

"देखो, हम पर्वत लाँघ रहे हैं।"

जो जिस स्थानपर उतरा था, वह प्रायः २० फुट चौड़ा था। इसके आगे भयंकर गह्वर—पथहीन—तलहीन अन्धकार था! जो बेलूनके साथ-साथ दौड़ रहा था। कहीं बेलून चला न जाय, इसलिए वह एक हाथसे दोलाकी रस्सी पकड़े हुए था।

क्षण भरके भीतर बेलून गह्वरके ऊपर आ गया। जो दोलाकी रस्सी पकड़कर महाशून्यमें झूलते-झूलते बेलूनपर चढ़ गया और वहाँ जाकर कहा—

"मि० डिक्की बन्दूकने मेरे प्राण बचाये थे, मैंने उनकी बन्दूककी रक्षा करके ऋण चुका दिया!"

जोने बन्दूक उठाकर केनेडीके हाथमें दे दी।

बेलून और ३—४ सौ फुट नीचे उतर आया। सामने पर्वतश्रेणी देखकर फर्गुसनको आगे जानेका साहस नहीं हुआ। उन्होंने कल प्रातःकाल जानेका निश्चय किया।

पच्चीसवाँ परिच्छेद।

अग्नि कुण्ड में।

शा किसी नक्षत्रादि की परीक्षा करके फर्गुसन ने कहा—

"हम लोग सेनीगाल नदीसे प्रायः पच्चीस मील दूरी पर ठहरे हुए हैं। जिस तरह हो सके, यह नदी अवश्य पार करना चाहिए। नदीके किनारे नौका मिलनेकी सम्भावना नहीं है—बेलून द्वारा ही नदी लाँघनी पड़ेगी। बेलून को और भी हल्का किये देता हूँ।"

केनेडीने कहा—

"हल्का कैसे करोगे? मुझे तो कुछ उपाय नहीं सूझता। हाँ, हम लोगोंमें से एक आदमी बेलूनपर न चढ़कर पैदल यात्रा करे, तो अवश्य वह कुछ हल्का हो जायगा।"

जो शीघ्र बोल उठा—

"मि० केनेडी, आप ठीक कहते हैं। मुझे बेलूनसे उतरने का अभ्यास होगया है। मैंही नीचे उतरा जाता हूँ।"

केनेडीने कहा—

"इस बार झीलमें नहीं कूदना है—अफ्रिकाके भीतर होकर चलना पड़ेगा। चलने-फिरनेके काममें मैं तुमसे अधिक दृढ़ हूँ। इसके सिवा मैं हिंस्र पशुओंसे अपनी रक्षा सहज ही कर सकूँगा।"

जो—"ऐसा न होगा। मैं ही जाऊँगा।"

फर्गुसनने कहा—"तुम दोनोंमेंसे किसीके उतरनेकी ज़रूरत नहीं है। यदि उतरना ही होगा, तो हम तीनों उतरेंगे।"

जो—"बहुत सच्ची बात है। कुछ पैदल चल लेना बुरा नहीं है। बेलूनमें बैठे-बैठे पैर झूठे-से पड़ गये हैं।"

फर्गुसनने कहा—

"एक बार देखो, कौन वस्तु फेंकी जा सकती है।"

केनेडीने गम्भीर स्वरसे कहा—

"मेरी बन्दूकके सिवा और कुछ नहीं दिखता है।"

"क्यों? गेसको ताप देनेवाला यन्त्र नहीं फेंका जा सकता है? ऐसा करने से ३॥ मन वज़न घट जायगा।"

"सर्वनाश! जब गैसको उत्तप्त करनेकी आवश्यकता पड़ेगी, तब क्या करोगे?"

"फिर उपाय क्या है? बिना यन्त्रके ही चलना पड़ेगा। बेलून हम तीनोंको लेकर उड़ेगा, इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है; हम केवल उसे अपनी इच्छानुसार ऊपर नीचे न

ले जा सकेंगे। जब ऊपर-नीचे जानेकी विशेष आवश्यकता ही प्रतीत होगी, तब वज़न फेंककर या गैस छोड़कर उसे ऊपर नीचे ले जा सकेंगे। यन्त्रको खोलकर फेंक दो।"

यन्त्रको खोलकर फेंक देनेका काम बहुत कठिन और चतुराईका था। जो फर्गुसनकी आज्ञा पातेही सावधानीके साथ यन्त्र खोलने लगा। केनेडीकी शक्ति, जोके कौशल और फर्गुसनकी बुद्धिने एकत्र मिलकर यन्त्रको खोल डाला। यन्त्रके नल बेलूनके ऊपरी भागमें लोहेके तारों द्वारा आवद्ध थे। बेलून वायुके मन्द-मन्द झकोरोंसे झुल रहा था। जो निर्भय मनसे नंगे पैर रस्सी पकड़ कर बेलून पर चढ़ गया और रेशमके आवरण को किसी प्रकार आघात पहुँचाये बिना—सावधानीके साथ उसने उक्त नलोंको खोल दिया।

भोजनोपरान्त फर्गुसनने कहा—"भाइयो, तुम बहुत थक गये हो, अब निश्चिन्त होकर सोओ। रातके दो बजते ही मैं केनेडीको जगा दूँगा। केनेडी २ घण्टा पहरा देकर जो को जगा देंगे।"

केनेडी और जो सो रहे। फर्गुसन पहरा देते-देते सोचने लगे—"यह असभ्य और बर्बर लोगोंका देश है। यदि बेलून न चला, तो हमलोग बहुत आपत्तिमें पड़ जाएँगे। रास्ता-घाट सब अपरिचित हैं। इस देशके अधिवासी राक्षसतुल्य हैं। डग-डग पर वन और पर्वत भरे पड़े हैं। बेलून आज हमारा दास नहीं, प्रभु बन रहा है!" फर्गुसन अत्यन्त भयभीत हो उठे।

प्रकृति सोरही थी । मेघाच्छादित चन्द्रके क्षीण प्रकाशसे बीच-बीचमें वनभूमि प्रकाशित हो उठती थी । कभी-कभी एकाध पक्षीके पङ्ख फड़-फड़ानेके शब्दसे नैश-निस्तब्धता भङ्ग हो जाती थी । कुछ दूर एक निशाचर पक्षीकी हुँकार-ध्वनि सुनाई देती थी ।

फर्गुसन सहसा चौंक उठे ! उन्हें ऐसा मालूम होने लगा, कि वनसे कोई अस्पष्ट शब्द आरहा है । वृक्ष-श्रेणियोंके बीचसे एक मन्द प्रकाशकी धारा दिखाई दी, परन्तु वह कुछ क्षणके उपरान्त फिर विलुप्त होगई । फर्गुसन कान लगाकर सुनने और उस सघन अन्धकारमय वनकी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगे ।

कुछ सुनाई नहीं दिया—कुछ दिखाई नहीं दिया !

फर्गुसन धैर्यपूर्वक अपेक्षा करने लगे ।

रात्रिके २ बज गये । फर्गुसन केनेडीको विशेष सावधानीके साथ पहरा देनेके लिये कहकर सोगये ।

केनेडी चुरुटमें आग लगाकर गम्भीर भावसे बैठ गये । सारे दिनके परिश्रमसे उनका शरीर बहुत थकित होगया था । नींद भी पूरी नहीं हुई थी, इस कारण बीच-बीचमें उनके नेत्र मुँद-मुँद जाते थे । केनेडीने दोनों हाथोंसे आँखें मलकर निद्रा हटानेकी चेष्टा की—चुरुट की राख झाड़ कर उसे फिर पीना आरम्भ किया । परन्तु फल कुछ नहीं हुआ--थोड़े ही समयके उपरान्त फिर उनकी आँख लग गई ।

केनेडो बारम्बार नेत्र खोलने और बारम्बार चुरट पीने लगे, परन्तु उनकी निद्रा दूर नहीं हुई। अज्ञात दशामें उनकी फिर आँख लग गई!

सहसा पट्—पट्—पट् शब्द सुनकर केनेडो चौंक उठे! देखा, नीचे भयङ्कर अग्निकुण्ड उपस्थित है—अग्निकी लाल-लाल लपटें वृक्षलतादिकों ग्रास कर रही हैं! बहुत उष्ण हवा बहने लगी! चारों ओर धुआँ भर गया! अनलसमुद्रका गर्जन समुद्र-गर्जनके समान सुनाई देने लगा! केनेडो चिल्ला उठे—"आगी—आगी—"

फर्गुसन और जो दोनों घबराकर उठ बैठे। इस समय समग्र वनभूमि काफ़िरोंके आनन्द-कोलाहलसे प्रतिध्वनित होरही थी।

फर्गुसनने कहा—"ये लोग हमको अग्निमें जलाकर भस्म किया चाहते थे!"

इस समय विक्टोरियाके नीचे चारों ओर भयङ्कर अग्नि प्रज्वलित होरही थी। सूखी लकड़ियोंके जलनेके शब्द, अग्निके भीम गर्जन और तालिवादस्युगणके विकट निनादने फर्गुसनके हृदयमें कुछ क्षणके लिये भयका सञ्चार कर दिया। केनेडोने देखा, एक अग्निशिखा बैलूनका स्पर्श करनेके लिये आरही है। उन्होंने उच्च कण्ठसे कहा—

"आओ—आओ—नीचे कूदें, इसके सिवा अन्य गति नहीं है!"

फर्गुसनने उन्हें वज्रमुष्ठिसे पकड़कर लङ्गरकी रस्सी काट दी। बेलून एक उचाटमें एक हज़ार फुट ऊपर पहुँच गया।

इस समय प्राय: सवेरा होगया था। बेलून पश्चिमकी ओर दौड़ने लगा।

फर्गुसनने कहा—

"इस समय भी हमारी विपत्तियोंका अन्त नहीं हुआ है।"

केनेडीने उत्तर दिया—

"अब डर नहीं है। अब बेलून नीचे न उतरेगा। यदि उतर भी पड़े—" फर्गुसनने बाधा देकर उँगलीसे संकेत किया। केनेडीने देखा, प्राय: २० अश्वारोही बेलूनके पीछे दौड़ते आरहे हैं—वे भाला और बन्दूक़ धारण किये थे!

फर्गुसनने कहा—

"ये कौन हैं; जानते हो?"

"नहीं। कौन हैं?"

"तालिबादस्यु। हिंस्रपशुओंसे परिपूर्ण जङ्गलमें रहना भला,पर इनके हाथ पड़ना अच्छा नहीं है! भगवान् इनसे बचावे!"

"हमलोग इतने ऊपर हैं—फिर डर किस बातका? यदि हम एकबार नदी पार हो जायँ—"

"यह ठीक है डिक्, पर बीचहीमें बेलून नीचे उतरने लगे तो—!"

"तोभी डर नहीं है! बन्दूक़ हाथमें है।"

"यह सौभाग्यकी बात है कि बन्दूक़ नहीं फेंकी गई है।"

कैनेडीने बन्दूक़में कार्तूस भर कर कहा—

"हम कितने ऊपर हैं?"

"प्राय: १५० फुट। इस समय बेलून हमारा प्रभु बन गया है। अब हम इच्छानुसार ऊपर-नीचे नहीं जा-आ सकते हैं!"

"यदि ये लोग हमारी बन्दूक़ की मारमें आ जायँ—"

"केवल तुम्हीं मारोगे—वे न मारेंगे? उनकी गोली हमारे शरीरमें न लगकर, यदि बेलूनमें लगे तो सोचो हमारी क्या गति हो?"

छब्बीसवाँ परिच्छेद।

तालिबा दस्यु।

११ बज गये। दस्युगण अब भी बेलूनका पीछा कर रहे थे। आकाशमें कुछ मेघ देखकर प्रतिकूल वायु आनेकी आशंकासे फर्गुसन चिन्तित हो उठे।

बेलून धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। सेनीगाल नदी यहाँसे लगभग १२ मील दूर थी। बेलून जिस मन्दगतिसे जारहा था, उससे ३ घण्टेसे कममें नदी-तीरपर पहुँचनेकी सम्भावना नहीं थी।

तालिबागणोंकी जयध्वनि फर्गुसनके कानोंमें पहुँचतेही वे उसका कारण समझ गये।

केनेडीने पूछा—"क्या हम क्रमशः नीचे जारहे हैं?"

"हाँ, बेलून बहुत नीचे उतर आया है।"

१५ मिनिटके भीतर बेलून प्रायः ६०० फुट नीचे उतर आया। नीचे वायुका प्रवाह कुछ तेज़ था। इससे बेलून तीव्र

गतिसे चलने लगा। गुडुम् गुडुम्! तालिबागण अपने-अपने घोड़ों की ज़ीन पर खड़े होकर गोली छोड़ने लगे!

जोने परिहास करके कहा—"तालिबोंकी गोली इतनी दूर नहीं आती है!" उसने झट अपनी बन्दूक़ उठा ली और क्षण भरके भीतर सबसे आगे चलने वाले एक तालिबाको मार गिराया। तालिबागण अपने साथी की यह आकस्मिक मृत्यु देखकर कुछ समयके लिये चकित होकर स्थिर हो गये। इस अवसरमें बेलून कुछ आगे निकल गया।

फर्गुसनने कहा—"यदि बेलून नीचे उतरा, तो हम लोग उनके हाथोंमें पड़े बिना न रहेंगे! जबतक श्वासा तब तक आशा,—फेंको—पेमिकान फेंको!"

इतनेमें बेलून बहुत नीचे उतर आया। परन्तु पेमिकान फेंकते ही वह फिर कुछ ऊपर चढ़ गया।

तालिबागण भीमनादसे गर्जन करने लगे।

आधा घण्टा व्यतीत हो गया। विक्टोरिया फिर शीघ्र-गतिसे नीचे उतरने लगा! इस समय रेशमके आवरणसे गैस सों—सों करके बाहर निकल रहा था।

बेलून नीचे उतरने लगा। इस प्रकार नीचे आते-आते अन्तमें वह ज़मीनसे आ लगा।

उत्तेजित और उल्लसित तालिबागण वेगसे बेलूनकी ओर दौड़ने लगे!

भूमिसे स्पर्श होते ही बेलून एक उचाटमें फिर कुछ

ऊपर को उठा और प्रायः एक मील दूर जाकर धरती पर गिरा।

फर्गुसनने कहा—

"जो, ब्रान्डी फेंकदो—यन्त्रादि भी फेंक दो! जो कुछ पाओ सब फेंक दो!"

वायुमानयन्त्र, तापमानयन्त्र प्रभृति सब फेंक दिये गये, परन्तु फल कुछ न हुआ। बेलून कुछ हाथ ऊपर उठ कर फिर भूमिसे जा लगा!

तालिबागण बहुत शीघ्रतासे आगे बढ़ रहे थे। फर्गुसनने घबराकर कहा—

"फेंको—फेंको—इस बार बन्दूक़ भी फेंक दो!"

केनेडीने अपनी बन्दूक़ लेकर कहा—

"ठहरो, मैं अभी सबके होश उड़ाये देता हूँ।"

देखते-देखते केनेडीकी गोलियोंसे ४ तालिबा आहत होकर गिर पड़े। अन्य तालिबा क्रोधसे अन्धे होकर गर्जन करने लगे।

बेलून फिर उठा और कुछ दूर जाकर फिर ज़मीनसे टिक गया। जिस प्रकार रबड़का गोला ज़ोरसे ज़मीन पर गिरते ही उचटते-उचटते कुछ दूर तक चला जाता है, इस समय विक्टोरिया भी ठीक उसी प्रकार जारहा था।

बारम्बार आघात लगनेसे गैस और तेज़ीसे निकलने लगा। बेलूनका बाह्य आवरण कई जगह ढीला पड़ गया!

केनेडोने कहा—

"अब कुछ उपाय नहीं है। बेलूनका साथ छोड़ना पड़ेगा।"

जो निर्व्वाक् होकर फर्गुसनके मुँहकी ओर ताकने लगा। उन्होंने कहा—

"अभी छोड़ेंगे? अभी हम एक मन पैंतीस सेर वज़न और फेंक सकते हैं!"

केनेडोने सोचा, फर्गुसनको सहसा बुद्धि-भ्रम हो गया है; नहीं तो वे ऐसा क्यों कहते? इसीलिये उन्होंने पूछा—

"क्या कहा फर्गुसन?"

"एक मन पैंतीस सेर वज़न! दोला फेंक दो! हमलोग बेलूनकी रस्सी पकड़ कर झूलते रहेंगे। फेंको—फेंको—"

आज्ञा पाते ही तीनों पर्य्यटक बेलूनके वाह्य जाल की रस्सियों को पकड़कर ऊपर चढ़ गये। जोने होशियारीके साथ दोलाके बन्धन काट दिये। बेलून नीचे उतर रहा था, पर दोलाके नीचे गिरते ही वह २०० फुट ऊपर चढ़ गया।

ऊपर जाकर बेलून एक प्रबल वायुप्रवाहमें पड़ गया। दोला फेंक देनेसे बेलून बहुत हल्का होगया था, इसलिये वह बहुत फुरतीके साथ उड़ने लगा। तालिबा लोगोंके घोड़े क्रमश: पोछे पड़ने लगे। पासहीमें एक छोटी पहाड़ी दिखाई दी। बेलून उसे सहजही लाँघ गया, परन्तु उसने तालिबा

अश्वारोहियोंकी गति रोक दी! कई मीलका चक्कर खाकर पहाड़ोको घेरकर आनेके सिवा उन्हें और कोई मार्ग ही नहीं था। वे पहाड़ी की उत्तर सीमा की ओर घोड़ा बढ़ाने लगे।

पहाड़ी लाँघ कर फर्गुसनने कहा—

"नदी आगई—देखो, वह दिखाई देरही है!"

सचमुच ये लोग नदीके समीप आ पहुँचे थे। केवल दो मील की दूरी पर सेनीगाल नदी भीमवेगसे गर्जन-तर्जन करती हुई बह रही थी।

फर्गुसनने कहा—

"अधिक नहीं—केवल पन्द्रह मिनिटकी देरी है। इतने समयके मध्यमें यदि बेलून न गिरा, तो हम बच जायँगे!" बेलून १५ मिनिट तक नहीं चला! वह कुछ क्षणके उपरान्त धीरे-धीरे ज़मीनसे आ लगा! भूमिके स्पर्शमात्रसे ही वह धक्का खाकर ऊपर उठा। फिर गिरा—फिर कुछ उठा, और अन्तमें समीपवर्त्ती एक वृक्षकी शाखाओंसे उसका जाल उलझ गया!

तीनों भाई बेलूनसे उतरकर नदी की ओर शीघ्रतापूर्व्वक भागने लगे। वे ज्यों-ज्यों नदीके समीप पहुँचने लगे, त्यों-त्यों उन्हें जलोच्छ्वासका एक गुरु-गम्भीर शब्द सुनाई देने लगा। फर्गुसनने कहा—

"हम गुइना जल-प्रपातके समीप आ पहुँचे हैं।"

नदी-तीर पर किसी प्रकारकी नाव या डोंगी नहीं थी।

डेढ़ मील चौड़ी विस्तृत जलधारा कुछ दूर भीमवेगसे बहकर प्राय: १५० फुट नीचे गिरती थी। इसे लाँघनेका साहस कौन कर सकता है ?

केनेडी हताश होकर बैठ गये। फर्गुसनने उन्हें उत्साहित करनेके लिये कहा—"अभी भरोसा है—अभी उपाय है, आप इस प्रकार हताश क्यों होते हैं ?"

फर्गुसन दोनों साथियोंको फिर उस परित्यक्त बेलूनके पास ले गये ! वहाँ कुछ सूखा घास पड़ा हुआ था। उन्होंने कहा—

"तालिबोंको यहाँ आनेमें प्राय: एक घण्टा लगेगा। जितना घास कूड़ा मिल सके इकट्ठा करो। घास ही अब हमारी रक्षा का एकमात्र साधन है।"

"घास ! घासका क्या करोगे ?"

"बेलूनमें गैस नहीं है। गैसके बदले गरम हवा भरकर नदी पार करेंगे।"

जो और केनेडी घास बटोरने लगे। फर्गुसनने बेलूनकी तलीमें एक बड़ा छिद्र कर दिया। बेलूनमें रहा सहा जो गैस था, वह भी निकल गया। फिर उन्होंने नीचे इकट्ठे किये हुए तृण-समूहमें आग लगा दी। बेलून के गर्भमें गरम हवा प्रवेश करने लगी। कुछ समयके पश्चात् वह क्रमश: फूलने लगा। प्राय: एक बजेके समय दो मील की दूरी पर शत्रुओं के घोड़े दिखाई दिये।

केनेडीने कहा—

"मालूम होता है, वे २० मिनिटमें यहाँ आयँगे। फर्गु-सनने तिलमात्र विचलित न होकर कहा—

"आजाने दो। जो घास लाओ—घास लाओ। हम १० मिनिट के भीतर नदीके उस पार पहुँच जायँगे।"

इस समय बेलूनका प्राय: आधा भाग उष्ण हवासे परिपूर्ण हो गया था। फर्गुसनने एक गट्ठा घास अग्निमें डालकर कहा—

"आइयो! जिस प्रकार अभी वेलूनका वाह्यजाल पकड़कर आये थे, उसी प्रकार जानेके लिये तैयार हो जाओ।"

वे सब तैयार होगये। बेलून भी फूलकर उड़नेके योग्य होगया। इस समय दस्युगण प्राय: ५०० हाथकी दूरी पर थे! वे एक साथ बन्दूक छोड़कर जयध्वनि करने लगे!

फर्गुसनने अग्निमें और कुछ तृण डालकर उच्चकण्ठसे कहा—"सावधान! खूब होशियारीके साथ जालको पकड़ लो।"

बेलून ऊपर उठने लगा। दस्युगण फिर एक साथ बन्दूक चलाकर भीषण चीत्कार करने लगे। एक गोली सन्-सन् करती हुई जोके काँधेके पाससे निकल गई! कैनेडीने एक हाथसे जाल पकड़कर दूसरे हाथसे बन्दूक छोड़ी। एक दस्यु धराशायी होगया! देखते-देखते बेलून ४०० फुट ऊपर उठ गया। दस्युगण चीत्कार करने लगे।

ऊपर प्रबल वायु-प्रवाह बह रहा था। विक्टोरिया खूब

फ्रेञ्च सैनिकों ने नदीमें कूदकर तीनों उड़ाकों को पकड़ लिया। [पृ० २२१]

हिलता-डुलता हुआ उड़ने लगा। फर्गुसनने देखा, पैरोंके नीचे तीक्ष्ण जलप्रवाह भयङ्कर शब्दसे १५० फुट नीचे गिर रहा है!

१० मिनिट के पश्चात् बेलून जलप्रपात लाँघ कर किनारे के समीपवर्त्ती जलमें गिरने लगा। फर्गुसन अपने दोनों साथियों सहित झट बेलूनसे कूद पड़े!

समीपवर्त्ती फ्रेञ्च उपनिवेशके कुछ सैनिक अत्यन्त विस्मित होकर, यह अपूर्व व्यापार देख रहे थे। उन्होंने नदीमें कूदकर तीनों उड़ाकोंको पकड़ लिया। विक्टोरिया प्रबल जलस्रोतमें बहते-बहते गुइना प्रपातमें अदृश्य हो गया!

सेनाके लेफटिनेण्टने फर्गुसनसे हाथ मिलाकर पूछा—

"क्या आपही डाक्टर फर्गुसन हैं?"

"हाँ, मेराही नाम फर्गुसन है—ये मेरे साथी प्रियबन्धु हैं।"

"अच्छा, किलेमें चलिये। आपके इस दुस्साहसिक पर्य्यटनका समाचार मैं पहलेही सम्वादपत्रोंमें पढ़ चुका हूँ।"

फर्गुसन दोनों मित्रों सहित फ्रेञ्च किलेमें चले गये।

सम्राट् अकबर
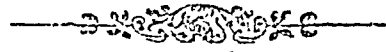
हिन्दी-संसार में आजतक ऐसी पुस्तक नहीं निकली। इस पुस्तक के पढ़ने से इतिहास, उपन्यास और जीवन-चरित तीनोंका आनन्द मिलता है। ऐसी-ऐसी बातें मालूम होती हैं, जो बिना ५।७ हज़ार रुपये की पुस्तकें पढ़े हरगिज़ नहीं मालूम हो सकतीं। इसमें ५०० सफ़े और प्रायः एक दर्जन हाफटोन चित्र हैं। मूल्य २॥) हम अपनी ओर से कुछ न कह-कर एक अतीव प्रतिष्ठित अँगरेज़ी मासिक पत्र की अविकल सम्मति नीचे लिखे देते हैं। पाठक इसे पढ़कर देखलें कि हमारा लिखना कहाँ तक ठीक है :—

"माडर्न रिव्यू" लिखता है :—

"This again is a life of the great Musalman Emperor and a very well written life indeed. The method followed is an excellent one for writing lives. The author has made use of lot of books on the subject and his treatment is not merely historical—rather he has, after Macaulay, made use of his imagination and given a graphic colour to what he has written. His discriptions are very nice and the book reads something like a novel. The great hero of the book has been described in all his aspects. In the book we find besides a very valuable reproduction of the contemporary life It has distinct superiority over all other books on the subject, some of them published long ago We remember of a book published by the Hindi Bangabasi Office on the same subject and a comparison of the two brings to light the distinct superiority of the book under review in almost all respects. A large number of blocks and pictures etc., adorn the book. We would put this book on a high pedestal of the Hindi literature and recommend to other writers of lives the method followed in it."

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता।